प्रकाशक—

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी
हरिद्वार (सहारनपुर)

सूचीपत्र

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ ५२ पर पत्र सं० "६ आषाढ़ शुक्ला १ १६३६ वि० का लिखा" अधिक छप गया है।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५१	६	६	(अधिक छपा है)
,,	१०	७	६
,,	११	८	७
,,	१२	६	८
,,	१३	१०	९
१०४	१८	अप	आप
१३७	१६	अश्रपात	अश्रुपात
१३६	१	पराज्य	परराज्य
१४०	१५	मा यत्र्थत मेषु	मान्यत्र्यतमेषु
१५३	८	फंसे	फसें
१५७	१२	पुत्रवत्त	पुत्रवन्त

भूमिका

गुरुकुल के संस्थापक श्री महात्मा मुन्शीराम जी ने १९६६ वि० में "ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार" प्रकाशित किया था। उस संग्रह में ऋषि के पत्र कम थे। अधिक पत्र वे थे जो अन्य सज्जनों ने ऋषि के पास भेजे थे। इस के पश्चात् श्री प० भगवद्दत्त जी ने चार भागों में "ऋषि दयानन्द के पत्र तथा विज्ञापन" मुद्रित कराये। इन संग्रहों में केवल ऋषि के पत्र संगृहीत हुए हैं। पटियाला रियासत के राज-ऐतिहासिक श्रीयुत किशोरीसिंह जी की कृपा से हमें ऋषि दयानन्द के राजपुताना-सम्बन्धी पत्र-व्यवहार के कुछेक संग्रह प्राप्त हुए हैं। इन में ऋषि के अपने पत्र भी हैं और ऋषि के नाम अन्य महानुभावों के पत्र भी। इन संग्रहों को हम "ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार—द्वितीय भाग" नाम से प्रकाशित कर रहे हैं। ये पत्र ऋषि के जीवन के अन्तिम भाग से सम्बन्ध रखते हैं। अतः इन में प्रकट की गई ऋषि की सम्मतियों की प्रामाणिकता बहुत अधिक है।

राजाओं में ऋषि की कितनी अधिक प्रतिष्ठा थी? किस प्रकार प्रत्येक नरेश ऋषि के दर्शनों के लिए लालायित रहता

था ! किस निर्भीकता और फिर किस नीति-निपुणता से ऋषि उनके वैयक्तिक जीवन तथा राज्य-शासन का एक-साथ सुधार कर रहे थे ! इस प्रकार के अनेक विषयों पर इन पत्रों के अध्ययन से प्रकाश पड़ता है। कई पत्रों में उपदेश-रूप से ऋषि के राजनैतिक सिद्धान्त उल्लिखित हैं। उन से ऋषि की प्रकाण्ड नीतिज्ञता प्रमाणित होती है। आर्य संस्कृति से प्रगाढ़ प्रेम, प्राणीमात्र के लिए असीम दया, गोरक्षा की विशाल आयोजना, राजकुमारों की धनुर्वेद-शिक्षा के लिए क्षात्र-शाला खोलने का उद्योग—इत्यादि प्रकरण बार-बार पाठकों के दृष्टि-गोचर होंगे। ऋषि के जीवन-चरित लिखने में इन पत्रों की सहायता का महत्व अकथनीय है।

आर्य-भाषा के निर्माण तथा प्रचार में ऋषि दयानन्द का कितना बड़ा हाथ है ? इस प्रश्न का उत्तर भी ये पत्र अपनी मूक वाणी से दे रहे हैं। ऋषि के साथ पत्र-व्यवहार करने वाले पण्डित हैं, राजा हैं। उनके पास योग्य लेखक रहे होंगे। परन्तु उन की भाषा की तुलना ऋषि की भाषा से कर जाइये। आकाश-पाताल का भेद प्रतीत होगा। ऋषि के पत्र ऋषि के हाथ के नहीं, लेखकों के हाथ के लिखे हुए हैं। ऋषि ने उन में यत्र-तत्र संशोधन अवश्य किया है परन्तु वह संशोधन स्वभावतः अपूर्ण रहा है। शब्दों के शुद्ध संस्कृत रूप के पक्षपाती रहते हुए

भी ऋषि कहीं-कहीं सामान्य लोगों में प्रचलित उच्चारण के अनुसार भी शब्दों के लिखे जाने को सहन कर गये हैं। "असक्य" "सतकार" और "युक्ती" तो शायद लेखक के प्रमाद का परिणाम ही हैं, क्योंकि अन्यत्र "अशक्य" "सत्कार" और "युक्ति" मिलते ही हैं। परन्तु कहीं "कृष्णसिंह" और कहीं "किसनसिंह"—यह विकल्प जरूर ऋषि की प्रचलित भाषा-प्रियता का परिचायक है।

इन पत्रों के छपवाने में हम ने "मक्खी पर मक्खी मारना" ही उचित समझा है। मूल-लेख के अनुसार शुद्ध-अशुद्ध ज्यों का त्यों धर दिया गया है। मूल-पत्रों के अनुरूप ही उन की नकल कराने का कठिन कार्य गुरुकुल के वेदोपाध्याय श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यालङ्कार ने कराया है। मुद्रित होते समय पुस्तक के प्रूफ इसी विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र के उपाध्याय श्री पं० केशवदेव जी वेदालङ्कार ने देखे और संशोधित किये हैं। इन दोनों महानुभावों का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

ऋषि के पत्र-व्यवहार के इस भाग में छोटे-मोटे ११ संग्रह समाविष्ट किये गये हैं। अन्तिम दो संग्रह शेष पुस्तक के मुद्रित हो जाने पर प्राप्त हुए। अतः उन्हें पुस्तक के अन्त में स्थान दे दिया गया है। उन में जो पत्र-व्यवहार समाविष्ट किया गया है, वह उन्हीं दो महानुभावों—श्री कविराजा

श्यामलदास जी तथा श्री कृष्णसिंह बारहट जी —के साथ हुआ है जिन के साथ किया गया अन्य पत्र-व्यवहार इस से पूर्व के संग्रहों में संकलित हुआ है। एक ही महानुभावों के साथ हुए पत्र-व्यवहार को दो पृथक् स्थानों में मुद्रित कराने का कारण उन के विभिन्न भागों की भिन्न-भिन्न समयों में प्राप्ति है।

पूर्व-प्राप्त ६ संग्रहों के साथ-साथ एक दसवां संग्रह भी प्राप्त हुआ था। इन दस संग्रहों के आधार पर मेरा एक लेख लाहौर के मासिक "आर्य" की पौष १६८८ वि० की संख्या में प्रकाशित हुआ था। उस में एक स्थल पर इन संग्रहों और इन में समाविष्ट हुए पत्रों की संख्या इस प्रकार दी गई है:—

"......इस फाइलें ऋषि के पत्र-व्यवहार की ऐसी मिलीं जिन में १४ पत्र और उपदेशावलियां तो ऋषि के अपने हाथ की लिखी हुई, या लिखवा कर अपने हाथ से संशोधित की हुई, और ५६ पत्र राजस्थानीय रजवाड़ों के राजाओं या अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के संगृहीत हैं।"

प्रकाशित किये जा रहे इन संग्रहों के देखने से प्रतीत होता है कि प्रथम ६ संग्रहों में ऋषि के पत्र तथा उपदेशावलियों की संख्या तो वास्तव में १४ ही है परन्तु ऋषि के नाम लिखे गये पत्रों की संख्या ५४ है। पृ० ५१ पर दी गई विषय-

सूची में पत्र सं० ५ तथा ६ एक ही पत्र की दो प्रतियाँ थीं। इन में से एक ही मुद्रित कराई गई। उपरि-निर्दिष्ट १० फ़ाइलों में से एक फ़ाइल गुम हो गई थी। उस में एक ही पत्र था। सो "आर्य" में प्रकाशित मेरे उपर्युक्त लेख द्वारा सुरक्षित रहा। आगे चल कर उसी लेख में लिखा है:—

"फ़ाइल सं० १० जोधपुर नरेश के अन्तःपुर में रहने वाली एक दासी की राम-कहानी है। उसे राजा के किसी मुसलमान मुसाहिब के कुत्सित अत्याचारों की शिकायत है। दासी के हृदय में आत्म-सुधार की पुण्य कामना उदय हुई है। इसी से वह इस पत्र द्वारा ऋषि के पतित-पावन चरणों में आई है। पत्र एक रद्दी से कागज़ पर टूटे फूटे अक्षरों में लिखा हुआ है। दुखिया के पीड़ित हृदय ने मानो जीर्ण-शीर्ण पत्र का रूप ग्रहण किया है:—

आप से एक अरज स्त्रि की तरफ सु मालुम होत कि वो स्त्रि जोधपुर महाराज को स्त्रि के पास दासी ह सो वो मेरे पास पठानी ह और धर्म को इच्छा पण पुरी ह सो उसके विघ्न ह कि जोधपुर महाराज के पास मरजीदान मुसलमान रता सो वो ज़बरदस्ती सु अन्याय कर हे मन उपरान्त जो उसके कर्णो नहीं करं तो राजा से कुछ झुटी साची बात करके कैद करा देवे तथा ओर कोई तर सु उनको फजीती कर देव जीण सु काणों

नहीं करतो श्रो दुःख और उसका मव मुजब करती नरंग की निसाणी ह सो अब मन कोई करणो चाही जे ओर से इस का फंदा मासुं निकरन वाको उदम तो कर रहि हु सो परमेश्वर की किरपा करने बचुं तो बचु छुकुटुं और अब मैं आप सों करूं हुं की पाश्चातापायुं के लिये ओर आगे के वण कोही करणो चाहिए जिससे में पाप सुं बचुं और द्रिव्य से तथा सरीर सु मारी सामर्थ होव जिस समुक्त बंदउ मुकतु और मांस तथा मद्य खान पान तो में सब छोड़ दियो ह ओर अब मारे वास्ते आप फरमाव जिण मुजब करूं अे समाचार तुसरान फुरमाव नहीं सो इस पत्र को जुवाव लीख नहीं रावसी। फाइल सं० १०"

इस से स्पष्ट है कि गुम हो गई दसवीं फ़ाइल में केवल दासी ही का पत्र था जो "आर्य" की उक्त संख्या से उद्धृत कर दिया गया है। राजाओं के पत्रों में एक दीन-हीन दासी की पुकार का कुछ विशेष महत्व है। ऋषि की सर्व-प्रियता का यह अति-उज्ज्वल प्रमाण है। ऋषि रंकों के उतने ही थे जितने राजाओं के।

जैसे ऊपर कहा जा चुका है इन ६९ पत्रों के मुद्रित हो चुकने के पश्चात् श्रीयुत किशोरीसिंह जी ने दो संग्रहों में ऋषि दयानन्द के आठ और पत्र भेजने की कृपा की। उन्हें मिला

कर सम्पूर्ण पत्रों की संख्या ७७ हो गई है। ७६ पत्र पुस्तक में छपे हैं और एक पत्र ऊपर भूमिका में। पृष्ठ १७३ पर दिया गया पत्र सं० ४ एक पूर्व-मुद्रित पत्र की प्रति है परन्तु उस में पूर्व-प्रति से कुछ पाठ-भेद पाया जाता है सो पाद-टिप्पणि में प्रदर्शित कर दिया गया है।

पृ० १८१ पर कविराजा श्यामलदास जी के नाम ऋषि का पत्र सं० १ दिया गया है। इस पृष्ठ की पंक्ति ६ में "मांसाहारादि" के पश्चात् कोई शब्द स्पष्ट छूट गया प्रतीत होता है। ऋषि ने घोड़े पर चढ़ने की तरह मांसाहार का भी निषेध किया है। इस सम्बन्ध में मेरे एक प्रश्न के उत्तर में श्रीयुत किशोरीसिंह जी लिखते हैं:—

In this connection I remember one incident that was narrated to me by late Kaviraja Shamal Das ji himself. It was as follows:—

One day while Swami ji was sitting in his room in the Naulakha Palace in Gulab Bagh, His Highness Maharaja Sajjan Singh ji, Kaviraja Shamal Das ji and my revered father Thakur Kishan Singh ji went there for his Darshan. During the course of conversation Swami ji found fault with meat diet. Kaviraja

Shamal Das ji objected and remarked that it gives vigour to human body. Swami ji in reply remarked that milk was more strength-giving than meat. He said that during his whole life he had never touched meat and though older than Kaviraja ji, if he were to catch two of them by wrist they would find it difficult to get loose of him. Kaviraja ji's rejoinder was that this was not due to his milk diet but to his Brahmacharya from his very birth. In spite of all this he led a vegetarian life from Maharaja Shambhu Singh ji's death in 1928 V. up till his own death in 1940 V.

इस अंग्रेज़ी लेख का आर्य-भाषा में अनुवाद इस प्रकार होगा: -

इस संबन्ध में मुझे एक घटना स्मरण है जो मुझे कविराजा शामलदास जी ने स्वयं सुनाई थी। वह यह है:—

एक दिन जब स्वामी जी नौलखा बाग़ में अपने कमरे में बैठे थे, (उदयपुर) नरेश महाराजा सज्जनसिंह जी, कविराजा शामलदास जी तथा मेरे पूज्य पिता ठाकुर किशनसिंह जी उन के दर्शनों के लिए गये। बात करते-करते स्वामी जी ने मांसाहार के दोष बताए। कविराजा जी ने इस पर आपत्ति उठाई और कहा कि मांस खाने से मनुष्य के शरीर में शक्ति आती है। स्वामी जी ने उत्तर दिया:—मांस की अपेक्षा दूध अधिक शक्ति

देना है। ऋषि ने कहाः—मैं ने सारी आयु मांस को कभी हाथ नहीं लगाया। और चाहे अब मेरी आयु कविराजा जी से बड़ी है तो भी यदि आप दो को मैं अकेला कलाई से पकड़ लूँ तो आप का उस का छुड़ाना कठिन हो जाय। इस पर कविराजा जी का प्रत्युत्तर यह था कि इस का कारण शुद्धाहार नहीं किन्तु आजन्म ब्रह्मचर्य है। यह होते हुए भी कविराजा जी महाराज शम्भूसिंह जी के परलोक सिधारने के १६२८ वि० से ले कर उन के अपने देहान्त १६५० वि० तक शाकाहारी ही रहे।

इस घटना से ऋषि के पत्र के अभिप्राय के विषय में सन्देह का कुछ भी स्थान नहीं रह जाता। ऋषि ने कविराजा जी के आपत्ति उठाने से उन्हें मांसाहारी समझा है और रुग्ण दशा में पथ्य के रूप में उन्हें मांसाहार से रोका है।

पत्रों में जिन महानुभावों के नाम आये हैं उन में से कुछेक का परिचय भी श्रीयुत किशोरसिंह जी ने दे दिया है। इस से पत्रों के समझने में सहायता मिलेगी। मैं इन संग्रहों तथा इस परिचय के लिए इन ठाकुर महानुभाव का हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

गुरुकुल कांगड़ी,
हरद्वार
तिथि १६ फाल्गुन, १६६१

रामपति
मुख्याधिष्ठाता

संक्षिप्त परिचय

श्री मोहनलाल विष्णुलाल जी पंड्या

श्री मोहनलाल जी मथुरा के निवासी थे, आरम्भ में कविराजा श्यामलदास जी से मथुरा मिले और उन से उदयपुर राज्य में कोई नौकरी दिलाने के अर्थ प्रार्थना की। स्वामी जी से मथुरा में मिले। स्वामी जी ने कविराजा जी तथा महाराणा साहब को पत्र लिखे जिस में पंड्या जी को राज्य में कोई स्थान देने की सिफ़ारिश थी। तदनुसार उन्हें राज्य में नौकर रख लिया गया। स्वामी जी के उदयपुर पधारने पर दर्बार ने स्वामी जी की सेवा में इन्हें नियुक्त कर दिया वहां आप लिखने पढ़ने का कार्य करते थे। फिर स्वामी जी की सिफ़ारिश से उदयपुर में महद्राज सभा (Chief Court) में मेम्बर करा दिया। वे आर्यसमाज उदयपुर के सर्व-प्रथम मंत्री रहे।

१९४८ वि० में पण्ड्या जी Chief Court की मेम्बरी से च्युत कर के दीवानी हाकिम Civil Judge नियुक्त हुए, इसे इन्हों ने अस्वीकार कर दिया। इस के पश्चात् वह प्रताप गढ़ के दीवान बने। वहाँ से Retire हो कर मथुरा आ गये। मथुरा

आ कर आर्यसमाज से पृथक् हो कर पौराणिक हो गये। ठा० किशोरसिंह जी ने स्वयं अपनी आँखों मन्दिरों की परिक्रमा देते देखा। लगभग १९७० के इन का देहान्त होगया।

कविराजा श्री श्यामलदास जी

कविराजा श्यामलदास जी जाति के चारण थे। इन के पिता का नाम कायमसिंह जी था। कविराजा जी का जन्म १८९३ वि० द्वि० आषाढ़ कृष्ण ७ को हुआ था। इनके पिता उदयपुर में एक प्रतिष्ठित जागीरदार थे।

१९२८ वि० में महाराणा शम्भूसिंह ने मेवाड़ का इतिहास लिखने के लिए आप को नियुक्त किया। इतिहास-विद्या में अनुभव न होने के कारण कतिपय फ़ारसी तवारीखों को देख कर उसी ढंग से लिखने लगे। तथा शिलालेख, सिक्के, ताम्रपत्र, पुराने काग़ज़ात, जनश्रुति, भाषा व संस्कृत ग्रन्थ, काव्य तथा अंग्रेज़ी, फारसी की ऐतिहासिक पुस्तकें एकत्र करते रहे।

मेवाड़ के पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल इम्पी की प्रार्थना पर आप को पुनः इतिहास का कार्य सौंपा गया।

१९३६ वि० के माघ फाल्गुन में इतिहास का कार्य आरम्भ किया और ब्रिटिश गवर्नमैंएट की ओर से गोविन्द गंगाधर देशपांडे शिला-लेख पढ़ने को सहायक मिला।

आप रायल एशियाटिक सोसाइटी बंगाल के मेम्बर बने तथा वहाँ आर्कियालोजी और हिस्टरी के आनरेरी मेम्बर चुने गए। तत्पश्चात् रायल एशियाटिक सोसाइटी लण्डन व बम्बई ब्रांच के मेम्बर बने। पुनः हिस्टोरिकल सोसाइटी लण्डन के फैलो बने। मेवाड़ के इतिहास "वीर विनोद" को लिखते रहे।

महाराणा सज्जन सिंह जी ने कविराजा की पदवी, जुहार, ताज़ीम, छड़ी, बांहपसाव, चरण शरण की बड़ी मोहर पैरों में सब प्रकार का स्वर्ण भूषण, पगड़ी में मांझा की इज्जत दी। अंग्रेजी गवर्नमैण्ट ने महामहोपाध्याय का खिताब दिया।

ज्येष्ठ १९५० वि० को आप का स्वर्गवास होगया।

पं छगनलाल जी

पं० छगनलाल जी श्री माली ब्राह्मण जोधपुर निवासी, संस्कृत के विद्वान थे। आप मसूदा दर्बार स्कूल में संस्कृत-अध्यापक थे। और पुनः वहाँ से जोधपुर दर्बार स्कूल के हेड पण्डित हुए।

सन् १९०० के लगभग जसवन्त कालेज के संस्कृत प्रोफ़ेसर बने। आप आर्यसमाजी नहीं थे।

राव राजा तेजसिंह जी

आप जोधपुर नरेश तख़्तसिंह जी की पासवान के पुत्र थे, और सर प्रतापसिंह जी के कृपापात्र थे। महाराजा

जसवन्त सिंह जी ने आप को जागीर दी थी। जागीर बख्शी के हाकिम रहे। प्रायः समय-समय पर दूसरे कार्य भी मिलते रहे परन्तु मुख्य कार्य जागीर बख्शी का ही रहा। आर्य समाजी विचार अन्त तक रहे किन्तु जोधपुर के राजवंश में इन का आचार महा पतित रहा जो किसी प्रकार भी लिखने योग्य नहीं।

श्री बारहट कृष्णसिंह जी

श्री बारहट कृष्णसिंह जी सौदा जाति के चारण, सीसोदिया वंश के पौलपात, शाहपुरा राजा के जागीरदार थे। इन का जन्म १९०६ वि० फाल्गुन शुक्ला २ को शाहपुरा राज्य के देवपुरा में—उपनाम बारहट जी का खेड़ा में जो वंश परम्परा से इन्हीं की जमींदारी है—हुआ था।

इन की बाल्यावस्था में ही इन के पिता बारहट जी अवनाड़ सिंह जी का परलोक वास हो गया था।

शाहपुराधीश नाहरसिंह जी ने मेवाड़ के साथ अपने सीमा प्रान्त के झगड़ों को तय करने के लिए इन को भेजा। इन की बुद्धिमत्ता के कारण दोनों राज्यों में इन की चाहना हुई। शाहपुराधीश ने इन्हें महकमे-माल का सुपरिन्टेन्डेण्ट नियुक्त किया।

३ वर्ष के बाद शाहपुरा व उदयपुर का कस्टम (जकात) का झगड़ा बढ़ गया। जब आप उसे निपटाने के लिए भेजे गये तो राणा सज्जनसिंह जी ने इन को मांग लिया तथा अपना सलाहकार नियुक्त किया। महाराणा सज्जनसिंह जी इन्हें बहुत चाहते थे। उन्होंने जोधपुराधीश यशवन्तसिंह जी तथा कृष्णगढ़ाधीश शार्दूलसिंह जी के सामने कहा, "यदि मुझे आज तक कोई सुलभ अमूल्य रत्न मिला है तो वह बारहट कृष्णसिंह जी है।"

महाराणा जी ने कविराजा श्यामलदास जी से कई बार अपना संकल्प प्रकट किया कि वह बारहट जी को कोई बड़ी जागीर व मान देकर अलंकृत करेंगे किन्तु यह संकल्प महाराणा के मन में ही रह गया। वे युवावस्था में ही परलोक वासी हो गये। तब बारहट जी राज्य कार्य से तटस्थ हो गये।

श्री बारहट कृष्णसिंह जी कविराजा श्यामलदास जी के भानजे थे।

१९४१ वि० में बारहट जी किसी राज्यकार्य वश जोधपुर पधारे। तब जोधपुराधीश यशवन्तसिंह जी ने उन्हें पैरों में स्वर्णालंकार देकर जोधपुर में ही रख लिया और महाराणा फतहसिंह जी की अनुमति ले ली।

वे अन्त तक जोधपुर रहे । २४ जनवरी सन् १६०८ सायंकाल ३ बजे जोधपुर में उन का देहान्त हो गया ।

आप हिन्दी भाषा के लेखक, व्रजभाषा के कवि, तथा संस्कृत, प्राकृत, मागधी, डिंगल भाषाओं के पूर्ण पण्डित थे। उन्हों ने हिन्दी में कई ग्रन्थ लिखे जिन में से बारहट कृष्णसिंह जी का जीवन चरित्र अथवा देसी रजवाड़ों का बृहत् राजकीय अत्यन्त अन्तरंग आधुनिक इतिहास मुख्य था ।

बारहट जी के जीवनकाल में इस ग्रन्थ के छपने की उन की निजी आज्ञा नहीं थी। इस ग्रन्थ को (जो देशी राज्यों का गोप्य अन्तरंग इतिहास है) देखने के लिए महाराणा सज्जनसिंह जी ने मालिकाना अधिकार से ज़ोर डाला तो यह राज़ी न हुए और सदा के लिए उदयपुर छोड़ कर जाने लगे इस पर सज्जनसिंह जी बहुत प्रसन्न हुए और कहा, "इसे निश्चित रूप से लिखो पर खूब जांच कर लिखो।"

आप आखेट क्रिया में बड़े कुशल थे।

फतहसिंह जी झाला

आप उदयपुर के बड़े जागीरदार १६ उमरावों में से एक थे। कविराजा श्यामलदास जी के मित्र थे। पुरानी शैली के सीधे सच्चे व्यक्ति थे।

ओ३म्

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

द्वितीय भाग

पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंडया के पत्र पूज्यपाद महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम

१. ता० माघ बदी ७ सम्वत् १९३६ का लिखा हुआ
२. ता० १० दिसम्बर १८८० का " "
३. ता० १२ मार्च १८८३ का " "
४. ता० २७ मार्च १८८३ का " "
५. ता० २६ सितम्बर १८८३ का " "
६. बिना मिती तारीख का " "

॥ ॐ तत्सत् ॥

श्रीमान परम पूजनीय परिव्राजकाचार्य स्वामी जी श्री दयानन्द जी सरस्वती महाराज महाशय योग्य लिखी राजस्थान उदयपुर से मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या का साष्टांग प्रणाम अंगीकार हो अपरंच आपका आज्ञापत्र इन दिनों में नहीं आया केवल पाताल लोक निवासियों के पत्रों से आप की कुशलता के समाचार सुने और आप भक्तों के आश्रम पर जो कि काशी में वरुणा नदी पर गुफा है पाताल देश निवासियों सहित पधार पावन किया जिसके भी समाचार श्रीमती परम पूजनीया माजी के पत्र से परिज्ञात हुए कभी कभी आपकी कुशलता के समाचार लिखाते रहैंगे ॥

और आप के विरुद्ध पक्ष वालों के पत्र तथा लेख कि हमने स्वामी जी को परास्त कर दिया इत्यादि विषय के आते रहते हैं अतएव निवेदन है कि आप की ओर के विज्ञापन पत्रादि भी बराबर यहां आया करें तो अच्छा है जिस से एक देशीय भ्रान्ति न हो ॥

अब कब तक आपका विराजना काशी जी में होय फिर आप किधर को पधारेंगे ॥

इन दिनों तो वेद भाष्य का काम अच्छा चलता है श्री श्री जगदीश्वर इसी प्रकार चलाये जाय तो अस्मदादिकों को इस से बढ़कर और क्या आनन्द है ॥

कविराजा जी श्री श्यामलदास जी का साष्टाङ्ग प्रणाम अंगीकार करावेंगे ॥

किमधिकम्

सं० १९३६ माघ वदी ७

भवदीय

ह० मोहनलाल विष्णुलाल

पंड्या

(२)

ॐ

राजस्थान उदयपुर
ता० १० दिसम्बर सन् १८८०
श्रीमान परम पूजनीय परिव्राजकाचार्य स्वामी जो महाराज
श्री ६ श्री दयानन्द जी सरस्वती
महोदय चरण कमलेषु सविनय
निवेदनमिदम्

अपरंच आपका आज्ञापत्र बहुत समय से आया नहीं सो कभी कभी स्मरण रखके यथावकाश प्रेषण करेंगे ॥

तथा अब के अंक के एक विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि मुन्शी बख्तावर सिंह जी ने भी बम्बई वाले हरिश्चन्द्र जी की तरह कुछ आर्य का दोष किया न जाने पढ़े लिखे मनुष्यों को भी यह व्याधि क्यों आय सताती है मुझ को यह अभी निश्चय नहीं है कि वैदिक यंत्रालय आपका ही है वा और किसी ने अपना धन लगा कर स्थापन किया है सो आप अनुग्रह कर लिखावेंगे ॥

और वेदभाष्य मेरे लिखने से आपने निम्नलिखित महाशयों के नाम भेजना प्रारम्भ किया था सो अब आप अब तक का हिसाब लिखवा भेजें कि किस में किस में कितना २ मूल्य बाकी लैना है कि मैं भिजवा दूं।

१. महाराणा जी उदैपुर ११॥)
२. राजराणां फत्तेहसिंह जी (देलवाड़ा)
३. पं० ब्रजनाथ जी उदैपुर ११॥)
४. पुरोहित ब्रजनाथ जी " ११॥)
५. डाक्टर भवानीसिंह जी "
६. मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या उदयपुर ११॥)

जिस में इस वर्ष तक का हिसाब स्वच्छ हो जावे ॥

अब आप का पधारना किधर को होगा ? और सब क्षेम कुशल है ॥

भवदीय सेवक
ह—मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या

(३)

ओ३म्

परम पूजनीय श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामी जी
महाराज चरण कमलेषु

आपका पत्र फा० शु० १० का पहुंचा उत्तर इस भांति ज्ञात हों—

१. मेरे पास राज से रु ७००) सात सौ कलदार आये जिसमें रु ५००) तो अनाथाश्रम के और रु: २००) लड़कियों के और आपके ध्यान से रु २००) के स्थान में केवल रु: १००) एक सौ का ही विचार रह गया इस से गलती मालूम हुई है श्री दरबार ने कुल इस भांति आपको भेंट करी थी—

१२००) आपके
५००) अनाथाश्रम
२००) तथा लड़कियों
१००) रामानन्द जी

२०००)

जिस में से रु: १२००) वैदिक निधि के खाते जमा करा दिये गये और रु: १००) रामानन्द के खते जमा करा दिये गये हैं रसीद उसकी सभा से आपके नाम भेजी गई है सो पहुचेगी। अब रहे रु: ७००) सो ६६२) का तो मनी ओरडर फीरोजपुर भेजे हैं

७) मनी ऑर्डर का महसूल

≈)॥ रजिस्टरी चिट्ठी का महसूल

६६६≈॥)

॥।)॥ बाकी हमारे पास हैं सो फीरोजपुर भेज देंगे।

७००)

और श्रीमन्महाराजाधिराज जी ने मनुस्मृति का आरंभ किया सो बहुत ठीक हुवा—सूचना श्रीमानों की सेवा में कर दिधी है—

विशेष दूसरे पत्र में लिखूंगा—

मोहनलाल

ता० २१ मारच सन १८८३ ई०

(४)

राजस्थान उदयपुर

ता० २७ मार्च सन् १८८३ ई०

परम पूजनीय परिव्राजकाचार्य श्री १०८

चरण कमलेषु निवेदनमिदम्

आपका पत्र फीरोजपुर आर्य समाज के पत्र सहित पहुंचा और दोनों पत्र मेंने मेरे सामने ही कविराजा जी से श्रीमानों की सेवा में ज्ञात करा दिये—

रु: १००) के फरक की बाबत लिखा सो अगले पत्र में में सविस्तर निवेदन कर चुका हूं सो यह फरक तो यों निकल गया— फीरोजपुर से आज मनी ओर्डरों की रसीदें तो आगई हैं पत्र आने पर श्रीमानों की सेवा में मालूम करूंगा।

मेरी सम्मति यह है कि आप सब आर्य समाजों को यह लिखदें कि जिन जिन समाजों के समाचार पत्र छपते हैं उनकी एक प्रति बिना मूल्य के मेरे नाम पर भेज दिया करें कि मैं उनका आशय सदैव श्रीमानों की सेवा में मालूम कर दिया करूं और जो लोग राज के मेरे पुस्तकालय में आय कर पुस्तकावलोकन करते हैं उन के भी पढ़ने में आय कर वृत्तियें बदलें इत्यादि कई एक लाभ हैं॥

समैस्त आर्य समाजों की ओर से जो वैन्यवादे पत्रे श्रीमानों को अर्पण होगा वह छपने को भेजें दिया सो ठीक हुआ इस विषय की अरज भी श्रीमानों की सेवा में मेंनें कर दियी है । और आशय का आशय भी निवेदन कर दिया उत्तर प्रदाने किया कि अत्युत्तम हैं । अब यह पत्र मात्र आर्य समाज छोटी वा वडीयो से सही हो करथी मेरे पास आय जावें कि मैं खानगी में तो ज्यों ज्यों आतें जायगे मालूम करता जाऊंगा और फिर सब के आजाने पर एक सभा कर के प्रत्यक्ष में श्रीमानों की सेवा में निवेदन कर अर्पण करूंगा—

ब्रह्मानन्द जी पहुंचे लिखे सो ठीक है उन की परीक्षा करके और संस्कार करके उनको शिष्य करेगें क्योंकि बिना संस्कार करावें इन लोगों के हृदय में गुरुत्व का मान जैसा चाहियें वैसा नही रहता मेंने तो उनेको जहां तक बना बहुत कुछ रस्ते सिर किया है ॥

(५)

ॐ

श्रीमत्परम पूजनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य
श्री ६ श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी
महोदय चरण कमलेषु

अपरंच इन दिनों में आपका कोई पत्र नहीं आया और न यह विदित हुआ कि आपका जोधपुर से कब और कहां को प्रस्थान होगा और न मैं इन दिनों में आप को लिखसका मेरा शरीर कुछ अस्वस्थ सा था—अब आशा है कि आप अनुग्रह करके सविस्तर समाचार विदित करेंगे—

श्रीमानों का श्री अंग अब आरोग्य है कविराजा जी के नेत्रों का इलाज भी हुआ है और होना है—

तथा अभी पुरोहित जी श्री उदयलाल जी आपके समाचार पूछने को मेरे पास आये हैं और उनके समक्ष ही यह निवेदन पत्र लिखा है— सो आप तत्रस्थ समाचारों से सूचित करेंगे।

श्री चरण सेवक
द० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या
१६—६—१८८३

(६)

श्रीचरणेषु —

अपरंच आपका स्वीकार पत्र छप कर उसकी ५० पचास प्रती आज की डांक में आपके नाम भेजी है—और जितने महाशयों के नाम उक्त लिखनं में लिखे हैं उन के पास भी यहां से परचादि भेज दिये गये हैं—तथा पाली से जो हुलास आपके सूंघने को मंगाई फतहकरण जी के द्वारा सो उस्की पारसल भी आपके नाम भेजी है पहुंच लिखावें।

अगले पत्रों में से जिस्का उत्तर बाकी होय सो लिखावं-

श्री चरणसेवक

ह० मोहनलाल

शाहपुरे में कितने दिन निवास होगा ? सब को यथा योग्य—

शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह जी और स्वर्गीय पूज्यपाद महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का पत्र व्यवहार—

स्वामी जी के लिखे हुए पत्र

(१)

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामी

श्री श्री दयानन्द सरस्वती समीपे

पत्र आपका चैत्र शुक्ला द्वितीया का लिखा हुआ आया जिस के अवलोकन से परमानंन्द हुआ आप के आज्ञानुसार गोकरुणानिधि के विषय में पत्र पर चालीस सहस्र मनुष्यों की तर्फ से सही करके भेजी है सो आप अवलोकन करैंगे आप. के दर्शनों की अहर्निश अभिलाषा रहती है क्युंकि आप जैसे महात्मावों के दर्सन से ऐहलौकिक और पारलौकिक दोनों सिद्धि मिलती है आपके पत्र का उत्तर भेजने में बिलंब हुआ इसका कारण राज्य कार्य की आवश्यकता हुई इस्से क्षमा करैं और राजकुमारों की पाठशाला के विषय में ज्यो आपने लिखा के आर्यकुल भास्करों ने करना स्वीकार कर लिया है सो इस लिपी को देखकर अत्यन्त ही हर्ष हुआ क्योंकि बहुत दिनों से हमारी ये ही इच्छा और अभिलाषा थी बहुत दिन बिदित हो जाने से ज्ञात नहीं होता के आप कहां स्थित है सो जहां पर आप होवे वहां से कुछ सूचना अवश्य कर देवें और यह भी प्रार्थना है कि जब मम्बई से इस तरफ गमन करने का मनोर्थ

आप का होवे तो उस समय हम को कुछ सूचना जरूर करें और साहपुरा भी पावन करें और ये भी हमारी इच्छा है कि आपकी निर्मित की हुई पुस्तकें वेदान्त प्रकाश आदि मगवाई जावे सो इस विषय में भी आप लिखें के वो कहां मिलती है और जिन पुस्तकों का मगवाना आप हमारे वास्ते आवश्यक समझें उसका एक सूचक पत्र भी भेज देवें और आप के किसी शिष्य की बनाई हुई एक पुस्तक जिसका नाम पोप लीला है वो भी यदि आप के पास हो तो भेज देवें कृपा करके कुसल पत्र भेजते रहें किमधिकं बहुज्ञेषु मिती असाढ शुक्ला ८ सम्वत १९३८ को हस्ताक्षर राजाधिराज नाहर सिंहस्य।

(२)

ओ३म्

Long Live

The of

Prince Wales

॥ स्वस्ति श्रीसर्वोपकारार्थ कारुणिक परमहंस परिव्राज-काचार्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरणार बिन्दों में माहराजाधिराज शाहपुरेश की वारम्वार नमस्तेस्तु अपरंच पत्र आपका अजमेर के मुकाम से आया उसके पढ़ने से मे अति प्रसन्न हुआ बमुजिब तहरीर आपके नाई और स्वार जिसकी सिकायत तहरीर फरमाई थी उनको सजा जुरमाना दे दी गई है और गाड़ी का सामान समाल लिया गया है—ईस के बाद जोधपुर से आनन्द पुरबक पहूंचने का पत्र आप का आया उसके देषने से भी मेरा मन अति आनन्दित हुआ— यहाँ से मैंने एक कागज अपनी भुवाजी अजबजी के नाम लिष कर भेजा है सो किसी के मारफत जोधपुर माहराज के अन्तहपुर में उनके पाश पहूंचा देवें और म्सूदा वालों को जो आपकी

मोजुद ही में आये थे उनको आदर पूर्वक आज रूपस्त दी गई है—और माहराना जी साहब के खुसी होने के बारे में मंने उनके नाम अंरेजी लिष कर भेजी है उसकी नकल आपके पास मुलहायजे के लिए भेजता हूं और मैं उम्मेद करता हुं कि ईस बार में आपने भी दरबार में कुछ सत्य उपदेश का पत्र भेजा होगा कदापि न भेजा गया हो तो जरूर क्रपा करके भेजै और जिस आदमी के विसय में आपने फरमाया था वो अभी तक नहीं आया आय पर उसके विषय का हाल लिषुंगा क्रपा दृष्टि बनी रहे—और प्रसन्नता का पत्र भिजवाते रहे मिती जेष्ठ क्रस्ण "सम्वत १९३९ का तारीष ९ जून सन १८८२ ईस्वी

हस्ताक्षर: नाहरसिहस्य

(३)

॥ श्री ॥

Long Live

The of

Prince Wales

॥ स्वस्ति श्रीसर्वोपकारणार्थ कारुणिक परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरणारविन्दों में माहराजाधिराज शाहपुरेश की बांरम्बार नमस्तेस्तु अपरंच—जो के जब आप यहां से पधारे जब से आप के दरसनों की अभिलाषा लाग रही है और अब यहां से आप के दरसनों के लिये काका-सबलसिंह जी को भेजा है यह आप के षुसी के हाल लिखेंगे जब दिल बहुत प्रसन्न होगा और हाल तो आपने चिट्ठी भेजी उस्से मालूम हुआ और औरसियर भी आपकी कृपा से अच्छा तलास हो गया है ।

मिती आसाढ़ कृष्ण ३ सम्वत १९३९ कातारीष २३ जून सन १८८२ ईसवी—

हस्ताक्षर राजाधिराज नाहरसिंहस्य

(४)

नमस्ते

नमस्ते

मैंने प्रातः काल कुछ ध्यान करने वास्ते आपसे कल जिकर किया था सो आपने फरमाया के योगविधी पूर्वक हम तुम को सीखलावेंगे इस कारिये के वास्ते एकान्त में सीखना हो तो अच्छा है इस्से मेरी यह प्रार्थना है के आप जंगल में घूमने को जाते हैं उस वक्त मै भी साथ हो जाऊं तो मेरे वास्ते अच्छा होगा या और वखत् आप तजवीज कर दें उस वक्त में मैं आकर सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर के ध्यान करने की बिधी सीखूं— किमधीकं वीगेशु—

हस्ताक्षर नाहरसिंहस्य

(५)

॥ श्री ॥

स्वस्ति श्री सर्वोपकारार्थ कारुणिक परमहंस परिव्राजका-चार्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी माहराज के चरणारविन्दों में माहराजाधिराज शाहपुरेश की बारम्बार नमस्तेस्तु अपरंच ॥ आपकी महरबानगी के साथ दो तीन षत पहूंचे पढ़ने से बहुत प्रसन्न हुआ और जुहार सिंह जी के विशय में आपने ये लिषा था के उस का कुछ हाल न्हीं लिषा सो इस्का कारण यह हुआ कि में इस अरसे में ककड़ोला चला गया और नवाहरसिंह जी भी मेरे साथ था और वहां अवकाश न मिलने के कारन न लिष सका सो आप क्षमा करै जैसा आपने इन के विशय में कहा था उस्मे भी मेंने अच्छा पाया और जो आपने लिषा था के पूर्व प्रतज्ञात पत्र के कुछ च्युरध हुवा हो तो लिषै सो उसके च्युरध कुछ नहीं हूआ। मेरे यहा का यह कायदा है के लिषने में एक तो और सिवाये मिले तो अच्छा है यह षयाल मेरा है और आपकी मारफत सिरफ ५०) रुपये मासिक लिषा गया था पर हमने इन की दानाई और लयाकत देष के ६०) रुपये माहवार कर दिये हैं षाना हमने इस वास्ते सामिल रषा था के ये नावाकिफ थे इन को सुरूसुरू ही में तकलीफ होती अब चंद रोज के बाद

वाकिफ हो जावैंगे तो षुद इन्तजाम कर लेंगे और अब षानगी काम भी सुपुरद कर देवेंगे—और सबल जी काकोजी आप के षिदमत में हाजिर हुए होंगे—बूंदी का पत्र आया वो असा ही था जैसा आरयू के नाम दस्यु या अनारी लोग लिषते हैं—क्षत्रिय पाठशाला बहुत जल्द होने वाली है—जैसी आपकी कृपा दृष्ट मेरे हाल पर है वैसी ही बनी रह और समाज भी यहां बनाने की तजवीज हो रही है इश्वर ने चाहा तो बहोत जलदी आर्य समाज भी कायम हो जायगा मिति आसाढ़ सुदि १५ सं० १९३९ तारीष २० जोलाई सन १८८२ ईसवी हः दस नाहरसिंहस्य

साहपुरा

(६)

॥ श्री ॥

"स्वस्ति श्रीसर्वोपकारार्थ कारुणिक परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी माहराज के चरणारविन्दों में माहराजाधिराज शाहपुरेश की बारम्बार नमस्तेस्तु अपरंच" इन दिनों में आप की षुसी मिजाज का समाचार आया नहीं सो महरवानी करके लिषावेंगी—यहां क्षत्रिय पाठशाला का उद्योग था वो निसफल हुआ—और यहां सब षैरयत है—और जवारजी के विशय में एक पत्र आप के पाश पेशनर मेजा था उस पिछे जवारजी के नोकर होने के विशय में उन से और हम से बात चीत हुई तो उनकी बात चीत से यह साफ पाया गया के ७५) रूपये माहवार की तनषा उनकी बहोत जल्द होने वाली है वो सिरफ मेरी षातिर कम तनषा पर रहते हैं और आपको बषुबी याद होगा कि मैंने सिरफ ५०) रूपये के वादे पर बुलवाया था और ६०) रूपये माहवार कर दिये ताहम ७५) रूपये से कम है इस में उन का १५) रुपये माहवार का सरासर नुकसान है इस्से में उनका नुकसान नहीं चाहता इस्से में यह मुनासिब समझता हूं के ५०) रुपया माहवार के हिसाब से यहां रहे उत्ते दिन की तनषा

और १००) रुपये आने जाने के खर्च के कुल २५०) रुपय देकर रुखसत कर दिये जावै ये हाल बतोर वाकफियत के आपको लिखा है मेरे यहां का यह कायदा है के कहना वैसा ही करना है और दूसरे यह है के जिसकाम के वास्ते मैंने उन को बुलवाया था उस काम के वास्ते वोह कहते है कि इस में लयाकत दीखलाने का मौका कम मिलेगा और यहा का जो एजन्ट साहब है वोह लायक आदमी पसंद न्हीं करता और यहां अकसर सरदार भी साहब के पाश पुकारु गये हैं और जवाहर जी के निस्वत मेरी राय यह है के जब माकुल असामी खाली होगी जब मैं बुला लुंगा ये भी मुझ से वाकिफ हो गये है और मैं भी इन से वाकिफ हो गया हूं और यहा लायक काम होय सो लिखावसी मिती भादवा वदि १४ सम्वत् १९३९ का तारीख ९ सीतम्बर सन् १८८३ ईस्वी—

द: नाहरसिंहस्य

(७)

॥ श्री ॥

स्वस्ति श्रीमदमंदानंदसंदोहगर्भितोपयोगशालि परमैश्वर्य वर्य सौंदर्य लीला विलास वनकानन घनाघन विपुल सकल सिद्धि बुद्धि समृद्धिवृद्धि संसिद्धि साधन स्वशक्ति व्यक्तीकृतानंत सत्त्वसत्त्वादिगुण-श्रेणिरमणीयकापर्णा रमणालय जन्य तेजः पुंज दूरदूरीकृत किल्बिषांधतमसाना मैहिक पारत्रिक विषय भोगानासक्तानां केवल परानुग्रह वियोपयोगसंपन्नाना मविद्या समुद्भूताहंकारममकारादीर्ष्यादि-दोषरहितानां सच्चिदानंद मंदमानसरः परिशीलन राज हंसानां योग्य क्षेत्रोप्त धर्मबीज फलित सर्ववर्गाणां प्रसर्पदर्प्यकंदर्पसर्पविहितो-न्माद भंगभागिणा सौदार्य धैर्यगांभीर्य चातुर्यादिवर्याणां विद्वज्जन समाज भ्राजमानानन्यसामान्य रत्नावली निष्कल हीरावलीनाम-निकवादि वादगण संरंभ विजयकार्य करणा वीराधिवीराणां श्रीमद्विबुध धुरंधराणां सज्जनमन सहकार चारु कीराणां दुर्जयस्मर-वीर निर्जयकरणाजन्हुतनया धराणां सप्तसमुद्र मुद्रित लावण्यवती विद्वज्जन जिगीयमानकीर्तिग्रामाणां सद्योपस्थित श्रौतस्मार्तादि विधि

शिक्षा समर्पक्ष दीक्षा गुरूणां राज राज राज हंसोत्त मांग कार्तस्वर किरीटमाणिक्य छवि भास्वरां श्रिकोकनदानां श्रीमत्परिव्राट् चार्याणां राजाधिराज श्रीनाहरसिंहदेव वर्म्मणा कृता दंडवत्प्रणिति- ततयः समुल्ले संतुतराम् विशेषस्तु भाषया उदयपुर से सिद्ध करी के चीताड़ पधारनं की षबर आपकी मिली सो सुनते ही द्वारहद्द नाहरसिंघ जी कु आपके पास भेजे हैं सो साहिपुरें पधार सी मिती फाल्गुण वुद २ सं० १९३९

नाहरसिंह

हस्ताक्षर छत्रदत्तस्येदम्

(८)

॥ श्री ॥

नमस्ते

लाहौर आरीये समाज का पत्र जो आपनै मुजको दीया था सो वुसका जुवाब भेजा हैं सो आप मरबानी करके लीष भेंजे मेरे पढ़ंन के ओर समज के बारे में जो दरयाफत कीया है सो जसा आप समजते है वसा लीष भेंजे ।

ह: नाहरसिंहस्य

(६)

॥ श्री ॥

स्वस्ति श्रीमदमंदानंदसंदोहगर्भितोपयोगशालिपरमैश्वर्य वर्य-सौन्दर्यलीला वितान घन कानन घनाघन विपुल सकल सिद्धि बुद्धि ऋद्धि वृद्धि संसिद्धि साधन स्वशक्ति व्यक्ति कृतानंतसत्वसत्वादि गुणश्रेणिरमणीय कापर्णारमण लय जन्यतेजः पुंजदूरदूरीकृत किल्विषांधतमसानामैहिकपारत्रिक विषय भोगा नासक्तमनां केवलपरानुग्रह विद्योपयोग सम्पन्नानामविद्यासमुद्भूताहंकार ममकारा-दीछादिदोषरहितानां सच्चिदानंदा मंदमानससर: परिसीलनराज हंसानां योग्य क्षेत्रोप्त धर्मबीजफलित सर्वचर्गाणां प्रसर्पद्दर्प्पकंदर्प सर्प विहितोन्मादभंगभर्गाणामौदार्य धैर्य गांभीर्य चातुर्यादिवर्याणां विद्वज्जनसमाज भ्राजमानानन्यसामान्यरत्नावली निष्पन्नहीरावली-नाम नैकत्वादिवादरणसंरम्भ विजय कार्य करण बीराग्रि बीराणां श्रीमद्विबुध धुरन्धराणां सज्जनमनः सहकार चारुकीराणां दुर्जय-स्मरवीर निर्जय करण जन्हुतनया धराणां सप्त समुद्र मुद्रितलावलय वर्ति विद्वज्जन जेगीयमानकीर्ति ग्रामाणां सदोपस्थित श्रौतस्मार्तादि विधि सिक्षा समर्पण दीक्षा गुरूणां राज राज राजहंसोत्तमांङ-कार्त स्वर किरीटिमाणिक्य छबि भास्वरांघ्रि कोकनदानां श्रीमत्-

परिव्राजनवर्याणां श्री श्रीदयानंद स्वामिनो चरणतामरसेषु रत्ना पत्तनरः श्रीमद्राजाधिराज श्री नारसिंहदेव वर्मणा कृता दंडवत्प्राणतिततयः समुल्लसन्तुतराम्। शमस्त्वत्र दयासिंधो श्रीमदीय मिहेप्यते सदैव येन मे चेतः सुषमाप्नोत्यहर्निश १ उक्तमस्तु श्रीमतामुदयपत्तनत कुत्र गन्तुमिच्छा अत्रागमनेच्छा चेत् झटिति उल्लेपनीय मिनः वाहनादिकं प्रेरयिष्ये यद्दिनं श्रीमद्दर्शनं भविष्यति तत्सुदिनं भविष्यति किमधिकम् सर्वेषां सुतरूणां हि पुष्पादेव फलोद्गमः अस्य प्रेमतरोश्चित्रं पत्रादेव फलोद्गमः १

मिती कार्तिक कृष्ण ६ भृगौ

हस्ताक्षर राजाधिराज नाहरसिंहस्य

पौंडरीक शिवशर्मात्मजछत्रदत्तस्य महस्रशः दंडवत

समुल्लसंतुतराम्

(१०)

ओ३म्

स्वस्ति श्री सर्वोपकारकार्थ कारुणिक परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री २१ मद्-दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरणार विन्दों में-महाराज राजाधिराज साहिपुरेश की वारम्वार नमस्तेस्तु-वैदिक धर्म उपदेशक मंडली में मेरी और से एक उपदेष्टा रहै—जिस के व्यय के वास्ते एक १) मुद्रा नित्य-प्रति मासिक ३०) रौप्य यहां से निरन्तर आज की तिथि से प्राप्त होते रहैंगे—सो वैदिक धर्म स्थापन पुनः पाषंडादि खंडन करते रहैं—

सं० १६४० वि० जेष्ट कृष्ण ४—

हस्ताक्षर नाहरसिंहस्य

(११)

॥ श्रो३म् ॥

स्वस्ति श्री सर्वोपकारार्थ कारुणिक परम हंस परिव्राजकाचार्य श्री २१ मद्दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरणारविन्दों में महाराजाधिराज साहिपुरेश की वारम्वार नमस्तेऽस्तु-अप्रंच यहां आप का विराजना सार्ध द्वय मास पर्यंत हुआ तथापि आप के सत्य धर्मोपदेश के श्रवण से मेरी आत्मा तृप्त न हुई—आशा थी कि आप ग्रीष्मान्त अत्र स्थित होते-परन्तु योधपुराधिशों की ओर से दर्शनों की और वेदोक्त धर्म उपदेश ग्रहण की-पुनः सत्या चरण-असत्य का त्याग और आपके मुखार बिन्द से श्रवण करने की अभिलाषा देख कें आपने वहा पधारना स्वीकार किया और भवच्छरीर भी क्रोड़ों मनुष्यों के उपकारार्थ प्रगट हुआ है यह समझ के मेरी भी सम्मति यही हुई कि आप का पधारना ही उत्तम है—यही समझ के यहा विराजने की प्रार्थना नहीं की आशा है कि कृत्य कृत्य करने के निमित्त पुनरागमन करेंगे-सं १६४० वि० जे० कृ० ४

हः नाहरसिंहस्य

(१२)

॥ ओ३म् ॥

स्वस्ति श्री १०८ श्री स्वामी जी म्हाराज श्री दयानंद सरस्वती जी के चरणार विंद मैं सेवक छत्र दत्त की साष्टांग प्रणाम दंडवत मालुम होमी—अप्रंच आपके पधारने के पिछें कोइ कृपा पत्र आय नहीं सो कृपा करके भेजावसी ओर सेवक पर सुद्रष्टि हैं जैसी बनी रहैं और वेद भाष्य की पुस्तका असाड़ बुदी १ को मेरे पास आ गइ हैं सो मालुम होसी अब दोयेक दिन मैं रुप्या प्रयाग भेजुंगा अधीश बहोत आनंद मैं हैं आपके हुकम माफक अग्निहोत्र का सर्व कार्य यथार्थ करा दीया हैं आपके दर्शनो की अभिलाषा बहोत हैं सो परमेश्वरजलदी दर्शन देंगे सिव शर्मा जी हाल कोटे से आये न्ही बहां से नमस्ते मालुम कराया हैं अधीशुं का भी मालुम होवैं और मेरे

लायक काम होवें सो लिषावसी यहां आपका हुकम हैं इत्ता दीन कार्य मैं लग रहा था जी से पत्र न्ही भेजा सो माफ करसी अर्वाश मिन्थ पातंजल विचारंत हैं मीती आसाढ़ वुद ६ सं० १९४० दसकत आपका सेवग छत्रदत्त का

पत्र जलदी में भेज्या हैं सो माफ करें कोई चुक हो तो पीछैं मैं सव समेचार यथावस्थित लिषुंगा अमर दान जी के आशीर्वाद ५० आदमी अछे आर्यमत में हो चुके हैं फेर भी होंगे।

(१३)

ओ३म्

स्वस्ति श्रीमन् जगद् गुरु सर्वोपमा विराजित वेद मूर्ति श्री श्री १०८ श्री मद्दयानंद सरस्वती स्वामिनां चरण कमले अनुचर ब्रह्मदत्त कृतानेक दंडवत्समुल्लसन्तुतरास् भाषया आप के पधारने के पीछें कोइ कृपा पत्र न्हीं आया सो कृपा करके पत्र देसी और वृत्तांत वहां के लिषावसी यहां अधीशों को दर्शन की वहुत अभिलाषा लाग रही हैं होकम् माफक पठन पाठन होता हैं नित्य ध्यान भी होता हैं और जुहारसिंह जी के और हमारे नित्य आर्यसमाज करने का विचार होता हैं सो अब आप की कृपा से यहां बीस कु होगा आद्य अधीश ओर जुहारसिंह जी मैं सर्वकाछोला के परगने दौडा मैं जावेंगे सो पीछें आय कर समाज करेंगे मैंने भी ६० सातर तो कर लिये हैं होते जाते हैं उपदेश नित्य करता हुं आपकी कृपा है ज्युं ही बनी रहें और भाष्य के रुपैये आज भेज दिये

हैं ओर यहां लायक काम होवें सो लिषावसी कोटे से सिवशर्मा जी का नमस्ते वचावसी ओरं कोटाधीश की भी दंडवत मालुम होसी आप का नित्य वार्ता पूछै हैं सो आप लिषावेंगें तो म वहां लिषु वहां से अधीश पुछाते हैं मिती आषाढ़ सुद ७ सं १९४०

दः छत्रदत्त का

[३८]

स्वामी जी के शाहपुराधीश के नाम लिखे पत्र

(१)

ओ३म्

श्रीयुत माननीयवर शुभ गुण गणालंकृत श्री महाराजराजाधिराज श्री शाहपुराधीश आनन्दित रहो ।

विदित हो कि हमने ५०) रुपया का मनियाडर भेज्या था सो रुपया ५०) काका साब सबलसिंह जी के हाथ आ पहुंचा और अग्निहोत्र का आरम्भ होगया सुनके अत्यन्त आनन्द हुआ और छात्र शाला का प्रारम्भ होगा सुनेंगे जब अत्यन्त आनन्द होगा सम्वत् १९४० मि० असाढ़ शुक्ल ४ रवि

{ दयानन्द सरस्वती }

(२)

ओ३म्

श्रीमन्माननीय वर श्रीयुत माहाराज राजाधिराज शाहपुरेश आनन्दित रहो। रजष्टरी पत्र आपका गत दिन आया, समाचार विदित हुआ, सरदार जवाहरसिंह जी के विषय में आपकी जैसी इच्छा हो वैसा कीजिये, मैंने भी उनको कई वार मासिक के गड़ बड़ न करने के विषय में लिखा था कि ऐसा न करना चाहिये परन्तु वैसा ही हूआ, इसमें १ एक वात विचारणीय है कि सरदार जवाहरसिंह जी मेरे संबध से बुलाये आए हैं यह प्रथम कार्य हुआ है यह आगे आप लोगों और जिसको मैं बुलाना चाहूंगा उन दोनों को अविश्वास का कारण होगा अस्तु जैसा हुआ वैसा ही हो और क्षात्रशाला का उद्योग निष्फल हूआ यह शोक की बात है यहां ७ सात दिन से वर्षा होनी है सब मारवाड़ में फिर भी होने का संभव है और अकाल का नाम उठ गया यहां सब प्रकार से प्रसन्नता है यहां का समाचार पश्चात् लिखेंगे

छीतरदत्त जी आदि और स० जवाहरसिंह जी को भी मेरा आशीर्वाद कहियेगा वहां वर्षा हुई वा नहीं सो समाचार लिखियेगा।

{————}

॥ श्री ॥

कविराजा जी श्री श्यामलदास जी के पत्र पूज्यपाद महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के नाम

१. मिति फाल्गुन कृष्णा ७ वि० सं० १९३८ का लिखा

२. मिति श्रावण कृष्णा १० वि० सं० १९३९ का "

३. बिना मिति का छोटा परचा

४. श्रावण शुक्ला (?) का रतलाम की कोठी इंदोर से लिखा

५. भाद्रपद शुक्ला ६ सं० १९४० वि० का लिखा हुवा

पूज्यपाद महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का पत्र स्वर्गीय कविराजा श्यामलदास जी के नाम

१ मिति आश्विन वदी १० सं० १९४० वि० का लिखा

(१)

॥ ॐ ॥

॥ स्वामी जी महाराज श्री दयानंद सरस्वती
जी की सेवा में—

नमस्ते पत्र आपका प्राप्त होने से परम प्रमोद हुवा आपने गो रक्षा निमित्त अधीशों के हस्ताक्षर करवाने के विषय में लिखा सो निवेदन किया गया और आज्ञानुसार लिखा जाता है कि आप अपनी प्रतिज्ञानुसार वह पत्र शीघ्र प्रेषण कीजिये जिस पर हस्ताक्षर करवाये अपेक्षित है आपने अपने पत्र में लिखा कि तुमारे पास उक्त विषय का पत्र मैंने प्रेषण किया परंतु मेरे दृष्टि पथ न हुआ मरुस्थलेश्वर भी यहां मधु मास के प्रारम्भ में आवेंगे वाले है यह अवसर भी उत्तम है । इत्यलम्
सं० १९३८ फाल्गुन कृष्णा ७ शुक्र

आपका छात्र कविराजा श्यामलदास राज्यधानी
उदयपुर वास्तव्य

---

(२)

॥ श्रीराम जी ॥

स्वस्ति श्रीस्वामी जी महाराज श्री १०८ श्री दयानंद सरस्वती जी की सेवा में उदयपुर निगम वास्तव्य कविराजा श्यामलदास को प्रणाम निवेदन होवें अंपरंच' । पत्र तथा तार आपको आयो परंतु बहुत न्यून सा वकाश रयो तीसूँ अठासूँ तो सवारी वगेरा प्रबंध पहुंच सके नही परंतु हाकम चित्तोड के नाम हुकम अठासूं पूग गयो हे सो आपके वास्ते म्यानों पहरो हलकारो तथा दूजा साथ वाला के सवारी भार बरदारी के वास्ते उरगाडी फोरन हाकम चित्तोड बंदोबस्त कराय देवेगा और। मार्ग को प्रबन्ध भी उत्तम रीति सूँ कर देवेगा सो आपनें कुछ भी श्रम नहीं होवेगा आप कुसी के साथ चित्तोड होय उदयपुर पधार जावें परमानंद की वार्ता है कि आप के साथ कुछ दिन सत्संग में व्यतीत होवेगा।

सं० १९३९ श्रावण कृष्णा १०

(३)

॥ श्री ॥

श्रीमत् यतिराज दयानन्द सरस्वतिभ्यो नमः

आप यहाँ ४ बजे राज्यभवन मैं पधारिये. यान ३॥ बजे वहां पहुँचेगा

सेवक श्यामलदास.

(४)

ओं इन्दोर रतलाम महाराज की कोठी

श्रावण शुक्ला ५

श्रीमद् परम हंस परिव्राजकाचार्य श्री श्री स्वामी दयानन्द समीपेषु नमस्ते

आपका एक पत्र मुझ को शफाखानें के द्वारा असाढ़ वदी ११ का लिखा उमा मास के अंत के पास मिला था परन्तु येह निश्चय न था कि आप वहां है इस कारण स उत्तर लिखा न गया जोध पुर में जो उदयपुर का वकील रहता है उस से पूछने पर कल ज्ञात हुवा कि आप अभी वहीं विराजते हैं और विराजेंगे. मेरी आखों में जोधपुर से लौटने पर अनायास रोग होकर कई महीने मुझे बोहत दर्द का दुख उठाना पड़ा वहां डाक्तरों की चिकित्सा से कुछ आराम न होकर मैं यहां आया डाकटर कीगन जो आख की चिकित्सा में बड़े निपुण हैं इलाज करते हैं और गणपत सिंह जी जो उन के नीचे हैं वोह भी दिन प्रति संभाल लेते हैं येह आपके लिखे के अनुसार बोहत उत्तम आदमी हैं पहले करते मुझे फाइदा भी बोहत है किसी

सहारे के बिना भी मैं चल फिर लेता हूं आशा है कि कुछ दिनों में और भी अच्छा हो जाऊं. शुभकार्य्य में विघ्न तो हुआ परन्तु अनायास दर्द हो जाने से—इस्पर भी उस के बिचार से निश्चित नहीं हूं और विश्वास रखता हूं कि पीछा आते हुए और भी दो तीन जगह के अक्षर करा लिये जावेंगे।

भवदीय

क. रा. श्यामल दास

बकलम ब्रजनाथ मि. ल

ब्रजनाथ भी जो कविराज जी की सेवा में है प्रणाम अर्ज़ करता है

(५)

श्री

स्वामी जी माहाराज्यो श्री दयानंद सरस्वती
जी की सेवा मै ।

॥ अपंरच ॥ पत्र आपका भाद्रपद वि द् ६ का लिखा आयो पढ़ कै अती आन्द हुवा मेरे नेत्र बाये मै पहली बार अपरेशन नहि हुवा था जीस कारण से फेर दरद उठ आयो जीसै मैं भाद्रपद क्रष्ण ११ के दिवस ईहां पर आण कै फेर अपरेशन करवायो है डाकत्तर साहेब के ईलाज मै वा आप की अनुगृह से अबे नेत्र मै आराम हैं ओर होता जाता है अब मेरा ईरादा ईहा सै दौ च्योर दिवस मै चित्तोड़ की तरफ जाने का है ओर आपनै गोरक्ष का वीसय मै लिखा सो ईहा पर माहाराज्ये हुलकर सै कहा तो ईन्न तो ग्रेह कहा है कि हम स्वामी जी माहाराज्ये आवेगे तब कर देगे ओर ज्यो सब जगह हम उद्यम करते ही है १९४० भाद्रपद सुल्का ६ ता॰ ७ सीतंब्र

ह॰ श्यामलदास मुः ईन्दोर कोठी राजा
रतलाम छावणी में

(१)

स्वामी जी का पत्र

॥ ओम् ॥

श्रीयुत कविराज स्यामलदास जी आनंदित रहो— अब हम यंहां जोधपुर से संवत् १६४० मिति आश्विन वदी ३० अमावस्या सोमवार को अर्थात् सन् १८८३ तारीख १ अक्तूबर को रवाना हो के जिले अजमेर राज मसूदा में ता० ४ अक्तूबर आश्विन सुदि ३ तृतीया बृहस्पति वार को पहुंचेंगे और यही समाचार श्री मानों के पास भी बाहारठ किसन जी के द्वारा भेज दिया है और यहां का समाचार आप को बहुत्त सा पहुंच भी गया होगा और पश्चात् मसूदे से लिखेंगे और (जय पत्तनन्य कार्य स्मरणं वर्तते न वास्मिन्कार्य सिद्धि करणे विलंबो नैव कर्त्तव्य इति) और नेत्र अरुण हो गये वा नंही ? क्या श्रीमान भी चित्तोड़ गढ में पधारेंगे वा नंही और इस पत्र का उत्तर ठिकाना मसूदा जिले अजमेर राजपूतानें में भेजियेगा—

मिति आश्विन वदी १० सम्वत् १६४०

{ ———— }

जोधपुर राज मारवाड़

दर्बार स्कूल मसूदा ज़िला अजमेर के द्वितीय संस्कृताध्यापक पं० छगनलाल जी द्विवेदी के पत्र पूज्यपाद महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के नाम

१. वैशाख वदी ७ वि० सं० १९३९ का लिखा
२. वैशाख वदी ६ वि० सं० १९३९ का लिखा
३. ज्येष्ठ शुक्ला ६ वि० सं० १९३९ का लिखा
४. विना मिती का पत्र
५. आषाढ़ शुक्ला १ वि० सं० १९३९ का लिखा
६. " " " " "
७. द्वितीय श्रावण शुक्ला ६ वि० सं० १९३९ का लिखा
८. आश्विन कृष्णा ११ वि० सं १९४० का लिखा
९. आश्विन शुक्ला ४ वि० सं० १९४० का लिखा
१०. विना मिती का संस्कृत-पत्र

(१)

ओम्

सिद्ध श्री शाहपुर शुभस्थाने सर्व शुभ ओपमा सकल गुण निधान सर्व शास्त्र संपन्न श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य वर्य्य त्व चर्म्मैक गुर्ण सम्पद्विराजमान श्रीमद्वेदविहितीचारम्भ निरूपक श्रीमत् स्वामी जी महाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज योग्य अजमेर से छिवैदी जगनलाल का अनेकवा समस्ते मालुम होवे अत्र कुशलमस्ति तत्रास्तेव अपरन्च कृपा पत्र श्रीमन् का आया जिस्से निहायत खुशी हासल हुई और श्रीमन् ने लिखा कि अब जब कभी हम मसूदे में आवें तब श्री दरबार कुं और तुमकों छ शास्त्र के मुख्य मुख्य विषय और मनुस्मृति के तीन अध्याय पढ़ाना चाहते हैं उस समय वहीं रहना हो और निरन्तर पढ़ना हो तो एक आध महीने में सब हो जावेंगे इसका उत्तर लिखना और यहां के श्री महाराजाधिराज ने मनुस्मृति का अध्याय पढ़ लिया है दो दिन योग शास्त्र अभ्यास करने के लिये पढ़ कर कल अष्टाध्याय का आरंभ करेंगे आदि सो अरज है कि श्रीमत् की कृपा होगी तो पढना श्री दरबार का और मेरा हो जावेगा श्री दरबार मे बहुत २

करके सुक्क को फरमाया है कि श्रीमन् को लिखो कि अब दर्शन हुये को बहुत अरसा हो गया है कृपा करके शीघ्र पधारें सो कब पधारना होगा लिखावें और श्रीमहाराजाधिराज के अब अष्टमाध्याय हो गया होगा ऐसे श्री महाराजाओं के पढने से आशा है कि संसार का बहुत उपकार होगा परमेश्वर महाराज ऐसे गुणग्राहि श्रीमहाराजाधिराज को सदैव आनंद में रखें और पहले पत्र श्रीमन् को फालगुन शुदि १२ को दिया था जिसमें लिखा था कि शाहपुरा के बगतावरसिंह जी राज श्री बाइ जी साहबां के संबंध के वास्ते आये बात चीत की अब बगतावरसिंह जी वहां आये हैं सो अरज करेंगे दोनुं साहबों में से एक कीसी का संबंध कर देने का विचार है सो आप इस बात का खयाल रखें और जो हाल हो सो कृपा कर के लिखावें परंतु इसका जवाब श्रीमन् ने अब तक नहिं भेजा इसलिये अरज है कि इस बाबत कृपा करके जलदि लिखावें और परमेश्वर की कृपा से यहां सब तरह से आनंद है यहां का कोइ कार्य्य हो सो लिखावें ।

संवत १९३९ का वैशाष वदि ७

(२)

॥ ओ३म् ॥

सिद्ध श्री शाहपुरा शुभ स्थाने सर्व शुभ ओपमा सकल गुण निधान सर्व शास्त्र संपन्न श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य वर्य्येत्याद्यनेक गुणगणालङ्कृतान्तःकरण श्रीमद्वेद विहिता चारधर्म्म निरूपक श्रीमत् स्वामी जी महाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज योग्य अजमेर से द्विवेदी छगनलाल का अनेकधा नमस्ते मालूम होवे अत्र कुशलमस्ति तत्रास्त्वेवं अपरंच पहिले यहां मथुरा के राजा जी उदितनारायण जी के भाई बाबू बलदेवप्रशाद जी आये थे और यहां हवेली पर ही ठहरे थे उन्होंने कहा था कि श्री स्वामी जी महाराज को हमारा नमस्ते लिख देना स्वामी जी महाराज मथुरा में आते हैं तब हमारे यहां ही ठहरते हैं और बहुत सी प्रशंसा की अब थोड़े दिन पेशतर चिट्ठी उनकी आई जिसमें लिखा कि श्री स्वामी जी महाराज को आपने चिट्ठी दी होगी जवाब आया होगा जवाब से मुतलअ

करिये सो उनकी तरफ से आप को नमस्ते मालुम होवे और इनकूं आप अच्छी तरह से जानते होंगे और इनके इलाका कितनाक है कैसे है सो लिखावें और कल यहां से पत्र रवांन किया जिसमें लिखा ही था और यहां का कोई कार्य हो सो कृपा करके लिखावें और जलदि पधारे

संवत् १९३९ का वैशाष वदि ९ —

(३)

ओ३म्

॥ सिद्ध श्री जोधपुर शुभ स्थाने सर्व शुभ ओपमा सकल गुण निधान सर्व शास्त्र संपन्न श्रीमत् परमहंस परिव्राजका चार्य्यवर्य्य त्याद्यनेक गुण सम्पद्विराजमान श्रीमद्वेदविहित चार धर्म्म निरुपक श्रीमत् स्वामी जी महाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दयानंद सरस्वती जी म्हाराज योग्य अजमेर से द्विवेदी जगनलाल का अनेकधा नमस्ते मालुम होवे अत्र कुशलममस्ति तत्रास्त्वेवं अपरंच मैंने पत्र ज्येष्ठ वदि १४ को भेजा था सो पहुंचा होगा श्रीमत् का कृपा पत्र नहिं आया इस लिये चित्त चिंतित रहता है कृपा कर दिलावें और श्रीमत् के दर्शनों की पूरि अभिलाषा लग रही है

अजमेर या नया नगर जरूर हाज़र होता परन्तु कारण से कर हाजर नहिं हो सका कृपा कर जलदी दर्शन दिलावें और अरज है कि पहले ज्यो अरज मालूम की थी उस पहले बहुत अरसे

तक विचार कर के पीछे मालुम की थी और जब तक भी विचारने से वो ही विचार दुरस्त है और यह भी विचार योग्य है कि इस कार्य्य के होने से ज्यो २ कि सत्यवादि हैं उनका बहुत उपकार होगा इसलिये जरूर जहां तक बन सके इस काम के वासते ख्याल फरमाना चाहिये और यहां का कोइ कार्य्य हो सो कृपा कर लिखावें संवत् १९३९ ज्येष्ठ शुदि ९

(४)

॥ ॐ ॥

॥ श्रीमति ॥ पाषंड मतखंडन सत्सिद्धांत मार्तंड वादींद्रवारण पंचानन सकल विद्वज्जन कमल कुल प्रकाशमार्तंड मूर्त्ति स्वप्रताप कृत दिग्विजय श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामि महाराजाय परमगुरवे नमस्तेऽस्तु भूयाऽनंतस्य आत्याश्चर्यों की यह विज्ञप्ति विदित होवें कि महाराज यांहां साहेपुराधीशों को क्षात्रशाला की आज्ञा फरमाई थी सो तो आजतक गोलमाल पोलपाल हो रही हैं यां हां भैरव चेत्रपाल डाकिनीत्यादिक का ज्यो भात्र आणा था उनकुं तो जूत्यों से पीटवा के कैद कर दीया है फिर अखबार लिखा के बाद छोडदीया सो दो सो दश ग्रामों में कोइ निभावन आणावेंगे उर आप के चरणपंकजों की इच्छा करणे वाले ज्यो में हां जिन परें शुभ दृष्टि रख्य करें उर परमेश्वर हमारी आशा को पूर्ण करें कि कब यांहां आर्य-समाज होवें उर श्रीयुत ठाकुर साब जुवारसिंह जी से आज्ञा फरमा दीजिये आप सो हमारे उपर सुदृष्टि रख्या करें उर महाराज यांहां अग्निहोत्र के होने से सर्व लोगों को बडा आनंद आया अग्निहोत्रादि कार्य आप साहेपुराधीशों को फरमाया था

सो तो किनेनेक कार्य हो गये हैं परंतु छात्रशाला होने का कार्य आज तक हुआ नहिं सो अब आप छात्रशाला जलंदी से हो जाये ऐसी आज्ञा राजाधिराज में लिख देवे इति भावार्थः अबै हम आपका शुभ पत्र की अभिलाषा करते हैं सो कृपा पात्रों पे कृपा कर पत्र भेजै पंडित रामनिवास जी की हवेली पत्र लिख्या बिहारीलाल उर हम्मीरशर्मानें संवत १९५० मिति आषाढ़ बदि १ गुरौ अथमोहाय पुरोम्व्यनगरात् जैनं मतानुसारिसाधु बृद्धिचंद्रोस्यपस्यं प्रणामत्तिं मेत्रधारय ममोपरि मदै कृपालुभव त्वंतमहंशं विद्वंज्जनानां कृपया मतमहंश ल्पबुद्धीनां जनानां परमहर्षी जायते अतः कारणात् मयि सदा कृपा रक्षणीया यतः सुराणांपतिर्न्को गणानांपतिः कः स चंडीसुनस्य प्रबोहीसर्वैकः मुकुंदस्य पत्नी सदा लंकरी का तदाधाक्रन्यैश्वरंपासुभोत्रंः १ आप बडेमहात्मा पुरुष हो सद्धर्मके रूपक हो पुरुषार्थ के स्वरूपक हो सद्धर्म के दीपक हो पाषंडमत के जीपक हो आप के दर्शण की हमारे लालसा बहोत है कृपा कर पत्र पाछा भेजिये ।

(५)

॥ ओ३म् ॥

!! सिद्ध श्री जोधपुर शुभ स्थाने सर्व शुभ ओपमा सकल गुण निधान सर्व शास्त्र संपन्न श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य वर्य्य त्याद्यनेक गुण सम्प्रद्धिराजमान श्रीमद्वेद विहिता चार धर्म निरूपक श्रीमत् स्वामी जी महाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज योग्य मसूदा से द्विवेदी छगनलाल का अनेकधा नमस्ते मालूम होवे अत्र कुशलमस्ति तत्रास्त्वेवं अपरंच पत्र मनकरण का आया जीस्में लिखा कि श्रीमन् ने यह फरमाया है वहां आके बंदोबस्त उत्तर का किया जावेगा सो अरज है की श्रीमत का यह खयाल एक तरफ के वास्ते बहुत ठीक चाहिये जैसा है परन्तु मेरे वास्ते बिलकुल ठीक नहीं कारण यहां पधार के मेरे वास्ते तजवीज फरमानां जैसी के चाहिये वैसी न होगी में यह चाहता हूँ की कृपा कर मेरे वास्ते जीतनी जलदी हो सके तजवीज पका कर के साथ फरमावें और फेर मेरे कुं लिखें और फेर श्री हजूर स्हाब कों भी लीखें की कइ कारणों से इस्का चित्त वहां कम लगता है इस लियें आप इस्कों आज्ञा दें तो यह दुसरी जगे की इस्की तजवीज की

गई है गुजारा करे और हम दोनुं के वास्ते अच्छा चाहते हैं आप के भी हरज न हो और यह भी आराम पावे इस वासते मुनासिब हो सो जवाब लीखे और में भी यह अरज करूं की मुझे यहां तकलीफ है जीस्में कितनाक ऐसी भी हैं सो श्री हजूर स्हाब से भी रफै नहीं हो सकती इसलिये मेरी तजवीज फलानि जगे पे फरमाइ गई हैं और में उमेद रखता हुँ कि बनिस्बत् यहां के वहां आराम पाउंगा और मेरे वासते आराम का होना श्री हजूर स्हाब को भी मनजूर है इसलिये अरज है कि आज्ञा फरमा दिरावें तो मे वहां गुजारा करुं उमेद है कि फीर श्री हजूर साहाब राजी खुशी के साथ आज्ञा फरमा देवेंगे और ऐसा होने में उतर का ही मोमला ठीक रैवेगा और में यह कभी नहि चाहता की मेरे मालकों के कि जान की शुभ नजर से मेरी यह इज्जत हुइ और अच्छा खाता पीता पहनेतां हुं नुकसान हो और में आराम पाउं मेरी यह इच्छा है कि परमेश्वर मेरे कुं कुछ लायक करे तो मेरा जैसा कि बरतांव अब मेरे मालकों के साथ है वैसा ही बना रख्खुं बल्कि जियादा श्रीमत् को याद होगा कि कब से मेरा यह इरादा है जब श्रीमत् का विराजना काशीपुरी में था यह तुच्छ तब दर्शनों के वासते प्रयागराज में हाजर हुवा था फिर इस बार में सला ली थी और ओपमा भी श्रीमन् ने श्रीमान् जयपुराधीश ज्योकि उस वक्त में विद्यमान थे उनके लिये

लिखवाइ थी परंतु फीर मैं ने उस मामले में निहायत् बिचारे ही विच्वार में ढील कर दी सो दीन रात उसी ढील का पछतावा करता हुं कारण वैसे गुणग्राही महाराज अब मालूम नहि होते बहुत सी बातें उन में बुद्धिमानी की थीं यहां तक कि तारीफ पूरि २ नहि लिख सकता जहां तक विचार पहुंचता था सत्य की तरफ तवज्ज फरमाते थे और सत्यवादि मनुष्य के फीकर में रहा करते थे परंतु पास जैपुर में मैंने कइ दफे बहुत से पुरुषों से सुना कि जैसा वे चाहते थे वैसा मनुष्य उनकुं बड़ी तलाश पर भी नहिं मीला श्रीमत् अपनी तरफ ही बिचार फरमावें कि श्रीमत् ने उपकारार्थ कैसे कैसे परिश्रम पाये हजारहा बल्कि सुनने में आया लक्खहां रुपया पाठशाला आदि में खरच किया और बहुत २ परिश्रम पा के पास रख के बहुतों कुं पढ़ाया परंतु इतनां उपकार करने पर भी मनुष्य कैसे २ निकले सो अरज है कि श्रेष्ठ पुरुष मीलनां नीहायत मुशकिल है और श्रेष्ठ ही यथार्थ काम बनाते और तकलीफ पाने पर भी यथार्थ बात पर रहते हैं दूसरे जब श्रीमत् का बिराजनां परके यहां था तब बाग के बंगले में श्रीमान् योधपुराधीश परमोदाराचित्त अद्बितीय की प्रशंसा से इसी तुच्छ ने अरज की थी और सला ली की मेरा चित्त यहां कम लगता है इसलिये में एक अरजी वहां भेजनां चाहता हूँ फेर इस विषय में बातों हो कर श्रीमत् ने फरमाया कि

गुप्त भेज दो ओरों कुं मालूम न हो सो अर्ज है कि कितने अ से से मेरा चित्त व्याकुल और इसी फीकर में था कि कीसी नै कीसी तरह श्रीमन् का पधारनां जोधपुर हो जावे तो वहां का बंदोबस्त भी बंध जावे और इस तुच्छ के डामने भी कोइ तदबीर नीकले फेर श्रीमत् का पधारनां उदयपुर हो गया जब से तो पूरि सारी दिल में यही रही कि जीस तरह उदयपुर पधारनां हुआ है उसी तरह जोधपुर पधारनां हो सो अब परमेश्वर की कृपा से यह भी इच्छा पूरी हुइ कि पधारनां हो गया अब मेरे वास्ते बात की है और में तुच्छ बुद्धि श्रीमत् का हुं ऐसा और कोई वसीला या आजीविका नहीं कि जिस्से उपाय करके गुजारा चलाउं इसलिये जैसी कि म्हरबानि श्रीमन् की पहले से है वैसी ही बनी रख कर कृपा कर जरूर तजवीज बन सके जहां तक कोशिश कर के यथा योग्य जलदी ही फरमानां चाहिये पत्र जलदि में लिखा है भूल चूक हो तो माफ फरमावें और यहां लायक कार्य्य हो सो कृपा कर लिखावें।

संवत् १६३६ असाढ़ शुदि १—

(६)

॥ श्रोम् ॥

॥ सिद्ध श्री उदयपुर शुभ स्थाने सर्व शुभ श्रोपमा सकल गुण निधान सर्व शास्त्र संपन्न श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य वर्य्यत्व्यनेकगुण सम्पद्विराजमान श्रीमद्वेद विहिता चार धर्म्म निरूपक श्रीमत् स्वामी जी महाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दयानन्द सरस्वति जी महाराज योग्य मसूदा से द्विवेदी जगनलाल का अनेकधानमस्ते मालुम होवे अत्र कुशलमस्ति तत्रास्त्वेवं अपरंच यहां से पत्र आप कूं द्वितिय श्रावण शुदि २ कूं दिया था सो पहुंचा होगा और श्री हिजूर में आप का आशिर्वाद कहा और बाला की दवाई के वास्ते अरज की सो आप कूं पायलागन मालुम कराया है और बाला की दवाइयां इस माफक फरमाई सो मालुम होवे मेदा ऽ। पाव ऐरंडा का बीज ऽ। पाव अलसी ऽ। पाव सींगी मोहोरा ऽ- एक छटांक सुहागा ऽ- ऐक छटांक अंजीर ऽ- ऐक छटांक आंबी हलद ऽ- ऐक छटांक ऐल्या ऽ- ऐक छटांक कुचीला ऽ- ऐक छटांक नरकचूर ऽ- ऐक छटांक इन सब को पीस से शांमिल करके पुलटिस बना

लेवें और नारू के मुंह पर अजैपाल्या की टिकी लगावें मि मूंह के और जगह नहीं लग सकें क्योंकि और जगह लगने फफोला हो जाता है पीछे उस नारू के चौतर्फ कागज लगा मुंह खुला सा रख के फिर ऊपर लिखी दवायों का अंदाज माफ पुलटिस बना कर बांधना और दिन रात में दो दफ़े पुलटिस बांधना चाहिये नींब के पानी से धो २ कर पुलटिस बांधे जब तक कि आराम न हो और असें से आप का पत्र श्री हिज़ूर में नहीं आया सो भेजना चाहिये और श्री हिज़ूर साहिब ने गोरखार्थ के नमूने के वास्ते ताकीद फरमाई है सो कृपा करके जल्दी भेजना फरमावें और यहां सब तरह से आनंद है यहां लायक कोई कार्य हो सो और कृपा पत्र लिखनां फरमावें संवत् १९३६ द्वितीय श्रावण शुदि ९ भौमवार ॥ लिखतां महता राजमल का अनेकधानमस्ते मालुम होवे सुदृष्टि बनी रहे।

(७)

॥ ओम् ॥

॥ सिद्ध श्री जोधपुर शुभ स्थाने सर्व शुभ औपमा सकल गुण निधान सर्व शास्त्र संपन्न श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य वर्ण्याश्रमानेक गुण सम्पद्धि राजमान श्रीमद्वेद विहिता चार धर्म निरूपक श्रीमत स्वामी जी महाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज योग्य मैसूदा से द्विवेदी छगनलाल का अनेकधानमस्ते मालुम होवे अत्र कुशलमस्ति तत्रास्त्वेव अपरंच आज पत्र १ रजस्टी श्री हिजूर साहेबों के नाम और कृपा पत्र ऐक मेरे नाम आया जिस्में श्रीमत् के पधारने की बाबत में और सवारियों वगेरे के बंदोबस्त के लिये लिखा जिसमें चित्त को बहुत प्रसन्नता हुई श्री हिजूर साहब की बहुत अभिलाषा थी कि जलदी पधारे तो ठीक है सो परमेश्वर ने कृपा की सो अब श्रीमत् के दर्शन जलदी ही होवेंगे और श्रीमत् के लेखानुसार हाथी वगेरह सवारियें सवार व पैदल इस्टेशन नयेनगर पर मौजूद पावेंगे और प्रतिपदा के दिन ऐक आदमी खारची के इस्टेशन आ जावेगा और यहां सब तरह से प्रसन्नता है संवत् १९४० आश्विन कृष्णा ११

(८)

॥ श्रोम् ॥

॥ सिद्ध श्री जोधपुर शुभ स्थाने सर्व शुभ ओपमा सकल गुण निधान सर्व शास्त्र मंडन श्रीमन् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य मर्य्य त्याद्यनेकगुण सम्पन्नविराजमान श्रीमद्वेद विहित चार धर्म निरूपक श्रीमन् स्वामी जी महाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज योग्य मसूदा से द्विवेदी छगनलाल का अनेकधानमस्ते मालुम होवे अत्र कुशलमस्ति तत्रास्त्वेवं अपरंच कृपा पत्र श्रीमत् का आया जीस्में लिखा कि आश्विन वदी १३ को बर्षा बहुत हुइ इस्कारण अभी ८-७ दिन नही आना होगा और आने के पहले सूचना की जायगी आदि सो अरज है कि इस कृपा पत्र के आने से पहले ही सब तरह से हाथी रथ वगेरह सवारीयां सवारां और बाग में बीराजने का बंदोबस्त कर दीय्या गया था और मनकरण कों खरची के इस्टेसन् भेज दीया था सो आज दसबजे मनकरण यहां आय्या है और श्री हजूर साहबां के और हम सब के बहुत् उमंग लग रही थी की अब तो जलदी हि दर्शन होवेंगे सो फेर कमनसीबी से कछ देर हो गइ परमेश्वर से प्रार्थना है कि श्रीमन् के जलदी

ही दैर्शन करावे और दक्षायन् से चिठीयां अटरनी स्हाबै की
ओर इलहाबाद से मीस्टर कालवीन स्हाब की आइ हैं जीस्में
लिखा है कि फोरन् वास्त मशवरा के इलहाबाद आओ इसलिये
में आज वहां कु रवाने होउगा श्रीमत् पधारे जब श्री हजूर में
पत्र भेज देवें मो सब तरह से सवारीयों वगेरह का बंदोबस्त हो
जावेगा और में भी पनरा बीस दिन में यहां से हाजर हो
जाउगा वाकफीयत के वास्ते अरज मालूम की है संवत् १६४०
आश्विन शुदी ४

(६)

ॐ नमः सच्चिदानंद मूर्त्तये

॥ स्वस्ति श्री सकल गुणालंकृत सर्व शास्त्रार्थ तत्त्वज्ञ सत्यधर्मोपदेशानेक पाखंडमतांध ज्ञान दृष्टि प्रद विद्वज्जनवरिष्ठ परिव्राजकवर्य श्रीमतां स्वामि दयानंद सरस्वतीनां पाद पीठेषु परम शिष्ययो र्नित्यं भवत्पादपंकजमकरंदाभिलाषुकयोरार्य सद्धर्मोपदर्शनेन निरस्तभ्रमांध कारयो र्बालक पन्नालाल छगनलाल शर्मणो र्नमति ततो विज्ञ संतुतराम् शमत्रतत्रास्त्वपरंच निम्न लिखितानि पुस्तकानि सद्रूपं प्रेषणीयानि मूल्यं चैतेषां मनिआर्डर द्वारेण वाभवल्लेखानुसारेण, भवत्समीपे प्रेषयिष्यावः १ सत्यार्थप्रकाशो पुन श्शोधितः २ संस्कारविधिः ३ यजुर्वेदभाष्य आर्य्योपदेशरत्नमाला ४ व्यवहारभानुः ५ काशी शास्त्रार्थ. ६ संध्योपासनं ७ अष्टाध्यायी भवद्रचित वृत्ति समेता किं च अन्यान्यपि लघु मूल्यानि लाभकारकाणिभवेयुस्तेषां यानि श्रेष्ठतराणि तानि प्रेषणीयानि अपरंच यत्रकुत्र विद्वंत आजामाना भवंति तस्मात्स्थानात् पत्रं प्रेषणीयं यतो वयं स्वशंकां पत्र द्वारेण निवारयामो वा दर्शनार्थिनो भवत्समीपे आगच्छेम किं च अस्मिन्पत्रे यदनुचितं भवेत्तत्क्षंतव्यमिति शुभं भूयात्

हस्ताक्षर ब्राह्मण छगनलाल श्री माली दरबार स्कूल संस्कृत द्वितीयाध्यापक यत्पत्रं भवद्भिः प्रेषणीयं तद्दरबार स्कूल नाम्नि नियत स्थाने प्रेषणीयं ॥

(अनुवाद)

सच्चिदानन्द स्वरूप को नमस्कार है

कल्याण हो। सब गुणों से युक्त, सब शास्त्रों के अर्थों को जानने वाले, सत्य धर्म के उपदेशक, अनेक पाखण्डीमतों द्वारा अन्धे को ज्ञानदृष्टि देने वाले, विद्वानों में श्रेष्ठ, संन्यासिप्रवर श्री स्वामि दयानन्द सरस्वती के चरण कमलों में, परमशिष्य नित्य आप के चरणकमलों के मकरन्द रस को चाहने वाले, तथा आर्य सत्य धर्म के उपदेश से नष्ट हो गया है भ्रम रूपी अन्धकार जिनका ऐसे ब्राह्मण पन्नालाल और छगनलाल शर्म्मा के नमस्कार हों। यहां कुशल है और वहां भी हो। इस के अलावा कृपा करके निम्न लिखित पुस्तकें भेज दें, और इनका मूल्य मनीआर्डर द्वारा या आप के लेख के अनुसार आप के पास भेज देंगे।

(१) सत्यार्थप्रकाश (दुबारा संशोधित)

(२) संस्कारविधि.

(३) यजुर्वेदभाष्य.

(४) आर्य्योपदेश रत्नमाला.

(५) व्यवहारभानु.

(६) काशी शास्त्रार्थ

(७) सन्ध्योपासना.

(८) अष्टाध्यायी (आपकी बनाई हुई वृत्ति सहित)

इस के अतिरिक्त और जो कोई थोड़े मूल्य वाली और लाभप्रद पुस्तकें हो उनमें से श्रेष्ठतम भेज दें ।

किंच, जहां कहीं भी आप विराजमान हों वहां से पत्र अवश्य भेजें । जिस से हम अपनी शंका को पत्र द्वारा निवारण कर सकें । अथवा दर्शनार्थी होने पर आपके पास आवें । इस पत्र में जो कुछ अनुचित हो उसके लिये क्षमा करें । कल्याण हो ।

हस्ताक्षर ब्राह्मण छगनलाल

श्री माली दरबार स्कूल संस्कृत द्वितीय अध्यापक

जो कोई पत्र आपको भेजना हो वह दरबार स्कूल नामक नियत स्थान पर भेजें ।

मसूदा (ज़िला अजमेर) के रावजी बहादुर सिंह जी के पत्र

पूज्य पाद महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के नाम

१. ज्येष्ठ वदी ८ वि० सं० १६३६ का लिखा हुआ

२. भाद्रपद शुक्ला वि० सं० १६३६ का लिखा हुआ

३. ता० १६ अक्टूबर (?)

४. आश्विन शुक्ला १३ वि० सं० १६४०

५. कार्तिक वदी ७ वि० सं० १६४०

(१)

॥ श्री गोपाल जी ॥ श्री राम जी

सीध श्री जोधपुरे गढ माहर दुरंग सरब ओपमा बीराजमांन लायक स्वांमी जी माराज श्री ४ श्री दयानंद सरस्वती जी जोग्ये मसुदासु सेवग्ण बहादरसिंघ री पगे लागणो बंचावसी अठाका स्मं चार श्री जी का प्रताप सु भला है आपका सदा भला चाहीज आप म्हारे गणी बात छो आप स्वायं दुजी बात न्ही सदा कृपा म्हैर वांनगी रषावो छो जीसु वसेष रंपावसी अप्रंच कागद आपका आयो समंचार बाचा आप लीषी के रुपायेली का असटेसन से, षीरली का ही टिकट लिया था डीमलिये के मसुदा कुं अवेसिही जांणा होगा परंतु वांहां सवारी मौजुद न्ही पाई तब अजमेर कुं आंणा होगया अब फेर डीस्र आंणा होगा जब मसुदे आणा हो गा सो अठासु तो स्वारी का बंदोबस्त मया अठै सबतरहै की तैईयारी करादीवी ही परंतु आदमां की बोहोत गलती रही के वो. असटेसन पर हाजर बषत रेल के आंन पर नै रहे बडे अपसोष की बात है के आप से मीलना न्ही हुवा अब परमेश्वर वो दीन जलदी करै सो आपसे मीलना होवैगा ओर आप आछां रहे सी डीलां कु सादन रषायसी ओर

अठै सारी अठै कुमी छै अठा की तरफ सुं कुसी रषावसी और अठा सारु काम काजे हवै सु लीषावसी अठै आपकी हुकम छै. सम १९३६ का ज्येष्ठ वैद ८

मारी पगे लागणो मालम होमी आप बडा प्रसन्न रहसी डीलां को सागन रपामी बडा अपसोच है की आपके द्रमण मही हुये अब दो तीन महीने पर द्रमण नही हुय अब दो तीन महीने पर द्रमण होंगे दो बरस हुये द्रसणां की पुरी अबलेषा लाग रही थी ईस्वर आधीन फीर दो मीनीना की देर हुट इन दीनां मंगे सरदी से जुर की बडी आसलेसा रही नही तो ब्यावर मा मीलना अबां इस्वे की कृपा से सरीर अच्छो है आप कमी सर्ग की चीनना नही कीजिये मैं पैयेल करता हु आप बंडे प्रसन्न होगे ईस्वे आको प्रसन्न रष जोधपुर पुहुच कर कृपा पत्र दीजिये

B. D. S

(२)

॥ ओ३म् ॥

सिद्ध श्री उदयपुर शुभ स्थाने महात्मा स्वामी जी महाराज श्री दयानन्द सरस्वती जी योग्य मसूदा से महाराज श्री बहादुरसिंह जी लीखता पगे लागणो बंचावसी अठा का समाचार श्री जी का प्रताप सूं भला है आप का सदा भला चाहिये आप माहरे धणी बात छो आप सिवाय दुजी बात नही सदा कृपा महरबांनगी रखावो छो जीसू बिशेष रखावसी अपरंच चीट्ठी आप की दुतीक श्रावण शुदि १२ की लिखी आई बड़ा आनन्द हुआ और बहुत दिनों से आप के पास पत्र यहां से नहीं पहुंचा सो कारण यह है कि आप का चीत्तौड़ मे बिराजने का हाल मालुम नही था और अगहन में लाठ साहिब बहादुर की तशरीफ फरमाने की अजमेर मे हुई इस लिये हमारा जाना वास्ते मुलाक़ात के अजमेर हुवा वहां आप की मालुम हुई कि आप चीत्तौड़ में बिराजमान है परन्तु वहां फुरसत कम रही इस लिये पत्र नही दिया गया फिर अजमेर से लौट कर आना हुवा तो दवे छगनलाल जी अजमेर ही थे इस लिये चिट्ठी नहीं दी गई कि आजावे तो गो रक्षा के प्रबंध की बाबत कि जो

विचार श्रीथे समाज अजमेर में किया गया था लिखा जावे फिर
च्यार पाच दिन बाद बहुत सखित बीमार रह गये सो पांछे दो
महीनों बाद परमेश्वर की कृपा से खुशी हुई फिर कई काम हो
गये और रवे अगनलाल जी को भी बमबब काम के फुरसत
कम रही और वैशाख मे फिर भी बीमारी हो गई सो निहायत
सख्त बीमारी पाई दो महीने तक फिर परमेश्वर ने कृपा की सो
कुशी हुई इस अरसे में आप की चिट्ठियें बम्बई वगैरह से आई
परन्तु ऐसे २ कारणों मे और काम की विशेषता से जवाब नहीं
भेजा गया सो कृपा करके क्षमा करेंगे और गौ रक्षा के बाबत पत्र
भेजे सो पोहोंचे और पहिले आपने बंगाली बाबू के वास्ते लिखा
था सो आप यहां पधारेंगे जब विचार कर लिया जावेगा और
वहां गोरक्षा के विषय क्या प्रबंध हुआ सो कृपा करके लिखियें
और सोलह बत्तीस जितने ठिकाने राज मेवाड़ में है मारफत
राज के सब ठिकाने और ठिकानों की रय्यत वा खालसाही
गांवों के हाकिम उगे रह से खालसाही रय्यत के इस विषय
में दस्तखत हो जाना ठीक है खयाल किया जाता है कि
मेवाड़ में कई लाख दस्तखत हो जावेंगे और परमेश्वर की कृपा
से आप बहुत खुश होंगे व परमेश्वर सदैव आप को प्रसन्न
रक्खे सो संसार का बहुत सा उपकार हुवा और होवे और
बाला किसके निकला है सो लिखिये नीम के पत्ते उकाल कर

फिर थोड़ा सा गरम रहै तब उस पानी से भाले के मूह को धाणा चाहिये और खान मे हीग न्याख नी चाहियै और यहा परमेश्वर की कृपा से सब तरह से खरियत है गोरक्षा के विषय मे प्रबंध जल्दी किया जायगा और वहा कितने दिन ठहरना होगा और यहा कब पधारना होगा सो कृपा करके लिखिये और बंगला के वास्ते जो आगे कागज छगनलाल जी के मे खवाइ लिखाई थी उस पुलस्मि में हीग भी डालना चाहिये और व्याख्यान भी वहा होत होगे और महलो मे भी कभी व्याख्यान हुवा या नहीं और आपने जो छगनलाल जी की चिट्ठी मे लिखा कि महाराज गजसिह जी और उनके भाई भी व्याख्यान मे आये सो बडी खुशी की बात है और यहा का जो कोई कार्य हो सो लिखे सम्वत १९३६ के मिति भाद्रपद शुदि ६ सोमवार ता० १३ सितबर सन् १८८० ई०

B D S.

म्हारो पग लागणो मालम हामी आप की कृपा है जसी बणी रहै अब सीघ्र दर्शन दीजीयै ।

BDS

end d

(३)

॥ श्री ॥

खार्चा

मिष श्री सुवस्थाने सब ओपमा विराजमान लायक श्री स्वामी जी महाराज श्री ४ श्री दयानंद सरस्वती जी जोग्य मसूदा सू सेवकरा वहादुरसिंह जी लिखतं पगे लागनो वंचावना अठा का समाचार श्री जी का प्रताप से भला है आपके सदा भला चाहिये अपरच मुझ आपकी बीमारी का हाल सुन कर बहुत अफसोस हुआ और जब तक आपकी खुश तबियत का हाल मालूम ना हो बहुत फिकर रहेगा मैने प्रताप सिंह जी मैय एक सरदार और दो खिदमतदार के रवाने किया है कि वे आप के काम के वास्ते हाजिर रहे और आपकी तब्यित के हाल से खबर देते रहें

मैने सुना है कि आप का इरादा आबू की तरफ जाने का है। लेकिन मेरी राह में आबू का जाना अच्छा नहीं है क्यों कि आबू का पानी तंदुरुस्त आदमी के लिये भी अच्छा नही है और वहा की आब हवा भी खराब है मैने कई अंगरेजों और हुन्दुस्तानियों से जो आबू रह आये है इस बात की अच्छी

तरह तहकीक की है इस लिये आप वगा आभू के नये नगर चले आवें वहा बंगला और एक हिन्दुस्तानी कायत जो वड़ा डाक्टर है है त्यार है जो दो सो की तलब पाता है अगा आप वहा आ जावे तो मै खुद भी वहां रहूंगा और अगर गोरे डाक्टरो की ज़रुरत होगी तो उन को भी बुला सकूंगा और न्यानगर की हवा और पानी बहुत अच्छा है इस लिये में यकीन करता हूं कि आप मेरी अर्ज कबूल करेंगे और बाबू बिहारी लाल जी वही है और उन को अच्छी तरह कह दिया है ता १९ अक्टूबर

B.D.S.

मारो पगे लागणो मालम होसी जब तक धुंसी की षबर नही आयेगी तब तक बडो सोच रहेगा नये सरको जरूर आ जावेगे जीयादा नही लीष सकता

B.D.S.

(४)

॥ श्री गोपाल जी ॥ श्रीराम जी

सीध श्री जोधपुर गढ माहा दुरंग सरब श्रोपमां वीराजमांनै लायके, स्वामी जी माराज श्री ४ श्री दयांनंद सरस्वती जी जोग्य मसुदा सु सेवकश्र बाहादर सींघ री पगे लागणो वंचावसी श्रठा का समांचार श्री जी का प्रताप सु भला है श्रापका स्दा भला चाही जे श्राप मांहारै गणी बात छो श्राप सुखाय्ये दुजी बात नही स्दा क्रपा महरवांनगी रषावो छो जीसुं वसेष रषावसी श्रप्रंचा कागद श्रापको श्राय्यो समंचार बांचां कुसी हुही श्रोर श्राप श्रठै पधारबा कै वासतै श्रासोज सुद १ की लषी छी सो हनोज श्रापकी पधारबो हुवों नही ही वास्तै लीखबा मै श्राव है सो श्रापकी श्रठै पधारबो कब होसी सो लीषावसी श्रोर श्राप बठ डीला को सादन रषावसी श्रोर श्रठा सारु काम काज हुवसी लीषावसी श्रठै श्रापको हुकम छै

१६४० का शुदी० श्रासोज सुद १३ दीतवार

मारो पगे लागणो मालम होसी श्राप गणा प्रस्न रहसी क्रपा महरवानी है जसी रषावसी सरीर को सदन रषावसी श्रबां जलदी द्रसण देसी वायदा सु भी दन जीयादा नीकल गया है द्रसणां की पुरी श्रबलेषा लाग रही है छलेसर का चवाण सरदारनां भी लेना पदारसी मां पाछा श्राबा को तो वायदो करयोहै

(५)

॥ श्री गोपाल जी ॥ श्रीराम जी

सीध श्री आबू जी सुभ स्थाने सरब ओपमा· बीराज मांनै लायक स्वामी जी माराज श्री ५ श्री दयानंद सुरस्वती जी जोग्य मसुदा सुं सेवकैसु बाहादर सीच की पगे लागणो वंचज्यो अठा का समाचार श्री जी का प्रताप सु भला छै आप का स्दा भला चाही जे आप मांहारै गणी बात छो आप सुवाये दुजी बात नही स्द्य क्रपा महरबांनगी रषावो छो जीसुं वसेष रषावसी अप्रंच ॥ तारीख २१ को बाबू बीहारीलाल की अर्जी सैवा मे ठाकरां की अरज से मालुम हुई जीमसे आप की षेद का हाल सुणकर नीहाय्यत अपसोच हो रहा है ई वास्तै आपनै लीषवामै आवृ है सो आप की कुसी का समाचार जलदी भीजा वसी और पहली का पत्र मैं भी आपनै लीषी छीकै आप आबु को न्ही पधारे और अब भी आप से मेरी य्हेही अरज है कि आप जलदी आबू से नयेनगर पधारे मे षय्याल करता हु कि आप ई अरज नै कबुल कर हर जलदी नयेनगर पधार जावंगे उठे के आप स्व हीनदुस्तांनीय्यो से दरीय्यांफत कर लीजिय्येगा कै आभु का पांनी वै आब हवा नीहाय्यत षराब है ओर जो ठीक देष के

स्व आभु कु गय्या है वो अठु सू बीमार पड़ जाता है तो बीमारी के हाल मै नहाय्यत षराब है और मै नै नय्येनगर मां रहणां ईस्वास्तै मुनास्व समजा कि वाहा डाक्टर षीन अच्छा है और जो डाक्टर की वा दवाय्यां की जरुरत होगी वो बजरीय्ये रेल सै जलदी सै आ जावगी ओर वाहां की आबहवा बी वोत अच्छी है ओर बंगले हर पालकी का बाबु बीहारीलाल की मारफत बंदोवस्त कर दीय्यां गय्यां है ओर जबै आप वाहा सै पधार तो य्येक रोज पेसतर तार मै षबर षरवा के असटेसन पर भेज दे ओर केपना लीख दे कि षरवा के ईसटेसन पर पहुच कर मसुदे पोचै राव साहेब बाहादुर सींघ जी के पास जाके तय्यांहा सै नय्येनगर को आजाव ओर य्येक तार बाबु बीहारीलाल कु द देवे के वो पालकी वगेरे बंगला का बदोवस्त करु रषे और अठा सारु काम काज हव सो लीषावसी अठै आपकी हकम छ

१९४० श काती ब्दी ७

मारी पगे लागणो मालम होसी आपकी षेद की सुणी जी की बीड़ी चीन हो रही है सो जलदी सु नये नगर पदार जासी जीयादा कांई लषी जावै उठा को पाणी गणो षराब है—

प्रताप सीघ जी मारी जै मारी जै चुत्रभुजी की वांचज्यो और सुवामी जी माहाज को पुगे जावणो राषज्यो सारान कह

दीओ काम काज मां आछी तराखे स्वामी जी माहाराज ना जरुर आठ पदराजयो ।

B D.S.

प्रताप सीव जी तार दे दीजीं मां षाहुजु पुराक वगेरे प्र पडे जीमां षरच आपणो करजी ओर अठा सुतार वगेरे उठ भेजां तो पतो उठा की लषांसु—

B.D S.

स्वर्गीय जोधपुर नरेश महाराजा सर जसवंतसिंह जी

और

स्वर्गीय महर्षि पूज्यपाद स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का

पत्र व्यवहार

१. जनरल सर प्रतापसिंह जी का पत्र आषाढ ३ सं० १९३९ वि०

२. राव राजा तेजसिंह जी का पत्र आषाढ शुक्ला १२ सं० १९३९ वि०

३. राव राजा तेजसिंह जी का पत्र आषाढ वदी १३ सं० १९४० वि०

स्वामी जी के पत्र जोधपुर नरेश महाराजा जसवत सिंह जी के नाम

१. प्रसिद्ध समाचार बिना मिति का

२. गुप्त समाचार बिना मिति का

३. राव राजा तेजसिंह जी के नाम पत्र बिना मिति का

(१)

॥ श्री ॥

श्री दयानन्द सरस्वती जी आपकी चीटी अबी मैरे पस पंची वौ मेंने देषी औ बौत षुस हुवा और जौ जौ बाते आपने मेरे कु लीषा उसका जाब मेने तेजसिंघ जी के साथ दीया है आप कौ वाकीफ करेगै और परमु मे अकीन है के जरूर मीलुगा स० १९३९ गमी० आ० ब्द ३

प्रतापसिंघ

(२)

॥ श्री ॥

दयानंनद सरस्वती जी माहाराजः—

॥ श्री श्री १०४ श्री श्री सांमी भी माहाराज से मैरी दंवत पांहचे तथा आ पांनी कै सबब से की कीचड कादा भी बौत है नै देषने पीरने मै भो दीकत हौगी छांटे वगैरे लगैगे ईस लीयै मेने मुनासब नही समन्ध सौ आप आज नही पदारै ईस की मनै भी दरबार से भी और माराज श्री प्रतापसिंघ जी साहब से पुछ लीया है सौ फुरमाया के बौत मुनासीब है आर आप कु बी तकलीफ हौती ईस लीयै ईतलान लीषा है फकत

१९३६ रा० अ० शु १२

Tej Singh

(३)

॥ श्रीः ॥

॥ श्री माहाराजी के पास पांचै आप का पतर आग्या और आपने लीषा सौ बौत ठीक है प्र रात कु बौत गरमी थी सौ सब रात मुज कौ नीद नही आई सौ फजर कौ चार बजे मै उट के बाहर आया तौ उस वषत कौई आदमी व कांम न था तौ मै हाथ मु धौ के फीर मे पीलंग पर लैट गया तौ जागता था सौया नही कीसी नै मैरी जुट सीकायत करी है माफ कीजीयै और हफतै मै यै दीन मैनै छुटी का अपनै गर के कांम मै रषा है फजुल नही जानै दुगा आप बैफीकर रहै और मेरा बौत बौत ददनत मालम हो । T. S.

Tej Singh

स. १९४० आ० व्द० १३

नं० ७०

महाराजे प्रताप सिंह वा तेजसिंह

(जोधपुर)

(१)

ओम्

॥ प्रसिद्ध समा(चा)र ॥

श्री मद्राज राजेश्वर महाराजाधिराज श्री जोधपुरेश आनंदित रहो—अब मैं यहां बीस पच्चीस दिन रहना चाहता हूं यदि कोई नैमित्तिक प्रतिबन्ध न होगा। मैंने यह समझा है कि यहां आकर आपका धन व्यय व्यर्थ कराया क्योंकि मुझ से आपका उपकार कुछ भी नहीं हुआ और आप की ओर से मेरी सेवा यथोचित होती रही। जब श्रीमान गुण ज्ञाता हैं इसी लिये जब जब मुझ को अवकाश मिलता है तब २ पत्र द्वारा कुछ निवेदन कर देता हू उन मेरे निवेदन को देख सुन कर आप प्रसन्न होते हैं इसी लिये तीसरी वार लेख करने के लिये मुझ को समय मिला ॥

१—जैसा राजकार्य आज कल आप कर रहे हैं वैसा ही यावत् शरीर रहे तावत् करते रहियेगा इस को जहां तक हो सके वहां तक अधिक २ करते जावें कभी न छोड़ें क्योंकि न्याय से राज्य का पालन करना ही आप लोगों का परम धर्म है ॥

२—आप अपने पुत्र जो कि महाज कुमार हैं उनको खाने पीने आदि से संकोचित मत रक्खियेगा सदा पाव भर गाय के दूध में मासा भरे सोंठ को मिला छान थोड़ा सा गरम कर ठंढा करके ब्राह्मी औषधी के साथ मिलवाते रहिये जिस से महाराज कुमार के बुद्धि बल पराक्रम आयु और विद्या बढती रहे ॥

३—जो एक रत्न आप के बन्धु महाराजे प्रतापसिंह जी हैं उन को कभी राज्य कार्य से पृथक् मत कीजियेगा क्योंकि ऐसा पुरुष आप और राज का हितैषी दूसरा कोई नही दीखता ॥

४—इस देश में वर्षा प्रायः न्यून होती है इस के लिये यदि मेरे कहे अनुसार एक २ वर्ष में १००००) दश हजार रुपयों का घृतादि का नित्य प्रति और वर्षा काल मे चार महीने तक अधिक होम करावेंगे वैसे प्रति वर्ष होता रहै तो सम्भव है कि देश में रोग न्यून और वर्षा अधिक हुआ करै ॥

५—आप में औदार्यादि प्रशंसनीय बहुत गुण हैं इनको यदि राजनीति में प्रवर्त रक्खे तो देश का सौभाग्य और श्री महाशयों की पृथिवी भर में उत्तम कीर्ति फैल जावे ॥

। गुप्त समाचार ।

१—जो २ श्रीमानों के प्रशंसनीय गुण कर्म स्वभाव हैं उन के कलंक नीचे लिखे हुए काम हैं ॥

२—एक वेश्या से जो कि नन्ही कहाती है उस से प्रेम उसका अधिक संग और अनेक पत्नियों से न्यून प्रेम रखना आप जैसे महाराजों को सर्वथा अयोग्य है।

३—जैसे रुइके कुत्ते के दांत वाला रस लगने से उसका दोष छूटना अति कठिन है वैसे ही वेश्या मद्यपान चौपड कन कौवे आदि में व्यर्थ काल खोना और खुशामदी लोगों का संग राजाओं के लिये महा विघ्न कारक धन आयु कीर्ति और राज्य के नाश करने वाले होते हैं मुझको बडा आश्चर्य है कि आप बडे बुद्धिमान् और शौर्यादि गुण युक्त होकर इनसे पृथक् क्यों नहीं होते ॥

४—जैसे आप इस नन्ही रंडी के घर को जाते उसकी माता आदि रोगिणी को देखते हैं और जैसे एक किसी अपने नौकर मुसलमान के लड़के के विवाह में घोड़े की लगाम पकड़ के पैदल चले थे वैसा निन्दा कारक काम करना आपको शोभा कभी नहीं देते किन्तु इनके बदले जैसे महता विजयसिंह जी बिमार थे जाकर देखते और जो अपने

मारवाड़ के सरदार और भाई बेटे हैं जो कि राजा और राज्य की उन्नती चाहने वाले हों उनके पुत्रों के विवाह में पैदल चलना आदि करते रहैं तो सर्वदा प्रशंसा लाभ और उन्नती होती रहै ॥

५—जब २ मैं किसी के मुख से अथवा समाचार पत्रों में आप लोगों की निन्दा सुनता वा देखता हूं तब २ मुझको बडा शोक होता है यदि आप लोग ऐसे निन्दा के काम न करें तो क्यों निन्दा होवे हम लोगों को अंगरेज आदि के सामने शरमिन्दा क्यों होना पड़े बड़े महाराज जो कि श्रीमानों के पिता जी थे यदि वे बहु विवाह पास वान् और वेश्या आदि को न रखते तो आप लोग भी कभी ऐसा काम न करते ऐसे ही जैसे आप लोगों का व्यवहार महाराज कुरमार आदि देखेंगे इन्हीं में झुकेंगे क्यों कि मनुष्य को दूसरे का गुण लेना कठिन और दोष लेना सहज है.

६—आप महाराज कुमार की शिक्षा के लिये किसी मसलमान वा ईसाई को मत रखियेगा नहीं तो महाराज कुमार भी इन के दोष सीख लेंगे और आप के सनातन राजनीति को न सीखेंगे न वेदोक्त धर्म की ओर उनकी निष्ठा होगी

क्योंकि बाल्य वस्था में जैसा उपदेश होता है वही दृढ हो जाता है उसका छूटना दुर्घट है.

७—महाराज कुमार के संस्कार सब वेदोक्त कराइयेगा २५ वर्ष तक ब्रह्मचारी रख के प्रथम देवनागरी भाषा और पुनः संस्कृत विद्या जो कि सनातन आर्ष ग्रन्थ हैं जिनके पढने में परिश्रम और समय कम होवे और महालाभ प्राप्त हो इन दोनों को पढे पश्चात् यदि समय हो तो अंगरेजी भी जो कि ग्रामर और फिलासफी के ग्रन्थ हैं पढाने चाहियें ॥

८—जैसे आपने गणेशपुरी आदि जो कि केवल बुरी चाल चलन सिखलाने हारे हैं उनका दुराचार देखके उन का सदा त्याग रक्खा है वैसे वेश्या आदि मीठे ठगों से भी पृथक आप क्यों नहीं रहते जैसे मुसलमान और ईसाई आदि के टोपी पैजामा मुंडे जूते कोट पतलून टोपि आदि के धारण से आप अपने उत्तम विचार से पृथक रहे हैं वैसे ही हजारह गुणों में वेश्या संग आदि में आप अपने अमूल्य समय को मत खोवे आपका शरीर ऐसे क्षुद्र काम और विषयासक्ति और आराम के लिये नहीं है किन्तु बड़े परिश्रम न्याय पुरुषार्थ से लाखह मनुष्यों के हितार्थ

आप लोगों का शरीर है देखिये आप मनुस्मृति के सप्तम अष्टम और नवम अध्यायों में कि राजाओं के लिये क्या २ कर्तव्य और अकर्तव्य लिखा है मुझ को निश्चय है कि आप इन कड़ी और कल्याण कारक बातों को सुन कर प्रसन्न होंगे ॥ अलम विस्तरेण महामान्य वर्येषु ॥

(२)

ओ३म्

स्वस्ति श्री मद्राज राजेश्वर महाराजाऽधिराज वर्य्येभ्यः
श्रीमद्योधपुराऽधिपतिभ्यो मत्प्रेरिता आशिषः सन्तु
(गुप्त समाचार)

पुरुषाः सुलभा राजन्सततं प्रियवादिन । अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥ १ ॥ विदुर्नीति—हे धृतराष्ट्र इस जगत में बहुत पुरुष सुलभ अर्थात् सुख से प्राप्त होते हैं जो सदा दूसरे की खुशामद की बातें करके अपना मत(ल)ब सिद्ध करते परन्तु सुनने में अप्रिय और परिणाम में कल्याण कारी वचन का उपदेष्टा और सुनने वाला ये दोनों पुरुष अति दुर्लभ हैं। १। (यथा योधृषु वर्त्तमानो जयः पराजयश्च राजनि व्यपदिश्यते) महाभाष्य— जैसे सेना की हार वा जीत राजा की ही हार और जीत मानी जाती है वैसा ही श्रीमानों को अवश्य समझना चाहिये (विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेमृतोपमम् । परिणामे विषमिव तद्राजसमुदाहृतम् ॥ गीता—जो विषय और इन्द्रियों के संयोग से आदि में अमृत रुप सुख प्रतीत होता है वही परिणाम अर्थात् पश्चात् विष के तुल्य होकर महादुःख

दायक हो जता है ॥ आप स्वयं बुद्धिमान् हैं इतने हीं से बहुत समझ लेंगे। सौभाग्य की बात है कि आप में अनेक प्रशंसनीय शुभ गुण आरोग्य और राज्यैश्वर्य्य सम्पन्नता वर्त्तमान है परन्तु शोक की बात है कि ऐसे आप बुद्धिमान होके नीचे लिखी हुई थोड़ी सी बातों में न जाने क्यों कर प्रवर्त्तमान रहते हैं वे ये हैं यदि आप मद्यपान वेश्या संग पतंग उड़ाना घुड़ दौड़ आदि धून नहीं छोड़ते और राज्य पालन कर्म में कम से कम छः घंटा परिश्रम और महालक्ष्मीरूप राजकन्या स्वपत्नियों से अधिक प्रेम नहीं करते हैं इत्यादि शोचनीय बातें आप में हैं आप निश्चय समझिये कि जितने आप के आधीन पुरुष कीर्ति वा निन्दा का काम करेंगे वह सब आप की ही पर गिने जायेंगे यदि आप स्वयं मद्य पानादि में प्रवृत्त न हों तो क्या कोई भी इन में आपको प्रवृत्त कर सकता है जो स्वार्थी खुशामदी हैं वे तो सदा यही चाहते हैं कि राजा प्रमाद में लगें तो हमारे सब प्रयोजन सिद्ध हो जायें परन्तु संसार में इन का नाम कोई भी न लेगा किन्तु (प्रधाना प्रधानयोः प्रधाने कार्य्ये सं प्रत्ययः) महाभाष्य— भलाई और बुराई प्रधान पुरुष के साथ लगती है गौण अर्थात अप्रधान के साथ नहीं (यद्यदा-चरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते) गीता—जैसा अच्छा वा बुरा आचरण श्रेष्ठ पुरुष कर्त्ता है वैसा

ही इतर जन करने लग जाते हैं और जिसका प्रमाण उत्तम पुरुष कर्त्ता है उसी का प्रमाण सब लोग करने लगते हैं अर्थात् (यथा राजा तथा प्रजाः) जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा भी होती है इस लिये प्रधान पुरुष बहुत विचार से उत्तम आचरण करे कि जिससे उसको संसार के बिगड़ने का अपराध न लगे बुद्धिमानों के सामने विशेष लेख करना उचित नही होता। अब मुझको यह बड़ा संदेह है कि जो आप जैसे दीर्घ जीवी न्याय कारी राजा बने रहें तो सब प्रजा का कल्याण होवे और जो मद्य पानादि कर्म हैं वे अवश्य आयु बुद्धि बल पराक्रम आरोग्यता कीर्ति धर्म अर्थ काम और मोक्ष तथा प्रजा के पुत्र-वत्पालना करने में परम विघ्न कारी हैं इस लिये मुझको निश्चय है कि आप मद्य पानादि दुष्कर्मों से पृथक् होके अपने समीपस्थों का यथावत्कल्याण करेंगे (इसका उत्तर आप जैसी इच्छा हो वैसे दीजिये मैं कड़ा उत्तर दूंगा तो स्वामी जी अप्रसन्न हो जायेंगे ऐसा ध्यान मत कीजिये मुझको निश्चय है कि आप निष्कपट और सत्यवादी हैं इस पर जैसा विचार होगा उत्तर यथावत् शीघ्र लिखेंगे यद्यपि यह प्रथम हीं पत्र आपके समीप भेजा जाता है तदपि यदि आगे आवश्यकता होगी तो मैं और आप जब समक्ष न हो सकेंगे तब पत्रों ही से यथोचित बात होंगी जैसा मैं आवश्यक कार्य करने वा पत्र के उत्तर देने

में क्षण मात्र विलंब नहीं करते वैसे श्रीमान भी करेंगे) यदि आप ही पूर्वोक्त निषिद्ध कर्म करने और विहित न करने में प्रवृत्त रहेंगे तो अन्य पुरुष सब आपके दृष्टान्त से वर्तेंगे जब तक मनुष्य के हाथ में सर्वाधिकार आरोग्यता उत्तम संग शुभ गुण कर्म स्वभाव होता है तब तक कोई भी विघ्न सुख नाशक नहीं खड़ा होता विघ्नों का निवारण बुद्धिमान प्रथम हीं करते हैं कि जब तक वे प्राप्त न हों नहीं तो बुद्धिमान और निर्बुद्धि में दूसरा क्या भेद है निर्बुद्धि लोग विघ्न के पूर्व कुछ भी ध्यान नहीं देते और विघ्न आये पश्चात् गभरा भी जाते हैं विद्वान लोग वैसे नहीं होते (यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् । तत्सुखं सात्विकं प्रोक्त मात्म बुद्धि प्रसादजम् ॥ गीता—जो ब्रह्मचर्यादि कर्मों का आचरण आदि में विषतुल्य दुःख प्रतीति होता है वही पश्चात् अमृत के सदृश विदित होता है वही आत्मा और बुद्धि को प्रसन्न करने वाला सुख है कि जो विद्या सुविचार सत संग और योगाभ्यासादि उत्तम कर्मों से प्राप्त होता है ॥ (जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः । तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः । १ । मनुस्मृतौ । जो विवाहित स्त्रियां पति माता पिता बन्धु और देवर आदि से दुःखित होके जिन घर वालों को शाप देती हैं वे जैसे किसी कुटुंब भर को विष दे के मारने से एक वार सब के सब मर जाते हैं वैसे उनके पति आदि

सब ओर से नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं। और (संतुष्टो भर्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च। यस्मिन्नेव कुले नित्य कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥ १ ॥) मनुस्मृतौ— अर्थ०—जिस कुल में स्त्री से पति और पति से स्त्री अच्छे प्रकार प्रसन्न रहती है उस कुल में निश्चय कल्याण अर्थात् आनन्द बढ़ता रहता है ॥ १ ॥ देखिये जैसे किसी की स्त्री उपपति अर्थात् दूसरे पुरुष से प्रसिद्ध वा अप्रसिद्ध प्रीति करे तो उसके पति को कितना बड़ा क्लेश होता है इसी प्रकार पति के पर स्त्री वा वेश्या गमन से पत्नी को महा दुःख होता है और वह उनका क्लेश कुटुम्ब भर का नाशक और उनकी प्रसन्नता सब कुटुम्ब को आनन्द देने वाली है, इस लिये आप अपने अमूल्य समय मद्य वेश्या संग आदि में न लगा के न्याय धर्म से प्रजापालनादि शुभ कर्मों में व्यय करके धन्य वादार्थ सर्वत्र सत्कीर्ति हूजिये।)

किमधिकलेखेन महामान्यवर्यनमेषु।

(३)

॥ ओम् ॥

श्रीयुत रावराजा तेजसिंह जी आनंदित रहो— यह औ

१—षधी का एक पत्र जिस में कि तेतीस औषधियां हैं जिन में कई परीक्षित और कई अपरीक्षित हैं सो भेजते हैं संभाल लीजिये और किसी में शंका हो तो पूछ लीजिये।

२—आज संध्या को उसी पूर्वोक्त काम के लिये मुंशी जी को भेज दीजिये,

३—एक चमड़े की बेग जो कि उस चोर ने दो ठिकाने से काट दी है यदि किसी कारीगर से एक दिन में सुधरवा दें तो आप के पास भेज देवें परन्तु विलंब एक दिन के सिवाय न हो अर्थात् शनिवार को अवश्य मिल जाय यदि ऐसा न हो सके तो आगे बनवा लेंगे।

४—यहां से पाली तक सवारी का प्रबन्ध जैसा आपने किया हो वैसा किसी पुरुष द्वारा वा पत्र से विदित आज करदें। सवारी का प्रबन्ध ऐसा होना चाहिये कि जैसे पहले और तो सवारी सब ठीक थी परन्तु असबाब की गाडी के बैल बिगार के थे वह बहुत पीछे रह जाती थी अब के ऐसा न होना चाहिये किंतु सवारी और असबाब की गाडी

बराबर चलें और बैल अच्छे होने चाहियें कि सवारी के बराबर चले जांयें ।

५—अमरदान जी के मुख से सुना कि माहाराने प्रतापसिंह जी ने अमरदान जी से कहा कि हम बारह घंटे में पाली को पऊंचा देंगे सो आप पूछ के उत्तर लिखिये कि वह क्या सवारी होगी, ।

६—जो मेरे साथ के मनुष्य और पुस्तकादि असबाव जायेंगे उस के साथ आप के सुरक्षित दो सवार और एक वा दो मेरे साथ तथा असबाव के साथ पहरा अच्छा भेजना चाहिये जैसा कि आप के पूने आने के पश्चात् मुरदाकली और एक दो अच्छे सिपाही का पहरा यहां बिना आठ दिन की बदली के रक्खा था कि जिस का प्रतिफल चोरी हुआ इसलिये पहरा और सवार अच्छा भेजना चाहिये जो कि होसियारी से पाली तक अच्छे प्रकार पहुंचा दें यह मैंने आपको स्मरण दिलाने के लिये लिखाखा है निश्चय है कि आप स्वयं अच्छा प्रबंध करेंगे इन सब वातों का प्रत्युत्तर आज ही मेरे पास भेज दीजिये

७—और जो संध्या का अनुवाद अंगेरेजी का गुटका आप ले गये थे वह भिजवा दीजिये अलमति विस्तरेण बुद्धिमद्वरेषु ॥

नमस्तुते व्यासनमोस्तु

स्वर्गीय श्री ठाकुर कृष्णसिंह जी बारहठ के पत्र

पूज्यपाद महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती जी के नाम

१. आषाढ़ शुक्ला ७ वि० सं० १९३९ का लिखा

२. चैत्र शुक्ला १४ वि० सं० १९४० का लिखा

३. वैशाख शुक्ला ३ वि० सं० १९४० का लिखा

४. श्रावण वदि ५ वि० सं० १९४० का लिखा पोस्ट कार्ड

५. श्रावण वदि ६ वि० सं० १९४० का लिखा

६. श्रावण शुक्ला २ वि० सं० १९४० का लिखा

७. आश्विन कृष्णा १० वि० सं० १९४० का लिखा

पूज्य पाद महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का पत्र

स्वर्गीय श्री ठाकुर कृष्ण सिंह जी बारहठ के नाम

१. बिना मिति का

२. बिना मिति का

(१)

॥ श्री ॥

श्रीमन् परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामी जी महाराज्य
श्री १०८ श्री श्री दयानंन्द जी की

सेवा मैं

॥ आपकों विदित होगा कि कविराजा शामलदास जी नेत्रों का उपचार करानें कों ईंदोर गये हैं और पहले की अपेक्षा अब अच्छे भी हैं और डाकटर के कथन से ग्यात हुवा है के अब दोय महींनें के पूर्व ही यहां आजावेंगे—और श्रीमांन् का चित्त भी अब प्रसन्न है और भाद्रपद शुक्ला मैं निरामय का महोत्सव करनें की इच्छा है सो सूचनार्थ लिषा है—आप का वृतान्त जोधपुर के पत्रों से ग्यात है और आप का पत्र भी श्रीमान् के समीप पहुचा था परन्तु यह नही प्रकट हुआ के जोधपुर मै आपकी स्थिती कब तक है और जोधपुर से कहां पधारनें की ईच्छा है और साहपुरे से सबल सिंह जी आपकों लेनें आये है उनकों आपनें क्या उत्तर दिया सो दया करके आग्या कीजिये—अब एक विषय श्रीमांन् की इच्छानुसार आपकी सेवा मैं निवेदन किया जाता है सो

इस पर विचार करके उत्तर सीघ्र ही प्रदान कीजिये वो विषय यह है क पहले यहां पर अर्थात उदयपुर मे किसी धर्म के विषय मैं ब्याख्यान नही दिया जाता था परन्तु थोड़े अरसे से गोरंड पादरियों ने बक्तृत्व देना प्रारम्भ किया है ओर वो प्रत्येक गलियें ओर बाजारों मैं ब्याख्यान देते हैं जिसके निरोध ओर आर्य धर्म की उन्नती की दृष्टी से श्री अधीसों का यह विचार है के आर्य समाज का कोई महांन पुरुष अच्छा बिद्वान ओर बक्तृत्व मैं कुशल ओर चतुर ज्यो इस स्थान के योग्य होवे वो यहां बुलाया जावे ओर आर्य धर्म के बिषै ब्याख्यान देनां प्रारंभ करोया जावे—यहां के प्रधान पुरुषों ने भी इस कार्य के प्रारंभ करने मै अपनी प्रसन्नता प्रगट करके ओर यह निवेदन किया है के यहां ब्याख्यांन देने मैं उस पुरुष कों तीन बातों पर अवश्य ध्यान रखनां चाहिये के तीर्थ ओर मन्दिर ओर मूर्ती पुजन का खडन ओर निंदा नही की जावे यह बात प्रसिद्ध नहीं की जावगी क उसे पुरुष की इन तीनों बातों क खडन करने की मनाई है तथापि उस पुरुष कों अवस्य बिचार रखनां होगा के ऊपर लिखी हुई तीनों बातों का खडन के विषय मैं कभी ब्याख्यांन नही देवै—यदी जैसा के आपका बिचार ओर अभिप्राय है वैसा लाभ इससे नही होवेगा परतु श्रीमांन् का यह सिद्धांत है के पादरियों के उपदेस से ज्यो

मनुष्य स्वधर्म कों छोड़ कर अन्य धर्म मैं प्रवेश करते हैं वो तो बंद हो जावेगा तो यही बड़ा लाभ है—व्याख्यान देने के विषय मैं यह विचार है के रदी उत्तम पुरुष किसी नियत स्थान पर व्याख्यान देनां प्रारंभ करैगा तो अवश्य करने कों बिसेष आदमी नही जावैंगे ओर बिशेष लाभ भी नहीं होगा—अतएव प्रत्येक स्थान मैं ओर बिषेष करिकै बाजार मैं व्याख्यान दिया जावेगा तो बहु फलदायक होगा—ओर श्री मांनू का यह बी अभिप्राय है के उस आंनें वाले आर्य पुरुष को यह सूचनां हो जांनां भी अवस्य है के यहां समाज नियत करने की इच्छा से सभाध्यक्ष प्रतिसभाध्यक्ष ओर सभासद आदि नियत करने की चेष्टा नहीं करैं जिस किसी कों होनां होगा तो वो आपसे आप हो जावेगा—मैंनें यह पत्र श्रीमदार्यकुलदिवाकरों के आग्यानुसार लिखा है आप इन सब बातों पर विचार करके उत्तर शीघ्र प्रदान करैं—

किमधिकम् बहुज्ञेषु—संवत १९३९ आषाढ शुक्ला ७

॥ आपका दास

बारहट कृष्णसिंह

(२)

॥ श्री ॥

॥ श्री श्री १०८ श्री श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य

स्वामी जी श्री दयानंद सरस्वती जी के चरन कमलों में

॥ पत्र आप का कविराज जी के नांम आया वो श्री अधीसों की सेवा मैं अर्पण किया गया कविराज जी के नेत्रों मैं पीडा है इस कारन में पत्र उनसे नहीं लिषा गया सो वुनके कहनें प्रमाणें मैं लिषता हूं—श्री अधीसों के श्रीर मैं षेद होनें की षबर मिलनें से कविराज जी यहां सीघ्र चले आये जयपुरे नहीं जा सके—गोकरुणा निधी के बिसय मैं जोधपुर से तो सही हो ही गई है और बूँदी किसन गढ से सही होकर फिर आगई—अब रतलाम व कानेर जैसलमेर लिषा गया है आसा है के सही होकर सीघ्र ही आजावेगा—और जयपुर से सही करवांनां कुछ दुर्घट नहीं हैं जब यहां से सावकास होगा तभी जाकर लिषवा लेवैंगे सूचनार्थ लिषा है—और आपनें उदयपुर का बृत्तांत वैदक यंत्रालय मैं मुद्रित करांनें के हेतु लिषा सो यथोचित मुद्रित करा

दीजियें—और डाकदर भवांनी सिंह आदि के विसय मैं लिषा सो इसका विचार हो रहा है अभी निर्बलत विसेस हो जानें से ईलाज प्रारंभ नहीं हुवा प्रारंभ होनें पर आप कों निवेदन किया जावेगा—और वृत्तांत फिर लिषूंगा इस समय मुझ कों सावकास नहीं है

१६४० चैत्र शुकला १४ सनिश्चर

॥ आपका सेवक द्वारहट कृष्ण सिंह

बाहारठ किसन जी

उदयपुर

(३)

॥ श्री ॥

श्रीमत् परम हंस परिव्राजकाचार्य
स्वामी जी महाराज श्री १०८ श्री श्री
दयानन्द सरस्वती जी के चरन सरोरुह मैं—

१९४०

॥ मनहर छंद   रूपकालंकार

॥ बिकट बिसाल कूल मिलते फिलासफीरु
जामैं भौंर जोर अति जयनीं जनावते ॥
मकर तिमिंगलादि होय कैं इंजीलवारे
कुरानी पुरानी दुष दुस्सह दिषावते ॥
दयानंद रसनां रसाल सत्य लालन की
जोन कलिकाल बीच छेपनी लगावते ॥
आयगा अपार मत कौलन प्रवाह बीच
बेद धर्म नौका बूढि कैसैं पार पावते ॥ १ ॥

॥ आपका शुभाकांक्षी सेवक द्वारहट कृष्णसिंह

॥ दोहा ॥ ब्योम बेद निधि ईंदु सक बिक्रम उत्तर मौन ॥
तिथि तृतिया माधव बिशद कियो कृष्ण निर्मौन ॥ २ ॥

(सं० १९४० वैशाख शुक्ला ३)

(४)

(कार्ड पर)

एक पोस्ट कार्ड आप का आया था वो श्री आर्यकुल कमल दिवाकर की सेवा में अर्पण कर दिया यहां सब प्रसन्न है श्रीमांन बहुत प्रसन्न है मैंनें एक पत्र श्रीमांन् की आग्यानुसार आपकी सेवा में भेजा था उसकां उत्तर नहीं आया सो यथा उचित लिष भेजैं—ओर ईदोर से कविराजा जी का पत्र आया जिस से प्रकट हुआ के अब उन के नेत्रों मैं आरांम है ओर द्दष्टी भी अछी हो गई भादवे मैं यहां आ जावैगे—सूचनार्थ विवेदन किया है सम्वत १९४० श्रावण बदि ५ मंगलवार

॥ बारहट कृष्णसिंह

परम हंस परिब्राजकाचार्य स्वामीं जी महाराज श्री १०८
श्री दयानंद सरस्वती जी के चरन कमलों मैं
जोधपुर फैजुल्लाषां जी के बाग मैं पहुंचै
बार्ट किसन सिंह

जोधपुर फैजुल्लाषां जी के बाग मैं

Jodhpur Jodhpur July 27

(५)

॥ श्री ॥

॥ श्रीमत् परम हंस परिव्राजकाचार्य स्वांमी जी
महाराज श्री १०८ श्री श्री दयानंद सरस्वती जी
की सेवा मैं

॥ पत्र आपका आया ओर कुरंन तथा इंजील का खंडन भेजा सो भी पहुंचा वो सब श्रीमांन् की सेवा मैं अर्पण कीये गये श्रीमांन् नें पढ कर आग्या की के हमारा अभिप्राय शास्त्रार्थ करानें का नहीं है किंतु यह इच्छा थी के जैसें ईसाई लोग अपनें इच्छानुसार व्याख्यान करते हैं इसी तरह यह भी होता परंतु ज्यो यह असक्य है तो कुछ चिंता नही— सो आग्यानुसार मैंने आप कों सूचनां करदी है ओर उदयलाल जी प्रोहित कों घड़ी के वास्तै कहा सो उनों नै उत्तर दिया के दोय घड्यें हमारै पास आई थी जिस मैं एक यहां रखी ओर एक भेज दी सो यह भी आप कूं सूचनार्थ लिषा है ओर यहां सब प्रसंन है श्रीमांन वहुत प्रसंन है १९४० श्रावण बदि ६ सनिश्चरवार—

आपका सेवक बारहट कृष्णसिंह

(६)

॥ श्री ॥

॥ श्री मत्परम हंस परिव्राजका चार्य

स्वांमी जी महाराज श्री १०८ श्री श्री

दयानंद सरस्वती जी के चरन कमलों मैं

॥ कृपा पत्र आपका आपका आया दो किताबै ज्यो आपनें भेजी थी श्रीमानों की भेंट कर दी गई और इस बिषय मैं एक पत्र आप की सेवा मैं भेज चुका हुँ निश्चय है के पहुंचा होगा तो पत्र श्रीमानं के आग्यानुसार लिखा था— लाहोर का पत्र ज्यो आपनें भेजा था वो भी अधीसो के दृष्टि गोचर हुआ था परंतु बिस्मर्ण हो गया था सो आप के इस पत्र आंनें पर स्मर्ण कराया गया तो आग्या की के अभी एक बंगाली बाबू हैड माष्टर है वो परिक्षार्थ रखा गया है यदि इसका कांम ठीक नहीं देखा जावेगा तो फिर आप सें सूचनां की जावेगा—इस जगह पर यूरोपियन नहीं रखा जावेगा—और महासयों का चित प्रसन्न है भाद्रपद शुक्ला मैं निरामय का महोत्सव होगा और वर्षा यहां बहुत दिनों से नहीं हैं—और अब बहुत आवस्यकता है—और आप के लिखनें के अनुसार जयकर्ण जी

कों कह दिया उनोंनें आप का बहुत धन्यबाद किया है—और कविराजा सांवल दास जी के आंखें अब अच्छी हैं और अब वो इस सप्ताह मैं उदयपुर आजावेंगे—श्रीमानों ने आपकों नमस्ते कहा है और यहां सब तरह सें कुशल है १६४० श्रावण शुक्ला २

आपका सेवक

बार्हट कृष्णसिंह

बहारट किसन जी

नं० १८ उदयपुर

(७)

॥ श्री ॥

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वांमी जी महाराज श्री १०८ श्री दयानद सरस्वती जी की सेवा मैं

॥ एक पत्र आपका मेरे पास आया वो श्रीमानों के दृष्टि गोचर करा दिया गया और येक पत्र आपका श्रीमांनं के पास आया था जिसमै सर्प बिच्छू ज्वर विसमज्वर मंदाग्नी बुद्धि बर्धक आदि परिक्षित औसधिये लिषी थी वो पत्र महासयों के पास था और औसध्यो का नांम कंठस्त रषनें के अभिप्राय सें पत्र को पास रषते थे सो वो पत्र षोया गया इस कारण सें श्रीमानं के आग्यानुसार आपकी सेवा मै निवेदन किया जाता है के आप उन औसधियों का नांम और लेनें की बिधि फिर लिष भेजै—और इन दिनों मैं श्रीमांनं का चित्त ज्वरामय में अप्रसन्न रहा था सो अब प्रसन्न है और आपका प्रयाण जोधपुर सें कब होगा और कहां पधारनां होगा सो कृपा करकें लिष भेजै और जोधपुराधीसों का बरताव अब कैसा है और वहां के महासयों का बर्ताव कैसा है और आपका वहां पधारनां उन लोगों कों कितनां उपकारी हुवा सो यदी लिषने मैं बिसेस परिश्रम न हो तो दया करकें लिष भेजियेगा—और

कविराज जी आंष का इलाज करानें कुं पुनः ईंदोर गये थे सो अब चित्तोड आये है नेत्रों मैं आराम है और अब दो सप्ताह तक चितोर मैं फिर रहैंगे सो सूचनार्थ लिषा है सम्वत १६४०, आश्विन कृष्णा १० तारीष २६ सितंबर ॥,

आपकादास

बारहट कृष्णसिंह

(१)

ओम्

श्रीयुत बहादुर किसन जी आनंदित रहो—

पत्र आपका आया समाचार विदित हुआ यह पत्र सर्वाधीशों के दृष्टी गोचर करा देना

१—मेरी भी यह मनसा नहीं है न थी कि पादरियों के सामने शास्त्रार्थ ही किया जाय किन्तु जिससे कोई अपनी प्रजा का पुरुष उनके मक्कर में न फसे वैसा उपदेश किया जाय इस लिये वे छोटे २ खंडन जो कि मैंने भेजे हैं वे छपवा के योग्य २ पुरुषों को चाहे वे पंडित हो वा बुद्धिमान् हों बांट कर प्रचार करने से उनके फंदे में कोई भी न फसेगा आपसे आप बहुत से उपदेशक उसी राज्य के पुरुष हो जांयगे इसका बांटना विशेष कर सरदार हाकम भूमिये थाने वा अच्छे २ गांमों में अथवा जहां कहीं कोई बुद्धिमान् हो इसको देखकर उन ईसाइयों को हठा दे सकेंगे और यदि श्रीमानों के नियमानुसार उपदेशक ही करना हो तो वहां राज के नौकर बहुत से पंडित हैं जिसको योग्य समझे उसको यह दोनों पुस्तक दे के उपदेशक कर देवें.

२—जैसा श्रीमान् महाशयों ने लिखा है वैसा उपदेशक आर्य समाज से आने में असक्य नहीं है किन्तु जो उस पत्रमें नियम लिखे है उनके अनुसार और इसाई आदि का खंडन होना असक्य है क्योंकि जब तक उपदेशक झूठ मत को मानेगा और दूसरे झूठे मत के खंडन में प्रवृत्त होगा कुछ भी न कर सकेगा जब तक मनुष्य स्वयं झूठी बातों का त्याग करके सत्य बातों में निश्चित प्रवृत्त नही होता तब तक वह अलौकिक शक्ति परमात्मा की ओर से नहीं मिलती और न दृढोत्साही वह हो सकता है यावत् इन ईसाई आदि के सामने वैदिक मतानुसार ईश्वर धर्म आदि को नहीं मानता और मूर्तिपूजा आदि को मानता है तब तक वह जायगा खंडन करने को आप ही खंडित हो रहेगा जैसे कोई किसी को दुर्व्यसन छुडाने का उपदेश करता और आप उसी दुर्व्यसन में फसा है उसका उपदेश कोई भी न मानेगा इस लिये असक्यता लिखी थी नहीं तो पण्डित तो क्या किन्तु एक कोई साधारण उपदेशक भी आर्य समाज का आवे तो इनका कुछ भी बल न चले इसलिये जो उपाय मैंने उनके निवारण के लिये लिखा है वह अच्छा है परन्तु ईसाई आदि के सामने जब कभी वात चीत हों तब उसको अति

उचित है कि उस समय मूर्ति और पुराण आदि का पक्ष छोड़ ही के बोले तभी कृत कारी होगा

३—यहां जयकर्ण के पिता नाथूराम जी को श्रीमान् जोधपुराधीश महाराजे प्रतापसिंह जी और बाबा साहब से कह कर मैने मिलाप करा इनकी ओर से जो शंका थी सो दूर करादी है, अब तीनो महाशय उनसें प्रसन्न हैं और अब श्रीमान जोधपुराधीश भी कुछ २ मेरे उपदेश सुनने में प्रवृत्त हुये है.

(२)

॥ ओम् ॥

श्रीयुत महाराट कृष्ण जी आनंदित रहो—

जयकर्ण जोधपुर में आये उनसे वहां का सब वर्त्तमान सुन के अत्यानन्द हुआ परन्तु थोडी सी बातें लिखता हूं अब निम्नलिखित बातें श्रीमान महाशयों के दृष्टि गोचर करा देना अन्य किसी को नहीं

१—प्रातः काल का भ्रमण करना सदैव हुआ करे उस में विच्छेद कभी न किया जाय

२—भोजन का जो समय दिनचर्या में १० दश बज से लेके ११ ग्यारह बजे के पूर्व २ करना लिखा है वैसा ही सदा रखना चाहिये।

३—सभा में बैठ कर जैसे दिनचर्या में लिखा है.... वैसे बराबर न्याय करना चाहिये उसमें आलस्य कुछ भी न हो।

४—जो उस रोग को निःशेष होने में श्रीमानों को कुछ भी सन्देह रहा हो तो जो इंदोर के डाकतर साहब का विचार किया है वह उत्तम है वह डाकतर अनुमान से विदित होता है कि अच्छा है परन्तु औषधी करते समय जो कि उनके

नीचे डाकतर गणपतराव जी और डाकतर भवानीसिंह जी भी दोनों साथ रहें

५—मुझ को निश्चय है कि यदि सर्वाधीश वालचर साहब से इस बात की समति के लिये पूछेगे तो वे संमति अवश्य दे देंगें पूछने की रीति यह है (अब ओषध हो गया और रोग भी निवृत्त होगया परन्तु इस की परीक्षा के लिये अर्थात् अब यह रोग निशेष होगया वा नहीं इंदोर के डाकतर को बुलाकर परीक्षा कराना मैं चाहते हू इस में आप की क्या अनुमति है) पूछते ही वे संमति दे देंगे। जब उनकी संमति हो जाय तब उसी समय उस डाकतर सहित गणपतराम और कविराज जी को उदयपूर में शीघ्र बुला लेना चाहिये।

६—यदि अब तक किंचित उस रोग के निशेष होने में शंका है तो उस का पथ्य थोड़ा समय पूर्ण रीत से रखना चाहिये विशेष कर ब्रह्मचर्य और आगे के लिये भी सदा ऋतुगामी रहें कि जिस से न कोई रोग आवै और निरन्तर सध्मर्थ काम मोक्ष राज कार्य की उन्नति होकर आर्य्यव्रर्त देश की उन्न होकर सदा आनन्द बढ़ता रहे सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर की कृपा से ऐसा ही होवे।

देलवाड़ा के राजराणा फ़तहसिंह जी झाला के पत्र

पू० महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के नाम

१ अधिक श्रावण शुक्ला ४ वि० सं० १६३६ का लिखा

२ निमंत्रण पत्र पौष वदी १ वि० सं० १६३६ का

(१)

॥ श्री रणछोड़राये जी

श्री आद्याता जी

॥ सेवग की दंदोत मालुम होवे कृपासु द्रस्टी बंणी रहे कृपाकर काम काज लकावो करे मड़ी दरसण रुवाड़ी जाये- (वे) गा सरीर वेमार हेजी की देर है

॥ सीध श्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा विराज्यमान अनेक ओपमायोग्य स्वामि जी महाराज श्री ५ श्री श्री श्री दयानंद सरस्वति जी योग्य देलवाड़ा से राज रांणा फतेसिंह लिखितं डंडवत मालूम होवे अठाका समाचार श्री कृपा से भला है आप का सदा भला चाहिजे आप पुज्य है अप्रंच कृपा पत्र आप का श्रा० कृ० १२ का लिखा शुदि ४ इहाँ पँहुचा पढने से बहुत आनंद हुवा आपने इहाँ का कुशल क्षेम का समाचार मँगाया सो आप की दया से कुशल क्षेम है और आप उदयपुर पधारे सो समाचार कविराजा शामलदास जी के जबांनी सुनें और मैं भी पांच दस दिन में हाजिर होउँगा क्योंके एक महीना से वीमारी ज्यादा रही इस वास्ते अब

आराम हुवां दरसनों के लिये हाजर होऊंगा आप के इहां पधार ने से वहुत खुसी है जैसी दया द्रष्टी है वैसी रखियेगा

सं० १९३९ अधिक श्रा० शुदि ४

परोपकारिणी सभा उदयपुर मसूदा शाहपुरा फरूकाबाद संबंधी पत्र आये हुये।

(२)

श्री आदमाता जी।॥ श्रीरण छोड़ राऐ जी

॥ सेवग का दंडोत पगां लागणो मालुम हो सी क्रपा कर वेगा पदारसी।

सीघश्रीऊदेपुरसुभसुथांनेसरबओपमालायकेस्वांमीजीमहाराज श्री१श्रीदयानंदसरस्वतीजीएतांनदेलवाड़ायीसवेगरांणाफतहसिंहलिषा वतांडंडवतमालुमहोवेअठाकासमाचारश्रीक्रिपाथीभलाहैआपकासदाभला चाहीजैआपम्हारेघणीवातहैआपवड़ाहैपुज्यहैअप्रंचचरणराजकुमारी कालग्नमाघक्रुष्ण४ता०२७जनवरी१८८३काहैसोक्रुपाकरपदारेआप कापदारवासुअधीकसोभाहोसी१९३९रापोसव्दी

फतहसिंहजी

ठाकुर

उदयपुर के स्वर्गवासी नरेश महाराणा श्री सज्जन सिंह जी तथा स्वर्गीय पूज्यपाद महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का पत्र व्यवहार

१. महा० सज्जनसिंह जी का विना मिति का पत्र

२. महा० सज्जनसिंहजीका पत्र सं० १९३९ माघ शुक्ला २ का

३. महाराणा सज्जन सिंह जी का पत्र मय लिफाफा वि० सं० १९३९ की फाल्गुण कृष्णा ५ का

स्वामी जी के पत्र

१. पेन्सिल से लिखा हुवा पत्र विना मिती का

२. उपदेश ४ पृष्ठ विना मिती के

३. रहस्य नियम कुछ स्याही से और शेष पेन्सिल से लिखे हुए ३ पृष्ठ विना मिति के

४. झाला वाड़ के सम्बन्ध में पेन्सिल से लिखा हुवा विना मिति का पत्र

५. उपदेश पत्र-पेन्सिल से लिखे हुए १ पत्र विना मिति का जिसमें १९ उपदेश हैं

६. तथा पेन्सिल और स्याही से लिखे हुए ९ पृष्ठ विना मिति के जिन में सख्या लगे हुए ५१ उपदेश हैं

उदयपुर नरेश स्वर्गवासी महाराणा सर सज्जन सिंह के पत्र स्वामी जी के नाम

(१)

॥ श्री ॥

श्रीमत् परम हंस परिव्राजकाचार्यवर्य श्री ५ श्री दयानन्द सरस्वति यति वर्येषु उदन्तु समयानुसार सिक्षा ज्यो आपने लिखी सः हमारे उपकारिणी हुई प्रथम से ही इस प्रकार ही ध्यान था अब भी वैसा ही रहेगा किन्तु अधिक

हस्ताक्षर सज्जनसिं

(२)

॥ श्री ॥

श्री मत्परम हंस परिव्राजकाचार्य वर्य श्री ५ श्रीदयानन्द स्वामि वर्येषु इत महाराणा सज्जनसिंहस्यनति तनय ममुख सन्तु उदन्तु आपने ज्यो शुभाशिष लिखा जिसके प्रतिनिधि धन्यवाद अर्पण करता हूँ

इति सं० सं० १९३९ माघ शुक्ला २ भृगुवासरे ह:म:रा:

सज्जन सिंहस्यः

(३)

॥ श्रीमदेकलिङ्गेश्वरो जयति ॥

॥ स्वस्ति श्रो सर्वोपकारार्थ कारुणिक परमहंस परिव्राजकाचार्य वर्य श्री ५ श्रीमद्दयानन्द सरस्वति यति वर्येषु इतः महाराणा सज्जन सिंहस्य नतिततयस्समुल्लसन्तु उदन्तु आपका अठै सात मास का निवास सूँ चित्त अत्यन्त आनन्द मैं रह्यो क्यों कि आपकी शिक्षा को प्रकार श्रेष्ठ और उन्नति दायक है और आपका संयोग सूँ के ही न्याय धर्मादि शारीरक कार्यों मैं निस्संदेह लाभ प्राप्त होंवा की म्हाँ का सभ्य जना सहित दृढ़ाशा हुई—कारण कि शिक्षा ओर उपदेश वाँ श्रेष्ठ पुरुषाँ का दृढ़ होवै है ज्यो स्वकीय आचरण भी प्रतिकूल नहीं राखै सो यो आप मैं यथार्थ मिल्यो अब म्हे आपका वियोग को संयोग तो नहीं चावाँ हाँ परन्तु आपको शरीर अनेक मनुष्याँ कै उपकारक है जी सूँ अवरोध करणो अनुचित है तथापि पुनरागमन सूँ आप भी म्हाँ का चित्त नैं शीघ्र अनुमोदित करैगा इत्यलम् सम्वत १९३९ फाल्गुन कृष्ण ५ भोमे

{ हस्ताक्षर महाराणा
सज्जन सिंहस्य }

लिफाफा

॥ श्री मत्परिव्राजकाचार्य वर्य्य श्री ५ श्रीदयानंद

सरस्वति मति वर्य्येषु ।

नोट—उपरोक्त लेख पूर्व पत्र के लिफाफे पर लिखा हुआ ठिकाना (पता) है

श्री स्वामी जी के पत्र उदयपुर नरेश महाराणा सर सज्जनसिंह जी के नाम

(१)

ओ३म्

श्रीयुत महिमहेन्द्र महामान्यार्यकुल दिवाकर
॥ आनंदित रहो ॥

श्रीमानों को विदित हो कि मैं जोधपुर में भाद्रपौर्णमासी तक रहना चाहता हूँ पश्चात् कहां जाना होगा इसका निश्चय अब तक नहीं किया है जब निश्चय हो जायगा तब श्रीमानों को विदित कर दिया जायगा

महाराजे प्रतापसिंह जी और राव राजा तेजःसिंह जी उदयपुर में श्रीमन्महोदयों को मिलने के लिए आने को कहते थे अनुमान है कि पूने से वहीं आवेंगे, यदि आवें तो अच्छे प्रकार आप शिक्षा करेंगे इसमें कहना वा लिखना क्या है। किन्तु आर्यराजोत्कर्ष वैदिक धर्म की उन्नति करने आदि का उपदेश यथा योग्य कीजियेगा॥ कुछ औषधि लिखके भेजी जाती हैं इन को यथा योग्य उपयोग में लावें।

[२]

॥ उपदेश ॥

१—कभी साहित्य जो नायका आदि भ्रष्ट रीति है उसका स्मरण श्रवण और वैसे गणेशपुरी से मनुष्यों का संग भी कभी मत कीजियेगा और न मद्यपान वेश्या का दर्शन नृत्यगान आदि प्रसंग करना

२—जैसी दिन चर्या मैं लिख आया हूँ उससे विपरीत आचरण न कभी करना किन्तु वही रात्रि को प्रातः ४ चार बजे उठना दिन और रात में १० बजे भोजन करना दिन में निद्रा न लेनी और रात्रि में १० १॥ साढ़े दश वा ११ बजे तक शयन सदा कीजियेगा।

३—सदा छः घंटे तक समय राज कार्य में लगाया कीजियेगा और जब कभी राजकार्य से अवकाश मिले तभी व्याकरणादि शास्त्र और मनुस्मृति के ३ अध्यायों का अभ्यास कीजियेगा और व्यर्थ समय एक क्षण मात्र भी मत गमाइयेगा जैसा कि सतरंज हास्य और विनोद आदि में मूर्ख लोग अपना अमूल्य समय खोते हैं—वैसा करना सर्वथा अनुचित है

४—प्रात समय योगाभ्यास की रीति से ध्यान करना और नाम लेना आदि पुरोहित के आधीन कर दीजियेगा जिससे ध्यान करने और राज्य पालन में समय यथोचित श्रीमानों को मिले बुद्धि बल पराक्रम आयु प्रताप बढता रहे

५—निरामय महोत्सव में निम्नलिखित कार्य अवश्य कीजियेगा एक वेदमंत्रों से होम दूसरा १२५०००) सवा लाख रुपये छात्रशाला और २५०००) पच्चीस हजार रुपये स्वराज्य में अनाथ वृद्ध विधवा और रोगियों के पालन के लिए और १००००) मेवाड़ में वैदिक धर्म प्रचार और प्राचीन आर्ष ग्रंथों के छपवाने प्रदान करने के लिए और २०००००) दो लाख वहां के क्षत्रिय सरदारों से लेकर क्षात्रशाला स्थापन शीघ्र कीजियेगा। इसमे ऐसा समझिये कि जानो एक वार गवनर जनरल साहेब और आए थे ॥

६—सदा बलवान और राजपुरुषों से सताये हुओं की पुकार यदि भोजन पर भी बैठे हो तो भोजन को भी छोड़ के उनकी बात सुननी और यथोचित उनका न्याय करना ऐसा न होवे कि निर्बल अनाथ लोग बलवान और राजपुरुषों से पीडित होके रुदन करें और उनका अश्रुपात भूमी पर गिरे कि जिससे सर्वनाश हो जावे और इनकी रक्षा से

सब प्रकार की उन्नति अर्थात् शरीरारोग्य आयुवृद्धि धन वृद्धि राज वृद्धि धर्मवृद्धि और प्रतापवृद्धि को सदा करते रहियें ॥

७—अब परमात्मा की कृपा से महाशयों का शरीर निरामय हुवा है, अब इसको वीर्य रक्षणादि से सदा रोग रहित रखियेगा कि जिससे ऐहिक और पारमार्थिक सुख की सिद्धि करना सुगम होवे और श्रीमानों के दीर्घायु होने से स्वराज्य और समस्त आर्यावर्त देश का सौभाग्य बढ़े।

८—कभी सत्यबात के करने और झूठ बात के छोड़ने में भय न करें किन्तु युक्ति पूर्वक इस बात को पूरी करें और अपने राज्य में २५ वर्ष का पुरुष और १६ शोलह वर्ष की कन्या का विवाह करने के लिए दृढता पूर्वक आज्ञा दीजिये कुमार और कुमारी का यह समय सनातन आर्ष ग्रन्थस्थ विद्याओं के ग्रहण करने में व्यतीत होवे जिस से सब मनुष्य जाति की सत्य उन्नति होवे—

९—एक विवाह से अधिक दूसरा भी विवाह कोई न करने पावे परन्तु वह विवाह दोनों की प्रसन्नता पूर्वक होवे जिस से अत्युत्तम सन्तान उत्पन्न हों।

१०—स्वराज्य और पराज्य का जो चिकीर्षित और अच्छे बुरे काम होते हैं उन को दूत द्वारा यथावत् जान कर दुष्ट कार्य कर्त्ताओं को दंड और उत्तम कार्य करने हारों का सतकार यथायोग्य कीजिये जिस से उत्तम कार्य बढ़ें और दुष्ट कर्म घट जायें।

११—जो जितना अपराध करे उसी को उतना दंड और जो जितना अच्छा काम करे उसको उतना ही पारितोषिक देना अधिक वा न्यून नहीं चाहे माता पिता भी क्यों न हों।

१२—जैसा कुत्तों पर अन्याय अर्थात् एक के हड़के होने और अपराध करने में सब जाति को दण्ड देना अन्याय है इसके लिए जितना धन व्यय इस प्रबन्ध में होता है उतने धन से जितनों से प्रबन्ध हो सके उतने पुरुष हड़के कुत्ते को मारने के लिए नौकर रखिये और बिना अपराधियों को दंड मत दिलाइये वे रात दिन इसी कार्य करने में तत्पर रहें।

१३—अब दशहरा निकट आया उस में अनपराधी भैंसे बकरों का प्राण न लेकर उनके स्थान में सिरनी मिठाई मोहन भोग लपसी आदी बलि प्रदान कीजिए, और क्षत्रियों को जो कि शस्त्र चलाना जानते हैं उन के उत्साह शौर्य

धैर्य बल और पराक्रम की परीक्षा करने के लिये जंगली सुअरों को वा सिंह को प्रथम पकड़ा रखके उस दिन मैदान में छोड़ शस्त्र प्रहार करने की आज्ञा दीजिये इनको विदित तो होवे कि शस्त्र चलाना ऐसा होता है।

१४—आरोग्य और अधिक वर्षा होने के लिए एक वर्ष में १००००) दस हज़ार रुपये घृतादि जिस रीति से होम हुवा था उसी रीति से प्रति वर्ष होम कराइये परन्तु उन में से ५०००) पांच हजार रुपयों के सुगन्धित घृत मोहन भोग का होम वर्षा ही में कि जिस दिन वर्षा क आग्द्रा नक्षत्र लगे उस दिन से लेके विजय दशमी तक चारों वेदों के ब्राह्मणों का वरण करा एक सुपरिक्षीत् धार्मिक पुरुष उन पर रख के होम कराईयेगा।

सब से मेरा आशीर्वाद कहियेगा, और इस लेखा को यथावत सफल कीजियेगा, और इसका प्रत्युत्तर शीघ्र भिजवा दीजिये किमधिक लेखेन महा मान्यवर्यत मेषु ॥

[३]

रहस्य नियम

(१) स्वयंवर विवाह के पश्चात् कम से कम एक महिने और अधिक से अधिक ३ महिने तक ऋतु दान से पूर्व ब्रह्मचर्य सेवन पूर्वक पत्नी और पति भोजन का प्रबन्ध रक्खें। अर्थात् अति शीत अत्युष्ण, अति रूक्ष, मादक द्रव्यों का भोजन पान छोड़ तरोष्ण मध्यस्थ गुण युक्त दुग्ध मिष्ट सुगन्ध तण्डुल गोधूम मूंग उड़द दधि सद्योघृत सुसंस्कृत सुगन्धि युक्त बुद्धि वर्धक हृद्य पदार्थों का भोजन पान किया करें कि जब तक ऋतुदान समय न आवे।

(२) ऋतुकाल प्रतिमास षोड़स रात्रि पर्यन्त होता है उनमें से रजोदर्शन दिन को लेके चतुर्थ दिन पर्यन्त स्पर्श दर्शन भी परस्पर न करें। जब पांचवें दिन शुद्ध हो जावे तब यदि पुत्रेच्छा तो समाङ्क अर्थात् छटी आठवीं दशवी द्वादशी चतुर्दशी और सोलहवी रात्रि ऋतु दान के लिये उत्तम है और जो कन्योत्पत्ति की इच्छा हो तो पांचवी सातवीं नवमीं एकादशी त्रयोदशी और पंचदशी तिथि प्रशस्त हैं परन्तु इन्ही शोलह रात्रियों में, दोनों पक्ष की अष्टमी

चतुर्दशी पौर्णमासी और अमावास्या तिथि आवे तो उस रात्रि में भी ऋतु दान न देना चाहिये

(३) जिस रात्रि में शरीर चित्त आत्मा प्रसन्न हो उसी में १० बजे के उपरान्त २ बजे से पूर्व ऋतु दान देके पश्चात् किंचित् ठहर स्नान कर शालम मिश्री और केशर आदि सुगन्धि युक्त परिपक्व दूध शीतल यथारुचि पी के तांबूल भक्षण कर मुख प्रक्षाल करके पृथक शयन करें।

४—यदि पत्नी विदुषी चतुर हो तो उसी समय गर्भ स्थित हुआ वा न हुआ जान लेवेगी नहि तो जब पुनः द्वितीय मास में रजस्वला न हो तब जानना कि गर्भ रहा उस समय से आगे यावत् बालक के जन्म होने के पश्चात् दो महीने अर्थात् वर्ष व्यतीत न हो तब तक दोनों सिवाय सुभाषणादि व्यवहार के मध्य में समागम (न) करें किन्तु पति पत्नी पूर्वोक्त प्रकार युक्ताहारविहार करते हुए ब्रह्मचारी रहें जिससे अग्रिम संतान भी उत्तम होवें।

५—दोनों मन कर्म वचन से व्यभिचार अर्थात् अन्य स्त्री अन्य पुरुष से समागम छोड़ पातिव्रत्य और स्त्री व्रत रहके धर्मार्थकाममोक्षों को सिद्ध करके आनंदित और दीर्घायु होवें।

यदि इतने पर भी गर्भ स्थित न हो तो पत्नी एक प्रति वा बाल चान्द्रायण अर्थात् मध्यान्हनदि में नित्य प्रति तीन २ तोले अर्थात् ३६ मासें का एक ग्रास एकान्न के आठ ग्रास खावे एक महीने अर्थात् पौर्णमासी से द्वितीय पौर्णमासी अमावस्या से २ अमावस्या और संक्रान्ति से २ संक्रान्ति तक व्रत करे नित्य होम और भूमि मे शयन करे और पति ब्रह्मचारी होकर वीर्य की रक्षा वृद्धि करे पुन पूर्वोक्त समय और रीति से स्थापत करें तो संभव है कि संतानोत्पत्ति होवे

[४]

अजमेर

मास्तर झालावाड़ के राजराणा जी

झालावाड़ के अतालीक जो भाग गये उनका हाल संक्षेप से झालावाड़ से समाचार मंगवाया था सो हाल यह है कि लफटंट लौंग साहेब ३॥ साढ़े तीन बर्ष तक अतालीक रहे। जीती खर्च वा अजमेर खर्च श्री राजराणा साहेब बहादुर का अतालीक सपुर्द रहता था किन्तु नित्य प्रति के व्यय के लिए नगद रुपये १७०००) राज की उस के पास था और रु० १२०००) सेठ मूलचन्द जी वा गणेदास आदि साहुकारों का पहिले से लेना था। और रुपये २०००) का जेवर श्री राज राणा साहेब का जो उसी रात धाबाई हरलाल की मार्फत वास्ते देखने के मंगाया यह सब लेकर अकेला रात की रेल में अजमेर से चला गया साहब लोगों का कहना है कि उसका पता नहीं है कि वह कहां गया और अब वह कहां है।

(५)

उपदेश

१—सदा पक्षपात छोड़ के भ्रम–(कागज फटा हुवा) के साम्ने उपदान लेने की चेष्टा कभी न करनी चाहिये ।

२—सेना में सुशिक्षित अधिष्ठाता आर्यजनों को रखना ।

३—क्षात्रशाला ।

४—हास्य और वेश्या नृत्य पास वान् आदि से मसा मगम कभी न करना ।

५—आबू एजंट और सीमा के व्यवहार में को गोल पासवान् स्वार्थी राजद्रोही मूर्ख को न रखना किन्तु बड़े विद्वान् धार्मिकों | को रखे ।

६—सर्वदा उद्युक्त आलस्य रहित दीर्घ सूत्री कभी न हो—

७—कभी अर्थी प्रत्यर्थी से (लोभ आ)दि में फंस कर अन्याय (न) करे न करावे यदि जिसका सत्य न्याय हो वह बिना प्रसंग भेंट करे तो भी उन से कहे कि न्याय करना हमारा निज कर्म है इतने भी प्रसन्नता से देवें तो लेवे

८—वेद विरोधियों की जाल से प्र(जा को) बचावे

९—सदा ऋतुगामी स्वदारर(त) इस से मित्रों को मा बहि(न औ)र कन्या के सदृश माने ।

१०—शरीर राज्य ऐश्वर्य विद्या धर्म को सर्वदा बढा(वे तथा) वेश्यागामी दुर्व्यसनी, दुष्ट व्यसनों का सग कभी न करे ।

११—सदा भ्रमण के लिए एक पुरुष और दूत

१२—धर्मार्थोपरि

१३—गोविषय

१४—आपा खानादि

१५—किसी को अपना भेद कोई अपना छिद्र न जाने

१६—जो धर्मदाय वा पारितोषिक दिया हो जिस लिए उसका उसी के अर्थ नियुक्त रखना

१७—किसी की अर्जी सुन कर निष्फल न करनी किन्तु उसका यथावत् विचार करके जीत हार करना ही चाहिये—

१८—सरदार और पण्डित अजनाथ वा अन्य कोई योग्य पुरुषों को सीमा प्रबंध करना चाहिये।

१९—जितनी पृथ्वी स्वराज्य दूसरे राज्य में दबी है उस के लिए अपील शीघ्र अवश्य होनी चाहिये।*

---

* नोट—१ यह उपदेश श्री स्वामी जी ने पेन्सिल से लिखा है, प्रतीत होता है कि यह पहले पत्र (झालावाड़ वाले) के साथ सम्बद्ध है।

नोट—२. इस प्रकार ( ) कोष्ठ में जो शब्द रक्खे हैं वे अर्थ संगति मिलाने के लिए पत्र लेख के ढंग से जैसा प्रतीत हुआ लिखे गये हैं क्यों कि मूल पत्र का वह भाग जहाँ ये शब्द लिखे थे फट गया है।

(६)

तत्

जब न्याय स्थान पर जावे तब सब प्रजास्थ वादि प्रतिवादी साक्षी राजपुरुष सम्प्रेक्षक आदि मनुष्यों को प्रसन्न वदन कृपा दृष्टि से आनन्दित करे। दक्षिण हाथ उठा कर सब को स्वास्थ्य अभयदान देकर न्यायासन पर बैठ सर्व व्यापक यथावत् न्यायकारी अन्तर्यामी को मन से नेत्रोन्मीलन कर के प्रार्थना करे कि हे परमेश्वर आप की कृपादृष्टि हो जिस से मैं चाहता हूँ कि कभी काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोकादि के वश हो के अन्याय न करूं ऐसा अनुग्रह आप भी कीजिये परन्तु इस बात को सदा ध्यान में रक्खे कि सब कामादि और अन्याय में फसाने वाला लोभ है उसको अपने से और आप उस से सदा दूर रहे। उस समय न किसी का शत्रु और न किसी का मित्र तथा उदासीन बने किन्तु समदृष्टि कि जैसा पक्षपात छोड़ परमेश्वर वा आप्त पुरुष सबके साथ वर्तता है वैसे वर्त्ते प्रत्येक सप्ताह में गुरुवार के ऋणादानादि में विवाद अर्थात् दिवानी का न्याय करे और रविवार के दिन साहसिकों का अर्थात् फौजदारी का न्याय करे। जब अर्थी वा प्रत्यर्थी अथवा

साक्षी जो कुछ स्वभाव से बोले उस पर अतीव ध्यान देकर विचार करे और उनको कठिन से कठिन शपथ करावे सब साक्षियों को पृथक २ रक्खे सीखावट की साक्षी को न माने और यह भी जना देवे कि मिथ्या बोलने मानने और करने वाले को इस ज म और परजन्म में सुख वा प्रतिष्ठा नहीं होती। और देखो थोड़े से जीवन में धर्मात्मा अर्थात् सत्यवादी सत्यमानी सत्यकारी मनुष्य धर्मार्थ काम मोक्ष फलों को प्राप्त होता और मिथ्यावादी, मिथ्य मानी अनृतकारी सर्वदा दु:ख को प्राप्त होता है इस लिये किसी को आत्मा और परमेश्वर के मिथ्याभषणादि से शत्रु न बनाना चाहिये जैसा कुछ तुम्हारे आत्मा में हो वैसा ही जीभ से बोलो जब वे कुछ भाषण करें वह सब लिपिबद्ध होवे और उन के नेत्र तथा मुखाकृति की ओर देख कर भीतर के आशय को पहिचाने यदि कोई बड़ा ढीठ अथवा प्राड्विवाक अर्थात् बारिष्टर वा वकील जो कुछ परस्पर प्रश्नोत्तर करें उस पर ध्यान दे कर सुने तथा लिखे यदि जहां २ पूछ उचित हो पूछे बीच में अन्य २ सम्वाद कर के वक्र वा सरलता से प्रश्न करे यदि इतने पर भी सत्यासत्य का निर्णय न हो तो उन पर विश्वास न कर के जहां वह विरुद्ध कार्य हुआ हो वहां के सुपरीक्षित धार्मिक पुरुष के पुरुष और स्त्रियों की साक्षी में स्त्री जनों से

पूछ कर निश्चय करे परन्तु स्त्रियों से साक्षी पूछे अथवा यदि पड़दे में रक्खे तो बड़े प्रबन्ध से रख के पूछे कि वहां उस के बदले दूसरी स्त्री न बोले । यदि सामने होवे तो न कोई उस पर दृष्टि डाले न हास्य करे और न डरावे इतने पर भी सत्यासत्य का निर्णय न हो तो गुप्त में उन को बात करते सुन अथवा धार्मिक आप्त जन दूतों के द्वारा निश्चय करे पश्चात् जो अपराधी हो उसको यथा योग्य दण्ड दे कर हराव और अनपराधी का मान्य कर जितावे जो हारे उस पर ताना न मारे किन्तु ऐसा कहे कि देखो भाई मैं तुमसे ऐसे काम करने की आशा नहीं करता था तुमने ऐसे कुल वा ऐसे के पुत्र हो कर ऐसा अनुचित काम किया इस पर मुझको बड़ा शोक है । हे भद्र यदि तू ऐसा काम न करता तो ऐसे दण्ड को प्राप्त क्यों होता यदि कोई धूर्त वा आतुर बुरा शब्द बोले वा कुचेष्टा करे सह लेना परन्तु अपने शरीर की रक्षा सब प्रकार से करना और सबकी मानसी वा बाह्य चेष्टा को जानते रहना चाहे कोई कितनी ही प्रार्थना करे वा क्रोड़ रु॰ रुपैये भी दे कर अन्याय कराया चाहै तो भी कभी अन्याय न करे यही राजा के प्रताप, कीर्ति, श्री और राज्य बढ़ानेवाला कर्म है । यदि भूमि धन धरावट सीमा आदि जितने विवाद लेख वचन से हों अथवा साहस मारपीट कुवचन आदि से दूसरे को पीड़ा वा हानि पहुंचावें उनका भी न्याय यथोचित करे

जैसा मनुस्मृति के अष्टम और नवमाध्याय में न्याय व्यवस्था १८ प्रकारों में लिखी है यथा योग्य करे। ये सब काम, मध्यान्होत्तर चार बजे तक कर के कुछ ४६ पल अर्थात् १६ मिनट तक स्वस्थ हो कर जिनके साथ मिल के राज प्रबन्धार्थ विचार करना चाहिये ४। सवा बजे तक प्रजास्थ जनों से बात करे, पश्चात् यदि प्रातः काल १० बजे भोजन किया हो और उष्ण-काल हो तो शौच आदि से निवृत्त हो कर ६ छ. बजे तक भोजनादि से निवृत्त हो जहां का शुद्ध वायु शुद्ध देश एकान्त हो पैदल घूमने को जाय यदि चलने में असमर्थ हो तो सवारी पर बैठ कर घूमे परन्तु यदि शीतकाल हो तो परमेश्वर की उपासना के पश्चात् भोजन करे अर्थात् उष्णकाल में आठ बजे पर्यन्त भोजन के पश्चात् घूमना उपासना करनी उचित है। और शीतकाल में भी ५ बजे से सात बजे तक भ्रमण उपासना से निवृत्त हो कर साढे सात बजे तक भोजन कर ले पश्चात् ४६ पल अर्थात् १६ मिनट पर्यन्त किसी से न बोले किन्तु हस्त मुख प्रक्षालन कर लघु शंका से निवृत्त हो ताम्बूल भक्षण कर शतपद घूम के किंचित् उत्तान दक्षिण और वाम पार्श्व से लोट कर उठ बैठे तत् पश्चात् अर्थात् पौने आठ बजे से नौ बजे तक दूत द्वारा स्वदेश स्वनगर परदेश पर राज्य के समाचार जो कि अपने और दूसरे

के सम्बंध में हो सुने और उससे स्वकार्य सिद्धि के लिये आज्ञा भी देवे नौ से दश बजे तक आय व्यय आदि का वृत्तान्त सुन कर अगले दिन के लिये यथोचित प्रबन्ध करे। पश्चात् आध घण्टे में इष्ट मित्र वा मंत्री आदि से जो कि उस समय उपस्थित हो प्रसन्नता पूर्वक विदा कर के साढ़े दश बजे शयन करे यदि उष्णकाल हो तो १० बजे तक इन सब कामों से निवृत्त हो शयन करे। शयन एकान्त में करे और उसी समय परमेश्वर को इस लिये धन्यवाद देना कि हे परमेश्वर आपकी कृपा से गत अहोरात्र जैसा आनन्द पूर्वक बीता वैसे ही अग्रस्थ अहोरात्र भी आनन्द पूर्वक व्यतीत होवे। दो दिन में पूर्वोक्त दो काम करने मंगल के दिन किसी राजपुरुष ने वा अन्य राज्य से प्रजास्थ वा राज जन पीड़ित हुए हों उनकी बातें और तीन दिन अर्थात् बुध शुक्र और शनैश्चर में सब राज्य की उन्नति और स्वास्थ्य के लिये प्रबन्धार्थ अकेले वा मुख्य धार्मिक स्वराज्य भक्त मंत्रियों (के) साथ विचार करना चाहिये।

विशेष नियम।

१—जब पति और पत्नी समक्ष हों प्रसन्नता पूर्वक नमस्ते कर जिस २ प्रकार दोनों में प्रेम बढ़े वैसा व्यवहार करें। विरुद्ध कभी नहीं।

२—ऋतुदान के पश्चात् किंचित् ठहर स्नान कर शालेय मिश्री केशर आदि सुगन्धियुक्त परिपक्व दुग्ध शीतल यथा रुचि पी के ताम्बूल भक्षण कर मुख प्रक्षालन कर के पृथक् २ शयन करें ॥

३—दोनों सदा विद्या धर्म प्रजासुख के लिये तन मन धन से प्रयत्न किया करें ॥

४—किसी वेद विद्या युक्ति विरुद्ध मतमतान्तर के झगड़े में दोनों कभी न फसें किन्तु पक्षपात रहित न्यायाचरण वेदोक्त धर्म ही का आचरण करें और करावें ॥

५—अपने वा पराये राज्य में जहां तक शक्य हो किसी मत वाले की बहकावट से विद्यायुक्ति विरुद्ध मत मे किसी को न फसने देवे। यदि कोई समझाने पर न माने जो कूप मे गिरना ही चाहे तो उसका अभाग्य समझना चाहिये ॥

६—जब बुरे बुराई नहीं छोडते तो भले भलाई क्यों छोड़ें ॥

७—सदा सनातन वेद शास्त्र आर्य राज राजपुरुषों की नीति पर निश्चित रह कर इनकी उन्नति तन मन धन से सदा किया करें। इनसे विरुद्ध भाषाओं की प्रवृत्ति वा उन्नति न करे

वा करावे। किन्तु जितना दूसरे राज्य के सम्बन्ध में यदि वे इस भाषा को न समझ सकें उतने ही के लिये उन भाषाओं का यत्न रक्खे जो वह प्रबल राज्य हो॥

८—कभी बिना विचारे लिखे नियत काल के आज्ञा न देवे पश्चात् जैसी जितने समय में कार्य सिद्धि करने की आज्ञा दी हो वह यथावत् नियमित समय में पूरी हुई वा नहीं उस पर ध्यान सदा रक्खे॥

९—जो यथोक्त समय में आज्ञा को यथावत् प्रीति से पूरी करे उसका सत्कार करना पारितोषिक देना और उसकी उन्नति करना अति योग्य है और जो यथोचित न करे उसका अपमान दंड और ह्रास किये बिना कभी न छोड़े॥

१०—बिना योग्यता वा परीक्षा के किसी को बड़ा व छोटा अधिकार न देवे किन्तु जो धर्मात्मता से उस कार्य के करने में समर्थ हो उसी के आधीन वह कार्य सिद्ध करे वा करावे। दरिद्र वा लोभी को प्रारम्भ में बड़ा अधिकार भी न देवे और एक कुटुम्ब सम्बन्धी परस्पर मित्रों को भी एक अधिकार में न रक्खे॥

११ सदा वेदोक्त धर्मावलम्बी अधिकारियों पर अन्य मतावलम्बियों को अधिकार न देवे। किन्तु जिस २ कार्य में

न्याय वा (उपदा) अर्थात् रिश्वत खाने का सम्बन्ध हो उनको छोड़ अन्य गौणाधिकारों में यदि वैदिक धर्मावलम्बियों से कार्य सिद्ध न हो सके रक्खे।

१२—जो प्रीति पूर्वक धर्मात्मता से ३० वर्ष तक राज कार्य करे उनको आधी नौकरी जब तक वे जीवें देवे यदि संग्रामादि में जिसका मृत्यु हुआ हो उसकी स्त्री पुत्रों को भी उसी प्रकार देवे यावत् उनके पुत्र समर्थ न हों जब समर्थ हों तब उनके पुत्रों को यथा योग्य अधिकार देवे। परन्तु उसकी स्त्री को योग क्षेमार्थ यथोचित जब तक व (ह) जिये सदा दिया करे यदि वह पांच रुपये मासिक पाता हो पूरा देवे पुत्रों के समर्थ हुए पर स्त्री को आधा देवे॥

१३-सब के लड़के लड़कियों को ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्या दान दिलावे॥

१४—न्यून से न्यून सोलहवें वर्ष कन्या और २९ वें वर्ष लड़के का स्वयम्वर विवाह होने देवे पूर्व नही॥

१५—अपनी सत्ता शक्ति को यथा संभव बढाता जावे न्यून न होने देवे॥

१६—अपने अंश को न छोड़े और पराये अंश का स्वीकार कभी न करे॥

१७–संग्राम में जो सेनास्थ पुरुष जीत में शत्रुओं के पदार्थ पावे उनमें से १६ वां भाग आप लेवे। और समुदाय के जीते हुये पदार्थों में से १६ वां भाग चाहे कितने ही क्रोड़ों रु. क्यों न हों सेना को अवश्य देवे १५वां भाग आप रक्खे ॥

१८–युद्ध में जो शत्रु घायल हो उसकी रक्षा ओषध अवश्य करे. स्त्री, बालक, वृद्ध, आतुर, भीरु शरणागत पर शस्त्र कभी न चलावे ॥

१९–हारे हुए शत्रु की अप्रतिष्ठा कभी न करे किन्तु उसका यथा योग्य मान्य रक्खे परन्तु उसको छोड़ कर स्वतन्त्रता कदाचित् न देवे ॥

२०–सदा प्रयत्न से अलब्ध के लाभ की इच्छा लब्ध की सम्हाल से रक्षा रक्षित व्य(ाजा)दि* से वृद्धि और बढ़े हुए पदार्थों का व्यय विद्या धर्म राज्य की वृद्धि इन(के)* प्रचार अनाथों के पालनादि शुभ व्यवहारों में करे ॥

२१–सर्वदा सन्तानों की शिक्षा में धन का व्यय करे किन्तु विवाह, मृत्यु आदि में न करे।

२२–सदा दासी वेश्यागमन हास्य नृत्य भांड चारण

---

* अंश फट गया है।

आदि के मिथ्या स्तुति कराने आदि व्यवहार से पृथक् रहे और अन्य को भी ऐसे प्रसंगों से सदा बचाया करे

२३—सदा पूर्ण युवाऽवस्था में अर्थात् २५ बर्ष के उपरान्त हृद्य स्वदृश एक स्त्री से विवाह करे और उसी से सदा ऋतुगामी रहे यदि प्रमाद से अनेक स्त्री हों तो भी उन के साथ पक्षपात छोड़ नियमित समय में एक सा बर्त्ते

२४—उन में परस्पर द्वेष उत्पन्न न होने दे किन्तु सब को तुल्य अन्न वस्त्राभूषण सम्भाषणादि प्रेम व्यवहार तुल्य रक्खे और प्रेम रखवावे ॥

२५ उन स्त्रियों को योग्य है कि एक के पुत्र होने में सब अपने को पुत्रवती समझें तथा सब भाई भी एक के पुत्र होने में अपने को पुत्रवत्त मानें ॥

२६—राजा और राज्ञी का जिस २ कर्म से पति पत्नी में और प्रजा में परस्पर प्रेम बढ़े उस २ का सेवन और विपरीत का सर्वथा त्याग करे

२७—सुपरीक्षित दूत द्वारा राज्य और राज पुरुषों की सुचेष्टा और कुचेष्टा से अपने को अभिज्ञ रक्खे जिस२ यत्न से उनकी कुचेष्टा छूटें और सुचेष्टा बढ़े वैसा यत्न सदा किया करे।

२८—अपराध में प्रजा से राज पुरुषों पर अधिक दण्ड

होना चाहिये क्योंकि बकरी के प्रमाद रोकने से सिंह का प्रमाद रोकने में अधिप्रयत्न होना उचित है ॥

२६—जैसे राजा और कृषीवलादि प्रजा सुखी रहे वैसा कर प्रबन्ध प्रजा में करे और उन्हीं कृषीवलादि को सब राज्य के सुख का मूल कारण समझ उन से पितावत् वर्त्ते ॥

३०—जहां (साम) मेल (दाम) कुछ दे (भेद) तोड़ फोड़ से शत्रुवश में न आवें वहीं दण्ड प्रचारित करना चाहिये ॥

३१—किसी धर्मात्मा से विरोध वा लड़ाई करना न चाहे और दुष्ट से विरोध वा लड़ाई निःशंक करे ॥

३२—सब काम धार्मिक सभ्यों के बहुपक्षानुसार नियत करे और वह आज्ञा जो कि प्रजा के साथ सम्बन्ध रखती हो सब में प्रजा की संमत्ति से वे और सर्वत्र सिद्ध कर के गुण दोष समझे पश्चात् गुणाढ्य नियमों को नियत और दोषयुक्तों का त्याग करे ॥

३३—अपना वा अपने कुटुम्ब का नित्य नैमित्तिक व्यय भी नियम पूर्वक करे यथेष्ट नहीं ॥

३४—जिस किसी को मासिक धन वा भूमि धर्मार्थ

अथवा गुणानुसार कुछ भी देवे वह यावत् माननीय जीवे वा अन्यथा न वर्त्ते तावत् वह दान रहे पश्चात् नहीं ॥

३५—यदि पूर्वजों ने इस से विपरीताशय लेख पूर्वक किया हो और उसके कुलोत्पन्न वैसे न वर्त्तते हों तो भी वह दिया न दिया हो जावे। क्योंकि वह जिस समय दिया जाता है वह उत्तम काम के लिये होता है ॥

३६—परन्तु धर्मार्थादि के लिए जो दिया हो उसके भोक्ता अन्याय से वर्त्तते हों तो भी उस अंश को राजांश में न मिलावे किन्तु कुकर्मी से छुड़ा योग्य धर्मात्मा को उसका अधिकारी करे यदि वह भी प्रमादी हो तो पूर्वोक्त प्रकार उससे भी लेके अन्य योग्य को यदि उसी के कुल में योग्य न हो तो देवे ।

३७—यदि उनके सन्तान पितरों से अधिक योग्य हों तो उनको अयोग्य के अंश में से अधिकांश देवे और अधिक प्रतिष्ठा करे ॥

३८—यदि न्यायाधीश ही प्रमादी होकर अन्याय किया चाहे तो उन को राज्य और प्रजा के धार्मिक प्रधान पुरुष समझावें कि आप अन्याय मत कीजिये यदि न मानें तो उसको पदच्युत कर के जो उसी के कुल में निकट सम्बन्ध से न्यायास्पद के योग्य

पुरुष हो उस को न्यायाधिकारी करें परन्तु यह काम पक्षपात रहितता से होना उचित है ॥ क्योंकि राज्य, विद्या, तथा धर्म की वृद्धि और अधर्म की हानि के लिये सब प्रतिष्ठा है प्रमाद के अर्थ नहीं।

३६—सब राज्य के आय में से दशांश धर्मादि के लिये नियत रक्खे उस से वेद विद्या धर्म सुशिक्षा की वृद्धि के लिए अध्यापक और उपदेशक प्रचरित करें। आपत् काल में राज्य और अनाथों की रक्षा भी उसी धन से करे॥

४०—और राज्यसे आय के नवांशों में से दो भागे स्थिर कोश दो अंश राज कुल, तीन अंश सेना विभाग एक अंश स्थान विशेष और एक अंश शिल्प विद्या की उन्नति में लगावे॥

४१—राज्य का कार्य एक पर निर्भर न रक्खे किन्तु राज पुरुष और प्रजा पुरुष की अनुमति के अनुकूल प्रचलित करें॥

४२—जो राजासन पर नियत हो उसका किंचित् भी अपमान कोई मन कर्म वचन से न करे किन्तु जो जिस पर प्रधान हो चाहे उस से अप्रधान किसी गुण में अधिक भी क्यों न हो तथापि परमेश्वर से द्वितीय स्थान में माननीय राजा और स्वामीवत् माननीय अपने २ प्रधान को मानें

४३—*

४४—अधिष्ठाता लोग राजाज्ञा को अपने प्राण से भी अधिक मानें चाहे कोई कैसा ही सम्बन्धी वा मित्र क्यों न हो परन्तु जब राजाज्ञा भंग वा उसमें आलस्य करे तब वह शत्रुवत् दण्डनीय हो जावे ॥

४५—प्रथम सब प्रयत्न से विचार कर सर्वहित समझ के आज्ञा देनी चाहिये पश्चात् उसको पूरी करने में पूरा ध्यान और पुरुषार्थ रक्खे ॥

४६—अपने आत्मा वा शरीर को राजा वा अधिकारी न समझें किन्तु राजनीति ही को राजा और राज्याधिकारिणी मानें ॥

४७—इस को निर्दोष और चलाने के लिये एक राज समाज दूसरा विद्या समाज और तीसरा धर्म समाज नियत करे ॥

४८—इन समाजों में राजपुरुष और प्रजापुरुष नियत रहें राजपुरुष राज्योन्नति और प्रजा पुरुष प्रजा की वृद्धि में प्रयत्न किया करें और तीनों समाज के विचारानुकूल नये नियम प्रचरित किये जावें ॥

*नोटः—४३ वीं संख्या नष्ट हुई प्रतीत होती है। क्योंकि उस स्थान पर मूल पत्र का फुलस्केप कागज के ऊपर का भाग कटा हुआ है।

४६—जो २ आज्ञा इन समाजों से निश्चित होकर प्रचरित की जावें उनका उलंघन कोई भी न करे यदि करे तो वह सब का अपमाननीय और दण्डनीय

५०—सदा वेदादि शास्त्र मनुस्मृति के सप्तम अष्टम और नवम अध्याय महाभारत के राजधर्म आपत् धर्म और विदुर प्रजागर विदुर नीति के शब्दार्थ सम्बन्ध और कर्त्तव्य को सब राज पुरुष जान के तदनुकूल वर्त्ते और इसके प्रचार में सदा प्रयत्न किया करें ॥

५१—जो २ सामयिक नियम और उपनियम नियत करना होवे तो पूर्वोक्त समाज और वेदादि शास्त्रों के अनुसार निश्चित करें और करावें ॥

५२—यह निश्चय है कि जैसा शील आचरण उत्साह और पुरुषार्थ प्रधान पुरुष करता है वैसे ही इतरजन वर्त्तते हैं इस लिये प्रधान पुरुषों को अत्यावश्यक है कि सदा अधर्मयुक्त कर्मों को छोड़ कर न्याय रूप धर्म कृत्यों में वर्त्ता करें क्योंकि जो २ धर्म वा अधर्म प्रधान पुरुष दृष्टान्त से इतर जनों में प्रवर्त्तमान होता है उसका मुख्य निमित्त प्रधान हो कर फल भागी होता है इस लिये मुख्य पुरुषों को बहुत विचार के वर्त्तना चाहिये ॥

श्री स्वामी दयानन्द जी के पत्र ठा० कृष्ण सिंह जी बारहट के नाम*

—— x ——

१.	स्वामी जी का	पत्र	चैत्र	कृष्णा १०	संवत्	१९३९
२.	" "	"	"	श्रावण वदी ११	"	१९४०
३.	" "	"	"	" शुक्ला ३	"	१९४०
४.	" "	"	"	भाद्रपद शुक्ला ८	"	१९४०
५.	" "	"	"	आश्विन वदी १०	सं०	१९४०
६.	" "	"	"	बिना मिति का		

---

* स्वामी दयानन्द जी तथा ठा० कृष्णसिंह जी बारहट का पत्र व्यवहार पृ० सं० १०४ से १२३ तक छप चुका है।

(१)

॥ ओ३म् ॥

॥ वारट श्रीकृशन जी आनंदित रहो ॥

विदित हो कि पत्र आपका आया समाचार विदित हुए संस्कृत वाक्य प्रबोध के विषय में जो तुमने लिखा सो छापेवालों की भूल से छप गया है वहां (एकत्रैकाङ्गुष्ठ एकत्र चतुरंगुलयः) ऐसा चाहिये सो सुधार लीजिये ॥

यदि श्रीमान्महाशयों से निवेदन करके कविराज जी के पास जोधपुर से उक्त कार्य्य कराने के लिये जयपुर जाने के आने की आज्ञा पहुंच जाय तो अत्युत्तम है और यह भी निवेदन करना कि पत्र द्वारा श्रीमानों की दिन चर्य्या और शरीर कुशलता की सत्य २ सूचना मुझको हुआ करे तो अच्छी बात है क्यों कि उसको सुनना मैं अवश्य चाहता हूं ॥ और फतह करण उदयपुर में है वा कविराज जी के साथ जोधपुर गये हैं फतहकरण का नाम (विजयकरण) हो सकता है वा नहीं क्यों कि (फतह) शब्द फार्सी का है और उस का अर्थ विजय है इसलिये (विजय करण) नाम होना उचित है ॥

और जो तुमने महाराजाधिराज की चिठ्ठी के साथ एक

चिट्ठी भेजी थी कि जिस में लिखा था १००) सौ रुपये स्वामी जी के नौकरों को अर्पित किये लिखा था और उस समय यही मैं ने और आप लोगों ने भी सुना होगा कि ५००) रुपये अनाथाश्रम और कसौदा करने वाली कन्याओं के पारतोषिक देते हैं ज(ब ?)पराड्या जी की चिट्ठी आई उस पर हमने पूंछा कि ६००) रुपये भेजने चाहिये सातसे कहां से भेजे उस पर उन्होंने उत्तर दिया कि हमारे पास राजसे ७००) रुपये आये सो ६६२) रुपये भेजे और ८) रुपये मनियाडर और रजिष्टरी कराई दिये यह क्या बात है हमतो ६००) रुपये सब मिल कर फिरोजपुर के लिये श्रीमानों ने दिये है ऐसा सर्वत्र लिख चुके हैं यदि इस में १००) भूल से चले गये हों वा सातसे ही प्रदान किये हों जैसा हुआ हो वैसी निश्चित बात लिखो जिस स हम पुन: जैसा हो वैसा सर्वत्र लिखदें ॥

और श्रीमानों की दिनचर्य्या का विषय ठीक २ लिखा करो गोलमाल मत किया करो और यहां सब प्रकार से आनन्द मंगल है ॥ और सब महाशय भद्र जनों से मेरा आशीर्वाद कहियेगा ॥

चैत्र कृष्ण १० सोम संवत् १९३९

{ दयानन्द सरस्वती }

शाहपुरा राज मेवाड़

[२]

ओम्

श्रीयुत बहारट किसन जी आनंदित रहो— कार्ड तुमारा आया समाचार विदित हुआ हमने मुसलमान और ईसाई के मत विषयक दो पुस्तक रजष्टरी कराके भेजे थे अवश्य पहुंचे होंगे उसका उत्तर अब तक क्यों नही भेजा, पहुंचे वा नहीं और उस के साथ एक पत्र भेजा था वह पहुंचा होगा सर्वाधीशों के दृष्टिगोचर भी कराया होगा अब मेरी चिट्ठि और वे दोनों पुस्तक पहुंचने के पश्चात् क्या निश्चय किया गया क्या जो मैंने लिखा वही ठीक माना गया वा कुछ विचारांतर किया इन सब बातों का उत्तर शीघ्र भेजना यहां का समाचार पश्चात् लिखेंगे

और जो एक पत्र लाहौर का श्रीमानों के अवलोकन और संमत्यर्थ भेजा था उसका क्या विचार ठहरा जो कि लाला साईदास प्रधान आर्यसमाज लाहौर ने भेजा था उसका भी उत्तर श्रीमानों से पूछ के भेजो तथा श्रीमान् महाशयों के आरोग्यता का वर्तमान और वर्षा का भी वर्तमान लिखो और जैकर्ण जी से कहना कि तुमारे पिता जी की मित्रता श्रीमान् योधपुराधीश प्रतापसिंह जी और राव राज तेजसिंह जी से अच्छी प्रकार करा दी है और पूर्व जो उनके हृदय में भ्रांति थी वह भी

निकाल दी और श्रीमानों से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा
संवत् १९४० + मिति श्रावण वदी ११

{ दयानन्द सरस्वती }

जोधपुर राज मारवाड़

(३)

ओ३म्

श्रीयुत बहारट किसन जी आनंदित रहो—

पत्र आपका आया समाचार विदित हुआ यह पत्र सर्वाधीशों के दृष्टी गोचर करा देना

१—मेरी भी यह मनसा नहीं है न थी कि पादरियों के सामने शास्त्रार्थ ही किया जाय किन्तु जिससे कोई अपनी प्रजा का पुरुष उनके मझब में न फसे वैसा उपदेश किया जाय इस लिये वे छोटे २ खंडन जो कि मैंने भेजे हैं वे छपवा के योग्य २ पुरुषों को चाहे वे पंडित हों वा बुद्धिमान् हों बांट कर प्रचार करने से उनके फंदे में कोई भी न फसेगा आपसे आप बहुत से उपदेशक उसी राज्य के पुरुष हो जांयगे इसका बांटना विशेष कर सरदार हाकम भूमिये थाने वा अच्छे २ गामों में अथवा जहां कहीं कोई बुद्धिमान् हो इसको देखकर उन ईसाइयों को हटा दे सकेंगे और यदि श्रीमानों के नियमानुसार उपदेशक ही करना हो तो वहां राज के नौकर बहुत से पंडित हैं जिसको योग्य समझे उसको यह दोनों पुस्तक दे के उपदेशक कर देवें

२—जैसा श्रीमान् महाशयों ने लिखा है वैसा उपदेशक आर्य समाज से आने में असम्भव नहीं है किन्तु जो उस पत्रमें नियम लिखे हैं उनके अनुसार और ईसाई आदि का खंडन होना असम्भव है क्योंकि जब तक उपदेशक झूठ मत को मानेगा और दूसरे झूठे मत के खंडन में प्रवृत्त होगा कुछ भी न कर सकेगा जब तक मनुष्य स्वयं झूठी बातों का त्याग करके सत्य बातों में निश्चित प्रवृत्त नहीं होता तब तक वह अलौकिक शक्ति परमात्मा की ओर से नहीं मिलती और न इद्दोत्साही वह हो सकता है यावत इन ईसाई आदि के सामने वैदिक मतानुसार ईश्वर धर्म आदि को नही मानता और मूर्तिपूजा आदि को मानता है तब तक वह जायगा खडन करने को आप ही खंडित हो रहेगा जैसे कोई किसी को दुर्व्यसन छुडाने का उपदेश करता और आप उसी दुर्व्यसन में फंसा है उसका उपदेश कोई भी न मानेगा इस लिये असम्भवता लिखी थी नहीं तो पण्डित तो क्या किन्तु एक कोई साधारण उपदेशक भी आर्य समाज का आवे तो इनका कुछ भी बल न चले इसलिये जो उपाय मैंने उनके निवारण के लिये लिखा है वह अच्छा है परन्तु ईसाई आदि के सामने जब कभी बात चीत हो तब उनको अति

उचित है कि उस समय 'मूर्ति और पुराण आदि का पक्ष छोड़ ही के बोले' तभी कृतकारी होगा

३—यहां जयकरण के पिता नाथूराम जी श्रीमान् जोध-पुराधीश महाराजे प्रतापसिंह जी और बाबा साहब से कहकर मैंने मिलाप करा इनकी ओर से जो शंका थी सो दूर करा दी है अब तीनों महाशय उनसे प्रसन्न हैं और अब श्रीमान् योधपुराधीश जी कुछ २ मेरे उपदेश सुनने में प्रवृत्त हुए हैं* अनुमान है कि कुछ सुधार हो परन्तु अब तक मद्यपानादि दुष्कर्मों से कुछ कम हटे हैं आज तक लोगों ने बहुत सी बहकावट की थी परन्तु (सत्य मेवजयति नानृतम् सत्येन पन्था विततो देवयानः ना सत्यात्परो धर्मो नानृता त्पातकं परम् ॥ सत्ये नास्ति भयं कचित्) सत्य के सामने झूठ कभी नहीं ठहर सकता महाराज का स्वभाव अत्युत्तम है परन्तु संगदोष ने कुछ का कुछ स्वभाव को कर रक्खा है अब तक मद्यपान वेश्या संग खेल हांसी ठठा छुकरपन संपूर्ण नहीं छूटे हैं परमेश्वर अंतर्यामी पूर्ण कृपा करें जिससे ये महाशय अपने राजधर्म में प्रवृत्त हो प्रजा को पुत्रवत् न्याय से पालन कर कीर्तिमान् होवे

* यह पत्र इस स्थान तक पृष्ठ ११६,१२०,१२१ पर छप चुका है।

महाराजे प्रतापसिंह जी और बाबा साहब भी अति प्रसन्न है जो यह यहां मेरा आना इन लोगों का मेरी ओर इतना प्रेम होना सब आर्यकुलदिवाकरों के प्रताप से हुआ है ऐसा मैं समझता हूं जैपुर का कृत्य शीघ्र करा लेना चाहिये श्रीमानों के शरीर की आरोग्यता सुनकर बड़ा आनन्द हुआ सबसे मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा और इस पत्र का उत्तर शीघ्र देना मि० श्रावण शुक्ल १ रविवार सम्वत् १९४० डाक(र !) सबलसिंह जी अब यहीं हैं।

{ दयानन्द सरस्वती }

| जोधपुर मारवाड़ |

(४)

* श्री युत वहारट कृष्ण जी आनंदित रहो—

---

* नोट—यह पत्र पृष्ठ १२२, १२३ पर छप चुका है। पृष्ठ१२३ पर छपे इस पत्र पर न स्वामी जी के हस्ताक्षर हैं न मिती है। इस पत्र की मिति भाद्रपद शुक्ला ८ सम्वत् १६४० है

२—इस पत्र के पांचवें आदेश में वालटर साहब लिखा है किन्तु १२२, १२३ पृष्ठ पर छपे पत्र के ५ वें आदेश में वालचर साहब लिखा है।

(५)

ओ३म्

श्रीयुत बहारट किसन जी आनंन्दित रहो

अब हम यहां जोधपुर से सम्वत् १९४० मिति आश्विन बदी ३०अमावास्या सोमवार को अर्थात् सन् १८८३ तारीख १ अक्तूबर को रवाना होके जिले अजमेर राज मसूदा मे तारीख ४ अक्तूबर आश्विन् शुदि ३ तृतीया वृहस्पति वार को पहुंचेगे और यही समाचार कविराज श्यामल दास जी को भी लिख भेजा है और यहां का समाचार बहुतसा आपको पहुंच भी गया होगा और पश्चात् मसूदे से लिखेगे और इस पत्र का उत्तर ठिकाना मसूदा जिले अजमेर राजपूतानें में भेजियेगा मि आश्विन वदि १० बुध सम्वत् १९४०

[दयानन्द सरस्वती]

जोधपुर राज मारवाड़

(६)

श्रीयुत बार्ठ किसनसिंह जी आनंदित रहो

पत्र आपका आया समाचार विदित हुआ श्रीमान महाशयों के शरीर की आरोग्यता की बात सुन कर अत्यानंद हुआ और जो सर्वाधीशों की अनुमति से लिखा है सो ठीक है अब मैंने इसका सद्य उपाय यह निश्चय किया है कि ईसाई वा मुसलमानों के मत का खंडन थोड़ा सा कल की डाक में तुम्हारे पास रजष्टरी कराके रवाना किया है। उसको वहां यंत्रालय में १००० वा १०००० अथवा कर ५०० वा १००० उदयपुर में बांट देनी चाहियें और बाकी देश में ठिकाने २ पर वा अच्छे चतु स्कूल के माष्टर और ताल बिलमों को देनी उचित हैं और वहां राज में दो चार पांच सात पंडित निकमे बैठे रहते हैं।

उन को यह खंडन देकर बाजार में जहां कि वे खडे हों वहां जाकर इन्हीं प्रश्नों में से प्रश्नोत्तर करें और पंडित अर्थात्–उपदेशक जिन नियमों पर चाहा है वैसा मिलना और उसका इन बातों को स्वीकार करना कठिन पड़ेगा क्यों कि ईसाई वा मुसल-मान लोग तीर्थ मूर्ति मंदिर इन तीन बातों पर खंडन चलाते हैं यदि जो इन तीनों को स्वीकार करेगा वह उनके सामने

कुछ न कर सकेगा क्यों कि वे ईसाई मुसलमान लोग इनहीं के दृष्टान्त दिया करते हैं और ये वातें वेद शास्त्र से सिद्ध तो क्या परंतु युक्ती सिद्ध भी नहीं हो सकती इसमे चाहे वह भीतर मानता भी हो तो परंतु उनके सामने तीर्थ मूर्ति मंदिर और चौथा पुराण पांचवां महात्म्य छवां व्रत सातवां कंठी तिलक आठवां कोई संप्रदायानुकूल और नवां अवतार आदि सिवाय वैदिक मत के जब तक नहीं मानेगा तब तक उनका खंडन न कर सकेगा इसलिये यह बात अशक्य होगी इस कारण उस उपदेशक को समझा दिया जाय कि जब उनके सामने चर्चा की जाय तब जो इन ९ वातों पर शंका अर्थात तर्क ईसाई लोग करें तब उस समय वह कहदें कि इन वातों को हम नहीं मानते हम तो केवल एक सच्चिदानंद परमात्मा को मानते हैं तभी उनका विजय कर सकेगा और जो कोई आर्य–समाज से विद्वान् आवेगा वह इन प्रतिज्ञाओं को स्वीकार नहीं करेगा क्योंकि जब तक आप निर्दोष मत को नहीं मानता स्वयं दोषी होता है तब तक दूसरे दोषयुक्त मतों को कभी नहीं काट सकेगा इसलिये उपदेशक तो शुद्ध ही होना चाहिये और जैसा श्रीमानों का देशकालानुकूल अभिप्राय है उस अभिप्राय कीत से जो उपाय पूर्व मैंने लिखा है सो ठीक है यदि जो मैंने लिखा

है कि इन नौं वातों का जो खंडन करेगा तो उन के सामने मानेगा भी नहीं तभी यह वात पार पड़ेगी और श्रीमानों का अभिप्राय भी इसी प्रकार सिद्ध होगा यदि किसी को बुलाने हीं का इच्छा हो तो वह नौ वातों को स्वीकार न करे, और अंगरेज ईसाइयों को २५०००० ढाई लाख रुपये देते हैं तो हम लोगों में सहायक क्यों न हो? और मिथ्या मत का खंडन और सत्य मत का प्रचार होना इससे उत्तम धर्म और क्या होगा, मिति आ० सु० १५ संवत १९४०

{ }

मेरा यहां से किस स्थान में जाना होगा जु अव तक निश्चय नहीं किया और यहां रहने का भी कोई निश्चय समय नहीं है अनुमान है कुछ यहां रहना होगा यहां का सुधार कुछ थोड़ा सा हुआ है और बहुत सा वाकी है संपूर्ण परमात्मा की कृपा से हो सक्ता है क्योंकि कई प्रकार के रोग लगे हैं औषधी सेवन और पथ्य वहुत कम हैं इसका विस्तार पश्चात् लिखा जायगा ठाकर सवलसिंह जी को यही जवाब दिया है कि अब कुछ दिन यहां ठहरेंगे पश्चात् तुमारे साथ नहीं चलेंगे और हमने एक कार्ड में तुमको लिखा था पुरोहित उदयलाल को पूछ के लिखो तुमारे

पास घड़ी आई कि नहीं इसका उत्तर हमारे पास अब तक नहीं आया है और घड़ी तुमारे पास एक आई वा दो, जो एक आई तो कुछ चिंता नहीं और जो दो आई हों तो एक हमारे पास भेज दो।

{ दयानन्द सरस्वती }

श्री स्वामी दयानन्द जी के पत्र श्री कविराजा श्यामलदास जी के नाम ※

—:※:—

१.	स्वामी	जी	का	पत्र	वैशाख	कृष्णा	६	संवत्	१६४०
२.	"	"	"	"	"	शुक्ला	४	"	१६४०
३.	"	"	"	"	ज्येष्ठ	कृष्णा	२	"	१६४०

※ नोट—कविराजा श्यामल दास जी के अन्य पत्र पृष्ठ संख्या ४३ से ४६ तक पर छपे हैं। ये पत्र उन पत्रों के छप जाने के पश्चात् प्राप्त हुए थे।

(१)

ओम्

श्रीयुत कविराज श्यामलदास जी आनंदित रहो विदित हो कि बहुत दिन हुए वहां के समाचार विदित होने में अब आप श्रीमानों और आपके लिखने योग्य वर्तमान लिख भेजिये जिस्से विदित हो कि उन डाक्टरों के कृत्य से क्या गुण हुआ ॥ और क्या २ हो रहा है आगे कैसा अनुमान होता है । इसमें डाक्टर लोग भी यही पथ्य कहेंगे कि ब्रह्मचारी रहना घोड़ेपर न चढ़ना तथा मांसाहारादि एक वर्ष वा ६ छः महीने अथवा ४ चार महीने तक पथ्य भी यथावत् रखना होगा २—आपके लेखानुसार उदयपुर का वर्तमान छापने के लिये वैदिक यंत्रालया प्रयागादि में आज्ञा दे दी है थोड़े ही दिन में छप के प्रसिद्ध हो जायगा ३—एक नूतन वर्तमान यह है कि श्रीमान् जोधपुरा-धीशों की आज्ञा से श्रीयुत महाराजे प्रतापसिंह जी तथा श्रीयुत राव राजा तेजसिंह जी और बाहारट अमरदान जी आदि ने मुझको शीघ्र जोधपुर में बुलाने के लिये पत्र भेजा है सो गत दिन मेरे पास यहां शाहपुरा में पहुंचा है इसमें आप सर्वाधीशों से पूछ कर अनुमति लिख भेजिये कि यहां क्या होना उचित है मैंने उसको इस प्रकार का पत्र भेजा है कि जब मेरा द्वितीय

पत्र आप लोगों के पास पहुंच जाय तभी य ली के स्टेशन से जोधपुर तक सवारी आदि का प्रबन्ध कर दीजियेगा मैंने यह विचारा कि जब उदयपुर से प्रत्युत्तर आजायगा तभी जोधपुर में जाने के लिए नियत समय की सूचना तुमको लिख दी जायगी ॥ यहां श्रीयुत महाराज राजाधिराज जी का पढ़ना रह जायगा मनुस्मृति के तो ३ अध्याय हो जावेंगे किन्तु शास्त्रों का विषय रह जायगा तथापि श्रीमानों की अनुमति से जाना होगा पांच छः दिनों में मनु का ६ वां अध्याय पूरा हो जायगा और ८ दिनों में अग्निहोत्र का विधि भी हो जायगा यहां सदा के लिए दो अग्निहोत्र हुआ करेंगे एक राज में और द्वितीय पुंडरीक जी के यहां आप जोधपुर में अभी होकर आये हैं इसलिए आप भी मुझको लिखिये और जो उचित हो तो जिस किसी को जोधपुर में लिखना अखिलेशों की संमति हो सो भी यहां लिख भेजिये जो ५१ नियम राजनीति के लिखकर श्रीमानों को दिए थे उसकी १ नकल हमारे पास अवश्य भेज दीजियेगा और सबसे मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा। मि० वै० कृ० ६ सोमवार सम्वत् १९४०

{ दयानन्द सरस्वती }

शाहपुरा

(२)

ओ३म्

श्रीयुत कविराज श्यामल दास जी आनन्दित रहो।
मेरे पत्र का उत्तर बारहट किशन जी के हस्ते शाहपुराधीशों के द्वारा पहुंचा बांचकर आनन्द हुआ और इस बात से परम आनन्द हुआ कि श्रीमानों का शरीर आरोग्य होता आता है निश्चय है कि परमेश्वर की कृपा से अब आरोग्य हो जायगा और इसी द्वारा देश मेदपाट* और रत द्वारा आर्यावर्त देश की उन्नति की भी आशा है
(१) जो जोधपुर से पत्र आया था वह रावराजा तेजसिंह का था और उसमें यह लिखा था कि तेजसिंह जी ने प्रतापसिंह जी से कहा और प्रतापसिंह जी ने श्रीमान् जोधपुराधीशों से और जोधपुराधीशों ने प्रत्युत्तर दिया कि स्वामी जी को शीघ्र बुलवाओ और मुझसे पूछा कि किस स्टेशन से और कितनी सवारी और कितने आदमी आपके साथ है कितनी सवारी भेजें इत्यादि और असल पत्र राव राजा तेजसिंह जी का आपके पास भेजता हूं बांचकर लौटा दीजिये और मैंने पहले पत्र में लिखा था कि दस दिन पीछे हम एक पत्र जोधपुर को आपके पास भेज देंगे सो आज भेजा है उसमें यह लिखा है कि हमारे साथ अधिक से

* मेवाड़

अधिक १० तथा १२ आदमी होंगे और उनके लिए २ रथ एक सिकरम और मेरे लिए एक सिकरम अच्छी इत्यादि लिख दिया है अब उनका और आपका प्रत्युतर आने पर जैसा होगा वैसा विचार किया जायगा और अब श्रीमानों की सम्मति लेकर वहां का वर्तमान लिखा कीजिये और आप अपने नेत्रों की औषधी शीघ्र कीजिये।

{ दयानन्द सरस्वती }

मिती वैशाख शुक्ला ४ सं० १९४०

(३)

ओ३म्

श्रीयुत कविराज श्यामल दास जी आनन्दित रहो।

आपके नेत्र निरोग होगये कि नहीं शिवजी वाग्भट के हस्ताक्षर आपकी चिट्ठी युक्त श्रीमानार्य्य कुलदिवाकरों के शरीर की आरोग्यता सुन बड़ा आनन्द हुआ आप लोगों ने अपने शरीरों को अपने हाथ से ऐसा घास फूस सा बना रक्खा है कि किसी न किसी रोग को छोड़कर थोड़े ही समय अरुग्ण रहते हैं शरीर की आरोग्यता से धर्मार्थ काम मोक्ष यथावत् सिद्ध कर सकते हैं एक यह समाचार विदित होवे कि आज ३ दिन हुए मुझको लेने के लिये जोधपुर से आदमी आगये हैं और मैं भी परसूं अर्थात जेष्ट वदि ४ शनिवार के दिन यहां से जोधपुर की ओर चलूंगा और उचित समय वहां पहुंच कर आपको वहां का सब समाचार लिखूंगा यह समाचार श्रीमानों से भी कह दीजियेगा और श्रीयुत कविराज मुरारिदान जी तथा उदयपुरस्थ भद्र लोगों से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा और पूर्व मत्प्रेरित पथ्यौषधी थोड़े दिन सेवन कर देख लीजिये यदि गुण दीखे तो अधिक

सेवन कीजिये निश्चय है कि आप औषधी का सेवन न्यून न करते होंगे।

मि० जे० कृ० २ सं० १९४०

हस्ताक्षर

शाहपुरा

{ दयानन्द सरस्वती }

वैदिक विनय (१ म

लेखक—आचार्य देवशर्मा जी 'अभय

इसमें चैत्र से आषाढ़ तक के वेद मन्त्रो
गया है। इस का प्रथम संस्करण चार मास मे
गया है। यह तीसरा संस्करण है। मूल्य १)

वैदिक विनय (द्वितीय खण्ड)

[ले०—आचार्य देवशर्मा जी 'अभय' विद्यालंकार]

इसमें श्रावण से कार्तिक तक के वेद मन्त्रों का
किया गया है। मूल्य १) बढ़िया कागज पर छपी हुई सजिल्द
मूल्य १॥)

वैदिक विनय (तृतीय खण्ड)

[ले०—आचार्य देवशर्मा जी 'अभय' विद्यालंकार]

इस खण्ड में मास मार्गशीर्ष से फाल्गुन तक के लिये वेद मन्त्रों की सरल आर्यभाषा में व्याख्या की गई है। मूल्य १) बढ़िया कागज पर छपी हुई सजिल्द १॥)

योगेश्वर कृष्ण

श्री पं० चमूपति जी की लेखनी से यह नयी पुस्तक लिखी गयी है। कृष्ण भगवान् की सच्ची जीवनी इस पुस्तक में पढ़िये।

इण्डियन प्रेस, प्रयाग से बड़ी सुन्दर छपी इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) है।

मिलने का पता—

गुरुकुल-पुस्तक-भंडार

गुरुकुल काँगड़ी

(सहारनपुर)